कैलाश

द्वारा

दूर्वे तो भूलोक

विशेष न

KAILASH

KAILASH DWARA

DOORWAY TO BHULOKA

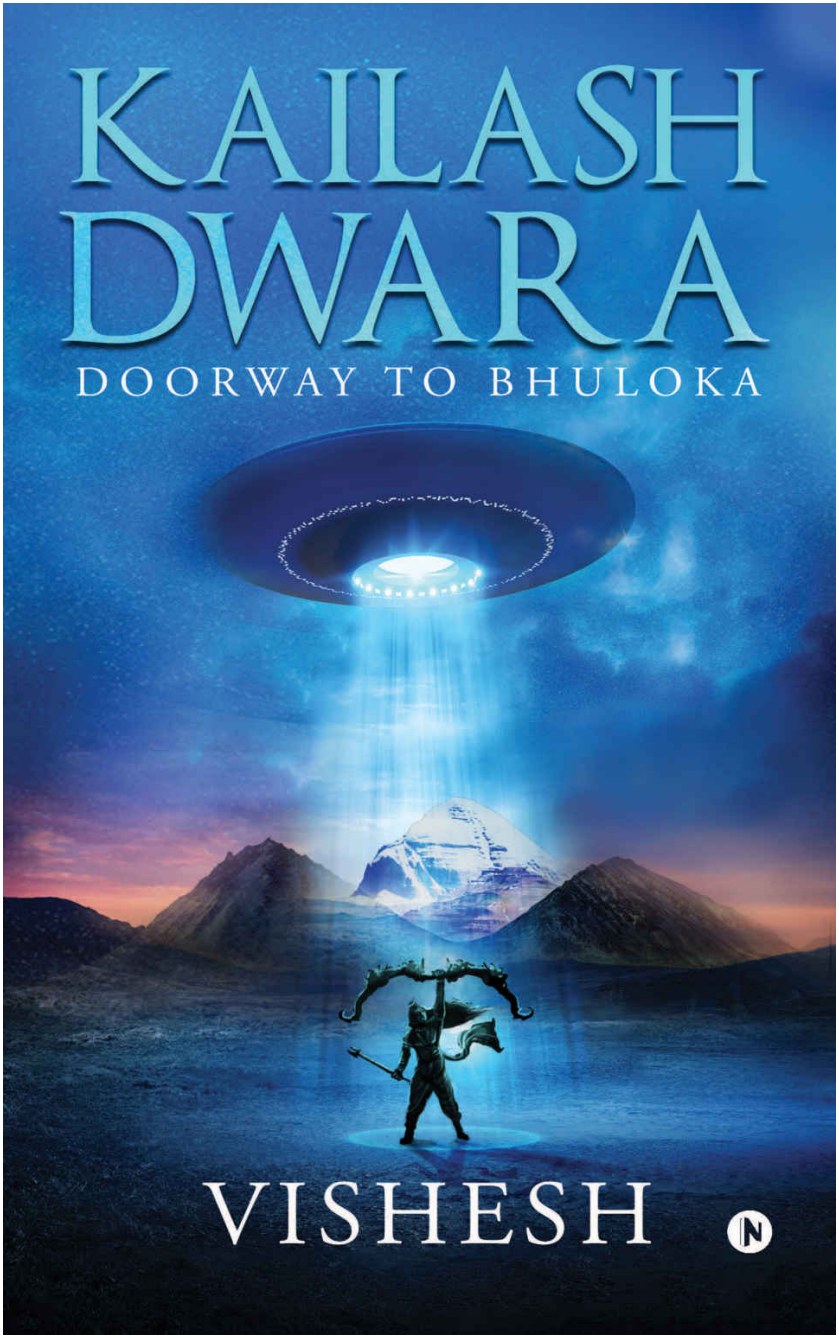

VISHESH

KAILASH DWARA

DOORWAY TO BHULOKA

VISHESH

notionpress.com
INDIA • SINGAPORE • MALAYSIA

नोटियन प्रेस

पुराना नंबर 38, नया नंबर 6

मैकनिकोल रोड, चेटपेट

चेन्नई - 600 031

नोटियन प्रेस द्वारा प्रथम प्रकाशन, 2019

Copyright © Vishesh 2019

सर्वाधिकार सुरक्षित।

ईआईएसबीएन 978-1-64733-561-8

लेखक की सहमति के बाद, इस पुस्तक को त्रुटिरहित बनाने के लिए सभी प्रयास किए गए हैं। हालांकि, लेखक और प्रकाशक किसी भी पक्ष को त्रुटियों या कमियों के कारण होने वाली किसी भी हानि, क्षति या व्यवधान के लिए उत्तरदायी नहीं ठहराते हैं और इसके लिए किसी भी प्रकार की जिम्मेदारी से मुक्त हैं, चाहे ऐसी त्रुटियां या कमियां लापरवाही, दुर्घटना या किसी अन्य कारण से हुई हों।

इस प्रकाशन को प्रकाशित करते समय किसी भी प्रकार की त्रुटि या चूक से बचने का भरसक प्रयास किया गया है, फिर भी यह इस शर्त और समझ के साथ बेचा जा रहा है कि इस प्रकाशन में किसी भी त्रुटि या चूक के कारण, या इस कृति के आधार पर की गई या न की गई किसी भी कार्रवाई, दी गई या स्वीकार की गई किसी भी सलाह के लिए, न तो लेखक, न ही प्रकाशक या मुद्रणकर्ता किसी भी प्रकार से किसी भी व्यक्ति के प्रति उत्तरदायी होंगे। मुद्रण या बाइंडिंग में किसी भी दोष के लिए प्रकाशक केवल उपलब्ध किसी अन्य प्रति से दोषपूर्ण प्रति को बदलने के लिए उत्तरदायी होंगे।

मैं यह पुस्तक अपने माता-पिता को समर्पित करता हूँ।

अंतर्वस्तु

स्वीकृतियाँ

प्रस्तावना

प्रस्तावना

अध्याय 1. कैलाश पर्वत की यात्रा

अध्याय 2. गुरुजी के आश्रम में बिताए दिन

अध्याय 3. एक नए महायुग की प्रस्तावना

अध्याय 4. विवांत के पिता

Chapter 5. Shukra’s Plan

अध्याय 6. अवतार

अध्याय 7. राज़ खुल गए

अध्याय 8. सात चक्र

Chapter 9. Dwaparayuga

अध्याय 10. कैलाश की कुंजी

उपसंहार

संदर्भ

आभार

सर्वप्रथम, मैं ईश्वर को उनके आशीर्वाद के लिए धन्यवाद देना चाहता हूँ, जिनकी बदौलत मैंने पहले शब्द से लेकर अंतिम शब्द तक लिखा।

मेरी पत्नी सुकन्या के सहयोग और प्रोत्साहन के बिना यह पुस्तक संभव नहीं हो पाती, भले ही इसमें हमारी कई शामें और सप्ताहांत बीत गए हों। जब भी मैं लिखना बंद कर देता और मेरा दिमाग बिल्कुल खाली हो जाता, तो उन्हीं के प्रोत्साहन से मैं फिर से लिखने लगता था।

मैं अपने भाई श्रेयस और पत्नी सुकन्या को धन्यवाद देता हूं, जिन्होंने शुरुआत से ही मेरे द्वारा लिखे गए प्रत्येक कुछ पृष्ठों की लगातार समीक्षा की और मुझे प्रतिक्रिया दी।

मैं अपने पिता वामदेवप्पा को भी धन्यवाद देना चाहता हूँ, जिन्होंने शैक्षिक मनोविज्ञान पर 15 से अधिक पुस्तकें प्रकाशित की हैं, और अपनी माता सुधा को भी, जिन्होंने मेरे हर निर्णय और कदम में निरंतर सहयोग दिया है। वे मुझे और मेरे भाई को प्रेरित करते हैं कि हम अपने सपनों को पूरा करने के लिए आने वाली सभी बाधाओं के बावजूद हमेशा उनका पीछा करें।

मैं अपने उन सहकर्मियों और मित्रों का आभारी हूं जिन्होंने इस पुस्तक को पढ़ा और मुझे अपनी प्रतिक्रिया दी, जिससे इस पुस्तक को आकार देने में मदद मिली।

मैं अपने संपादक, मंजुनाथ नारायण को धन्यवाद देना चाहता हूं, जिन्होंने मेरी बातों को संपादित, पुनर्लिखित और पुनर्व्यवस्थित करके पुस्तक को और अधिक सटीक बनाने के लिए लगन से इसे संकलित किया है।

मैं प्रोफेसर बालाजी राव और जगदीश सर को धन्यवाद देना चाहता हूं कि उन्होंने मेरे प्रारंभिक मसौदे को ध्यानपूर्वक पढ़ा और जहां भी आवश्यक हो, सुधार करने के लिए मुझे प्रतिक्रिया दी।

मैं चेकमेट स्टूडियो के हरि हर्षा को इस पुस्तक पर एक शानदार ट्रेलर वीडियो बनाने के लिए धन्यवाद देना चाहता हूं।

मैं अपने प्रिय मित्र और अद्भुत कलाकार संकेत बोरले को धन्यवाद देना चाहता हूँ, जिन्होंने अपने रेखाचित्र के माध्यम से मेरी कल्पना को साकार किया। आप उन्हें इंस्टाग्राम पर borlesanket पर फॉलो कर सकते हैं।

मैं उन सभी लेखकों को धन्यवाद देना चाहता हूं जिन्होंने मुझे यह कहानी लिखने के लिए प्रेरित किया।

मैं जेना मोरेसी और मेग लैटोर जैसे कई यूट्यूबर्स को धन्यवाद देना चाहूंगा जो उपन्यास लिखने की शुरुआत करने वालों को मार्गदर्शन देते हैं।

मैं इस पुस्तक को प्रकाशित करने और आप तक पहुंचाने के लिए नोटियन प्रेस का भी धन्यवाद करता हूं।

मैं अपने परिवार के उन सभी सदस्यों को धन्यवाद देना चाहता हूं जिन्होंने मुझे इस पुस्तक को लिखने और प्रकाशित करने के लिए प्रोत्साहित किया।

मैं उन सभी शिक्षकों को धन्यवाद देना चाहता हूँ जिनसे मैंने सीखा है। संस्कृत की कहावत के अनुसार, 'अक्षरं कालीसिदथम गुरु'।

अंत में, मैं अपने पाठक को दिल से धन्यवाद देना चाहता हूँ! मुझे उम्मीद है कि आपको यह किताब पढ़कर आनंद आएगा और आपके समर्थन से मैं और भी किताबें लिखना जारी रखूंगा ताकि आप उनमें खो जाएं।

प्रस्तावना

यदि आपने यह पुस्तक पढ़ने के लिए चुनी है, तो मैं आपको बताना चाहता हूँ कि मैं भी आपकी ही तरह पौराणिक कथाओं का बहुत बड़ा प्रशंसक हूँ। इसके दिलचस्प रहस्यों ने मुझे प्राचीन रहस्यों के बारे में कुछ लिखने के लिए प्रेरित किया, जिन्हें मैंने पढ़ा है और YouTube पर भी देखा है।

अमीश त्रिपाठी की शिव त्रयी द्वारा रचित अद्भुत संसार ने मुझे मंत्रमुग्ध कर दिया और मुझे पौराणिक कथाएँ पढ़ने के लिए प्रेरित किया। क्रिस्टोफर सी. डॉयल की 'महाभारत क्वेस्ट' की कथा शैली ने मुझे मोहित कर दिया, जिसके कारण मैंने कहानी को उसी शैली में सुनाया है जिस शैली में आप इसे पढ़ने वाले हैं।

मैंने सद्गुरु जग्गी वासुदेव के वीडियो के माध्यम से पौराणिक कथाओं के बारे में और अधिक सीखा है, जिसने मुझे और अधिक शोध करने के लिए प्रेरित किया।

मुझे कन्नड़ फिल्म 'रामा रामा रे...' से बहुत प्रेरणा मिली। मुझे यह फिल्म बहुत पसंद आई और मैंने पौराणिक कथाओं में निहित शिक्षाओं को समकालीन रूप देने का तरीका सीखा।

प्रस्तावना

17 फरवरी 3102 ईसा पूर्व

कृष्ण सरस्वती नदी के किनारे खड़े होकर चंद्रमा को देख रहे थे। बलराम नम आँखों से धीरे-धीरे उनके पीछे से आए और बोले, “इस युद्ध में हमने अपना पूरा वंश खो दिया है। जिस नगर को आपने बड़े प्रेम से बनाया था, वह जलकर राख हो गया है। क्या आपको दुख नहीं हो रहा?”

भाई बलराम, क्या मैंने ही अर्जुन को यह नहीं बताया था?

मया ततम इदं सर्वं जगत् अव्यक्त-मूर्तिना

mat-sthani sarva-bhutani na chaham teshvavasthitah

na cha mat-sthani bhutani pashya me yogam aishwaram

भूत-भृं न च भूत-स्थो ममात्मा भूत-भवनः

– भगवद् गीता अध्याय 9 - श्लोक 5 और 4

अनुवाद

यह संपूर्ण ब्रह्मांड मेरे अव्यक्त रूप में व्याप्त है। सभी जीव मुझमें निवास करते हैं, परन्तु मैं उनमें निवास नहीं करता।

फिर भी, जीव मुझमें निवास नहीं करते। मेरी दिव्य शक्ति के रहस्य को देखो! यद्यपि मैं सभी जीवों का सृष्टिकर्ता और पालनहार हूँ, फिर भी मैं उनसे या भौतिक प्रकृति से प्रभावित नहीं होता।

ब्रह्मांड में हर चीज का एक समय होता है और इस रूप में मेरा समय आ गया है। गांधारी के श्राप को पूरा करने के लिए यह कीमत चुकानी पड़ी।

इस महान युद्ध में जो कुछ भी हुआ, वह मानवों से किए गए मेरे वादे को पूरा करने के लिए था कि जब भी दानव भूलोक के लिए खतरा बनेंगे, मैं उनकी रक्षा करूंगा। अब दानव आसानी से वापस नहीं आ सकते क्योंकि मैंने द्वार को हमेशा के लिए बंद कर दिया है।

हे महान आदिशेष, आने वाले युगों में इस रहस्य को दानवों की पहुँच से दूर रखना आपका दायित्व है।

बलराम घुटनों के बल खड़े होकर बोले, "हे मेरे प्रभु, मुझे इस जीवन में आपकी सेवा करने का अवसर देने के लिए धन्यवाद," और अपना शरीर त्यागकर आदिशेष के रूप में प्रकट हुए, जो कई सिरों वाला एक विशाल सफेद सर्प था।

कृष्ण ने सागर की ओर देखा और हाथ जोड़कर, सिर झुकाकर कहा, “हे सागरों के महान राजा, इस भूमि को, जहाँ मैं खड़ा हूँ, मुझसे ले लीजिए। यह भूमि मैंने आपसे अपने प्रजाजनों के लिए एक भव्य नगर बनाने के लिए लीज पर ली थी। अब समय आ गया है कि मैं इसे आपको लौटा दूँ।”

एक शिकारी का तीर कृष्ण के पैर के अंगूठे की ओर आया। कृष्ण मुस्कुराए और उन्होंने अपना शरीर त्याग दिया, मानो उनकी आत्मा से कपड़ा उतर गया हो।

सागर ने कृष्णा को पट्टे पर दी गई भूमि को वापस ले लिया।

26 दिसंबर, 1998

डॉ. विश्वनाथ अपने कमरे के बाहर कॉफी मग को कसकर पकड़े बैठे थे। उनका चार वर्षीय बेटा कमरे के अंदर सो रहा था।

यह सबसे ठंडे महीनों में से एक था। शाम की ठंडी हवाएँ विश्वनाथ के जीवन के दुख भरे दिनों की गाथा सुना रही थीं। उन्हें ऐसा लग रहा था मानो उनके सीने पर भावनाओं से भरा कोई पहाड़ रखा हो। बर्फ के साथ आती हवाएँ उन्हें वापस उनके कमरे में धकेलने की कोशिश कर रही थीं, लेकिन उन्हें बाहर की ठंड का एहसास नहीं हो रहा था। उनका दिल अंदर ही अंदर आग की तरह जल रहा था।

लेफ्टिनेंट पोन्नप्पा और वीरप्रताप सिंह आसपास के गांवों और चौकियों के अपने दैनिक गश्त से सेना शिविर में लौट आए।

उन्हें खबर मिली थी कि उनके मित्र पुरातत्वविद डॉ. विश्वनाथ, जो कैलाश पर्वत पर शोध कार्य से अवकाश लेकर घर लौटे हैं, अपने चार वर्षीय बेटे वेदांत के साथ आए हैं। जब वे उनके कमरे के पास गए, तो उन्हें आश्चर्य हुआ कि इतना दुबला-पतला और लंबा व्यक्ति इतनी कड़ाके की ठंड में बिना उचित सर्दियों के कपड़े पहने बाहर क्यों खड़ा है। उन्होंने विश्वनाथ को कभी इस हालत में नहीं देखा था। उन्होंने हमेशा उन्हें सलीके से कपड़े पहने, साफ-सुथरे कंघी किए बालों में चश्मा लगाए देखा था।

पोनप्पा पीछे से आया और देखा कि विश्वनाथ ने अपने कॉफी मग को इस तरह पकड़ रखा था मानो उसे तोड़ देगा। पोनप्पा ने विश्वनाथ के कंधों पर हाथ रखकर पूछा, "क्या हुआ मेरे दोस्त?"

विश्वनाथ की आँखों से आँसू बहने लगे। उन्हें ऐसा लगा जैसे उनके सीने से कोई भारी बोझ उतर गया हो। वीरप्रताप और पोन्नप्पा उन्हें अंदर ले गए और गर्म कंबल ओढ़ा दिए।

कुछ देर बाद उन्होंने उन्हें सारी स्थिति समझाई—घटनाओं की वह कड़ी जिसके कारण उन्होंने वेदांत को अपने साथ यहाँ लाने का निर्णय लिया। विश्वनाथ की आँखें अभी भी आँसुओं से भरी थीं और उनकी आवाज़ काँप रही थी।

“मुझे अपने किए पर शर्म आती है; मैं एक माँ को उसके बेटे से कैसे अलग कर सकता हूँ? मेरे एक फैसले की वजह से उसे किन-किन मुश्किलों का सामना करना पड़ रहा होगा? वह पूरी तरह टूट गई होगी और उसके सारे सपने चकनाचूर हो गए होंगे। लेकिन जो कुछ हमने देखा, उसके बाद मैं उसे इस खतरनाक जगह पर नहीं घसीट सकता था।” डॉ. विश्वनाथ को अपनी इस भयानक गलती पर पछतावा था।

“कोई बात नहीं विश्वनाथ, ऐसा होता है। हम सब गलतियाँ करते हैं, ये तो ज़िंदगी का हिस्सा है। तुम उसे फ़ोन करो और उसे समझाओ कि वो तुम्हारी ज़िंदगी में सबसे अहम है। मुझे पूरा यकीन है, वो तुम्हें माफ़ कर देगी। तुमने उन्हें यहाँ न लाकर सही

किया, जो कुछ हमने देखा वो आज भी मुझे सपनों में डरा देता है," पोन्नप्पा ने विश्वनाथ को दिलासा देने की कोशिश की।

वीरप्रताप सिंह को समझ नहीं आ रहा था कि वे किस बारे में बात कर रहे हैं। पोन्नप्पा उनके जीवन में सबसे बहादुर लोगों में से एक था, लगभग छह फुट लंबा, गठीला शरीर, मजबूत धड़ और भगवान की कसम, वह भी डरा हुआ था। वह उनमें से किसी के भी बताने का इंतज़ार कर रहा था कि क्या हुआ था, पोन्नप्पा भी अभी-अभी अपने गृहनगर से आया था।

"अब बताओगे क्या कि तुम लोग किस बारे में बात कर रहे हो?" वीरप्रताप अपनी बढ़ती हुई चिंता को नियंत्रित नहीं कर सका।

सेना शिविर की ओर आती कुछ जीपों की आवाज़ से उनकी बातचीत रुक गई। वीरप्रताप मुस्कुराते हुए बोला, "मैं जाकर देखता हूँ, तुम लोग मेरे लिए अपने जवाब तैयार रखो," और वह देखने के लिए बाहर चला गया।

वीरप्रताप जब जीपों की जाँच करने बाहर गए, तो उन्होंने कुछ नकाबपोश लोगों को पास आते देखा। उन्होंने द्वार पर तैनात सुरक्षाकर्मियों से उन पर नज़र रखने को कहा। जैसे ही नकाबपोश लोग करीब आए, उन्होंने अपनी एके-47 राइफलें निकालीं और सिपाहियों पर गोलीबारी शुरू कर दी।

पोनप्पा ने गोलियों की आवाज सुनी और विश्वनाथ से दरवाजे बंद करने और किसी भी कीमत पर उन्हें न खोलने के लिए कहा और बाहर चले गए।

पोनप्पा ने देखा कि चारों ओर से नकाबपोश लोग आ रहे हैं; उनके अधिकांश सिपाही गोलीबारी में मारे जा चुके थे। अब, वीरप्रताप और उनके सिपाहियों की गोलियां दुश्मन की रक्षा पंक्ति को भेदती हुई आगे बढ़ रही थीं। नकाबपोश लोगों ने बमों से जवाबी हमला किया जिससे सेना का शिविर आग की चपेट में आ गया और टुकड़े-टुकड़े हो गया।

पोनप्पा मुख्य कार्यालय के अंदर गया और अपनी INSAS राइफल, एक हल्की मशीनगन लेकर आया और सभी हथियारों से दुश्मनों पर ताबड़तोड़ फायरिंग करते हुए

बाहर आ गया।

वीरप्रताप और उनकी टीम को मदद मिली और वे गेट से बाहर निकलकर दुश्मन की जीपों पर ग्रेनेड फेंकने लगे। धमाकों की गहमागहमी में उन्हें पीछे से आती किसी की आहट सुनाई नहीं दी। जैसे ही उन्होंने पीछे मुड़कर देखा, ज़ोरदार धमाका हुआ! किसी ने उन्हें लकड़ी के लट्ठे से मारा। वीरप्रताप की नज़र धुंधली हो गई, उन्होंने पीछे मुड़कर देखा तो संतुलन खो बैठे और ज़मीन पर गिर पड़े।

नकाबपोश लोगों ने वीरप्रताप और उनकी टीम की बंदूकें छीन लीं और शिविर में घुस गए। इस बीच, पोन्नप्पा अकेले ही लड़ रहे थे और उन्होंने अधिकांश नकाबपोशों को मार गिराया। पोन्नप्पा पर चारों ओर से मौत का तूफान मंडरा रहा था। कुछ गोलियां उन्हें रोक नहीं पाईं। उनके शरीर में खून दौड़ रहा था; उनकी बंदूक से निकली गोलियां नकाबपोशों पर बरस रही थीं।

नकाबपोश लोगों की गोलियां पोनप्पा की बुलेटप्रूफ जैकेट को भेदते हुए उनके सीने और धड़ को चीरती हुई निकल गईं। वे गिर पड़े और घुटनों के बल खड़े हो गए। किसी ने लोहे की छड़ से उनके सिर के पिछले हिस्से पर बेरहमी से वार किया। उनके सिर से खून बहने लगा। उस दिन मौत का खौफनाक मंजर था।

विश्वनाथ के कमरे का दरवाजा ज़ोर से खुला! वेदांत बुखार की दवाइयों के असर से सो रहा था। कुछ धक्कों के बाद दरवाजा टूट गया। कुछ नकाबपोश लोग अंदर आए और विश्वनाथ को पकड़ लिया। वेदांत को देखकर विश्वनाथ ने उनसे विनती की, "कृपया उसे छोड़ दें, वह तो बस एक बच्चा है।"

नकाबपोश लोगों में से एक ने कहा, "बच्चे को ले जाओ, वह हमें इस पुरातत्वविद् से जवाब पाने में मददगार साबित होगा।"

वेदांत अपने गर्म कंबल के नीचे गहरी नींद में सो रहा था, मानो वह अपनी मां की गोद में आराम से सो रहा हो, उसके चेहरे पर एक सौम्य और मासूम मुस्कान थी।

नकाबपोश लोगों में से एक ने वेदांत को कंबल में लपेटा और उसे अपने कंधों पर उठाकर ले गया।

उन्होंने दोनों का अपहरण कर लिया और उन्हें अपनी जीप में बिठाकर कैलाश पर्वत की ओर चले गए।

कुछ देर बाद वीरप्रताप को होश आया और उसने देखा कि सेना का शिविर कब्रिस्तान में बदल चुका था।

उसने चारों ओर देखा तो उसे खून का एक बड़ा धब्बा और कई लाशें पड़ी हुई दिखाई दीं। उसने हर लाश को पलटकर अपने दोस्तों, पोन्नप्पा और विश्वनाथ को ढूंढने की कोशिश की।

पोनप्पा नकाबपोशों के दर्जनों शवों से घिरे खून के तालाब में पड़े थे। यह दृश्य पोनप्पा की वीरता का गुणगान कर रहा था। वीरप्रताप यह दृश्य देखकर स्तब्ध रह गए, अपने मित्र को खोने का दर्द असहनीय था, फिर भी वे वहीं खड़े रहे और उन्हें सलाम किया। उनकी वीरता की यह गाथा हजारों सैनिकों को प्रेरित करेगी।

वह विश्वनाथ की तलाश में निकल पड़ा। उसने विश्वनाथ के कमरे का दरवाजा खोला, लेकिन वहां कोई नहीं मिला। उसने हर जगह देखा, डॉ. विश्वनाथ और वेदांत कहीं नहीं मिले।

अध्याय 1

कैलाश पर्वत की यात्रा

20 साल बाद, बैंगलोर

बैंगलोर में पले-बढ़े एकल माता के बेटे विवांत को खेल बहुत पसंद थे और वे कॉलेज में चैंपियन रह चुके थे। एक एथलीट होने के नाते उनका शरीर सुगठित था। वे नियमित रूप से जिम जाते थे और छह फीट से अधिक लंबे थे, उनकी मांसपेशियां और एब्स अच्छी तरह विकसित थे।

आखिरकार उसने अपने आखिरी सेमेस्टर की परीक्षाएँ पूरी कर ली थीं। उसे पता था

कि उसे अच्छे अंक मिलेंगे; उसे अंकों की कभी चिंता नहीं होती थी, क्योंकि वह किसी न किसी तरह हमेशा प्रथम श्रेणी में परीक्षा पास कर लेता था, यहाँ तक कि तब भी जब वह परीक्षा से ठीक एक रात पहले अपने दोस्तों के साथ गंभीरता से पढ़ाई करता था।

कॉलेज की पढ़ाई पूरी करने के तुरंत बाद, वह अपने जीवन की सबसे बहुप्रतीक्षित हिमालय यात्रा की तैयारी कर रहा था, जिसे उसने कॉलेज का खेल चैंपियन बनने के बाद जीता था।

हिमालय यात्रा जीतने वाली एक अन्य छात्रा सुखेष्णी थी, जो लड़कियों की श्रेणी में विजेता रही और कॉलेज की सबसे खूबसूरत और बुद्धिमान छात्राओं में से एक मानी जाती थी। उसे अक्सर शादी के प्रस्ताव मिलते थे, लेकिन वह हमेशा उन्हें ठुकरा देती थी। उसका इरादा स्पष्ट था कि कॉलेज की पढ़ाई पूरी करने और अपना करियर शुरू करने के बाद ही वह इन सभी रिश्तों को निभाएगी।

इस शैक्षणिक वर्ष के खेल उत्सव का प्रायोजन धिथी स्पोर्ट्स अकादमी ने किया था, जिसने लड़कों और लड़कियों दोनों श्रेणियों में प्रथम पुरस्कार की घोषणा की थी - "माउंट कैलाश की एक अविस्मरणीय यात्रा।"

विवांत उसे ज़्यादा पसंद नहीं करता था और न ही वह उसे। सुखेशनी को कॉलेज चैंपियन बनने पर उससे ईर्ष्या होती थी क्योंकि वह क्रिकेट जैसे ग्रुप इवेंट्स में ज़्यादा मेडल जीतता था, जिनमें लड़कियाँ भाग नहीं ले सकती थीं, और अंत में कुछ और मेडल जीतकर विवांत स्पोर्ट्स चैंपियन बन जाता था। दूसरी ओर, विवांत उससे नफ़रत करता था क्योंकि प्रोफ़ेसर उसे उदाहरण के तौर पर पेश करते थे और उसे खेल और पढ़ाई दोनों में उसकी तरह उत्कृष्ट बनने के लिए कहते थे।

दोनों ने कॉलेज की पढ़ाई पूरी कर ली थी। सुखेशनी ने जमकर खरीदारी की और हिमालय में ट्रेकिंग के लिए ज़रूरी सारा सामान खरीद लिया, जबकि विवांत को नए सामान खरीदने का मौका नहीं मिला। उसने ज़रूरी सामान अपने दोस्तों से उधार लिया और कुमार पर्वत की अपनी सालाना ट्रेकिंग से कुछ सामान पैक किया।

विवांत बचपन से ही एक ज़िम्मेदार बच्चा था, क्योंकि उसने अपने पिता द्वारा त्याग दिए जाने के बाद अपनी माँ को परिवार की ज़रूरतों को पूरा करने के लिए संघर्ष करते देखा था। उसने अपनी माँ की यथासंभव मदद करने की कोशिश की। वे दोनों गहरे दोस्त थे और उनका एक-दूसरे के प्रति प्रेम और देखभाल असीम था।

विवांत की मां सुविधा लगभग एक महीने तक अपने बेटे से दूर रहने को लेकर बहुत चिंतित थीं। उन्हें बेंगलुरु में अकेले रहना था, लेकिन वे हिमालय की यात्रा को लेकर विवांत के उत्साह को कम नहीं करना चाहती थीं, क्योंकि वह पहली बार हवाई जहाज से यात्रा करने जा रहा था।

विवांत अपनी मां को लेकर भी चिंतित था, “मां, अगर मेरे जाने के बाद आपको किसी चीज की जरूरत हो तो मुझे बता देना। मैं अपने किसी दोस्त से कह दूंगा कि वो उसका ख्याल रखे,” विवांत ने अपनी चिंता व्यक्त की।

विवांत हमेशा एक चेन पहनता था जिसमें पेंसिल या तलवार के आकार का नीले पत्थर का पेंडेंट लगा होता था। सुविधा ने विवांत की चांदी की चेन को देखकर कहा, “यह तुम्हारे पिता ने मुझे आखिरी बार मिलने पर दी थी। मुझे नहीं पता कि वे कहाँ हैं, लेकिन कृपया इसे खोना मत, क्योंकि यही एक चीज है जो उनकी याद दिलाती है।”

“मैं ऐसा नहीं चाहता; मैं उस इंसान को याद भी नहीं करना चाहता जिसने तुम्हें छोड़ दिया। मुझे समझ नहीं आता, तुम उसके बारे में सोचकर खुद को क्यों दुख पहुंचाती हो। उसने हमें सिर्फ दर्द ही दिया है,” विवांत ने गुस्से भरे स्वर में उसे फटकारा।

सुविधा उदास थी। विवांत ने उसे दिलासा देते हुए कहा, "माँ, बताइए आपको क्या चाहिए। आप जो भी कहेंगी मैं ले आऊंगा।"

“मैं चाहती हूँ कि तुम मुस्कुराते हुए सुरक्षित लौट आओ,” सुविधा ने कहा। उनकी बातचीत विवांत के दोस्तों के कमरे में अचानक आने और सुविधा से स्वादिष्ट नाश्ता परोसने के लिए कहने से रुक गई। सुविधा एक बेहतरीन रसोइया थी। उसके दोस्त कुरकुरे बटर डोसे पाने के लिए कतार में खड़े थे। नारियल-धनिया की चटनी और प्याज-मिर्च के तड़के वाले उबले आलू बटर डोसे के साथ एकदम सही मेल थे।

विवांत के दोस्त यात्रा के लिए उसका सामान पैक करने में मदद करने के लिए वहीं रुक गए और उसे चिढ़ाते रहे कि कॉलेज की सबसे खूबसूरत लड़की के साथ उसे कितना मज़ा आएगा। उसके एक दोस्त ने कुमार पर्वत, बल्लारयाना दुर्गा किले में ट्रेकिंग करते हुए और दक्षिण गोवा की अनछुई प्राकृतिक सुंदरता को निहारने की कोशिश करते हुए उनकी तस्वीरें दिखाईं। उन्हें समय का पता ही नहीं चला, घड़ी में सुबह के 3 बज गए। उन्होंने उबर कैब बुलाई और विवांत ने अपनी माँ को जगाया।

सुविधा, विवांत और उसके दोस्तों के साथ टैक्सी में बैठकर एयरपोर्ट गई। उसके दोस्त उसे रास्ता दिखा रहे थे क्योंकि यह उसकी पहली हवाई यात्रा थी।

"विवांत मुझे हर दिन फोन करता है," सुविद्धा ने उसके बारे में चिंतित होकर कहा।

“चिंता मत करो आंटी, वो हमारे कॉलेज की सबसे खूबसूरत लड़की के साथ रहने वाला है, उसे आपकी याद भी नहीं आएगी।” उसके एक दोस्त ने उसे ताना मारा।

विवांत ने अपना सिर पटका और उसे चुप रहने का इशारा किया। "विवांत, क्या तुम्हारे साथ यात्रा पर कोई और भी आ रहा है?" सुविधा ने पूछा।

“हां मां, वो लड़कियों की श्रेणी में चैंपियन है। उसने भी टिकट जीत लिए हैं,” विवांत ने कहा।

"और वह हमारी कॉलेज की टॉपर है," उसके एक दोस्त ने कहा।

सभी लोग टैक्सी से उतर गए। विवांत के दोस्तों ने सुखेष्णी से मुलाकात की और उनका अभिवादन किया। सुखेष्णी ने भी उनका और विवांत की माँ का अभिवादन किया और उन्हें अपनी माँ सौंदर्या से मिलवाया।

“सुखेशनी, विवांत ने तुम्हारे बारे में बताया था, चैंपियन बनने पर बधाई हो। तुम बहुत ही प्रतिभाशाली बच्ची हो। उसे तुमसे खेल और पढ़ाई को एक साथ संभालने के बारे में बहुत कुछ सीखना होगा,” सुविधा ने कहा।

“हे भगवान! अब मुझे ये सब अपनी माँ से भी सुनना पड़ेगा। वापस आने के बाद मैं

तुम्हारा ख्याल रखूँगा," विवांत ने अपने दोस्त को चेतावनी दी।

अपनी बेटी के अकेले यात्रा करने को लेकर चिंतित सौंदर्या को यह जानकर राहत मिली कि उसकी कॉलेज की एक सहपाठी भी कैलाश पर्वत की उसी यात्रा पर जा रही है।

"विवांत, सुखेष्णी का ख्याल रखना और जरूरत पड़ने पर उसकी मदद करना," सौंदर्या ने विनती की। उसे कॉलेज में उन दोनों के बीच होने वाले झगड़ों के बारे में जरा भी जानकारी नहीं थी।

"चिंता मत कीजिए आंटी, मैं आपकी मदद के लिए आऊंगा," विवांत ने जवाब दिया।

"सुखेशनी, कृपया मेरे बेटे की मदद करो, यह उसकी हवाई जहाज की पहली यात्रा है," सुविधा ने विनती की।

"चिंता मत करो चाची, उसकी मदद के लिए फ्लाइट क्रू भी मौजूद रहेगा," सुखेष्णी ने उन्हें आश्वासन दिया।

विवांत ने अपनी मां की ओर देखते हुए अपनी भौंहें सिकोड़ीं।

सुबह के 5 बज रहे थे जब वे हवाई अड्डे पर पहुँचे। उड़ान का समय सुबह 6:30 बजे था। गेट पर ही उनके बैग की जाँच की गई। सुखेशनी सबसे पहले अंदर गई और चेक-इन काउंटर की ओर बढ़ी, कुछ मिनट बाद विवांत भी अंदर आया, लेकिन उसे समझ नहीं आ रहा था कि क्या करना है।

विवांत कुछ मिनट तक इधर-उधर देखता हुआ वहीं खड़ा रहा, जबकि सुखेष्णी बोर्डिंग पास लेकर लौट आई।

सुखेष्णी ने उसे चिढ़ाते हुए कहा, "अरे! लगता है कॉलेज का चैंपियन रास्ता भटक गया है। उधर बने चेक-इन काउंटर पर जाओ।" उसने उसे चेक-इन काउंटर तक ले जाकर अपने चेक-इन बैग वहीं छोड़ने को कहा।

यह उनका पहली बार विमान में बैठने का अनुभव था और वे इसके विशाल आकार

को देखकर रोमांचित थे।

लखनऊ जाने वाले यात्रियों के लिए एक घोषणा की गई। लेकिन उत्साह में डूबे विवांत हवाई अड्डे पर दुकानों के बाहर से सामान देखने में इतना मशगूल हो गए कि लगभग रास्ता ही भटक गए।

किसी तरह, विमान के उड़ान भरने में केवल पंद्रह मिनट शेष रहने पर उसने अपना बोर्डिंग पास दिखाकर विमान के चालक दल की मदद से प्रवेश प्राप्त कर लिया। उसने सोचा कि वह जाकर जाँच कर लेगा।

विमान में सवार होने के लिए अंतिम बार विवांत का नाम पुकारा जा रहा था। वह दौड़कर वहाँ पहुँचा और बोला कि वह विवांत है। एक फ्लाइट अटेंडेंट ने उससे पूछा, "सर, आप कहाँ थे? हम पंद्रह मिनट से आपको ढूँढ रहे हैं?"

वह विमान में चढ़ा और सुखेष्णी के बगल वाली सीट पर बैठ गया, जो उसकी कहानी सुनकर खिलखिलाकर हंस पड़ी और उसे आश्वासन दिया कि वह सुविधा आंटी से किया अपना वादा निभाने और उसका मार्गदर्शन करने की कोशिश करेगी।

विवांत को थोड़ा सुकून और खुशी महसूस हुई। यह पहली बार था जब वे खुलकर हँसे।

उन्होंने लखनऊ हवाई अड्डे पर उनका मार्गदर्शन किया और धीथी रिसर्च लैब्स द्वारा आयोजित उनके आवास तक पहुंचाया।

“चलें लखनऊ घूमने चलें?” सुखेष्णी ने विवांत से पूछा। वह अपनी यात्रा का एक भी मिनट बर्बाद नहीं करना चाहती थी। “ठीक है, जल्दी तैयार हो जाओ और आधे घंटे में मिलते हैं,” विवांत ने कहा। कुछ देर बाद, वे होटल से निकले और चिड़ियाघर और लखनऊ की अन्य जगहों को देखने चले गए।

धिथी रिसर्च लैब्स

धीथी रिसर्च लैब्स के सीईओ श्री तारक अपने कार्यालय में थे, जो कैलाश पर्वत की

तलहटी में खूबसूरती से स्थापित था, जहां उन्होंने अपना अधिकांश समय कैलाश पर्वत के चमत्कार पर शोध करने में लगाया था।

वह अपनी कुर्सी पर बैठकर सोच रहा था कि राजा को क्या बताएगा। आखिरकार, वह समय नजदीक आ रहा था जब उसे वह चीज़ मिल जाएगी जिसका वह पिछले 20 वर्षों से बेसब्री से इंतजार कर रहा था। सब कुछ उसकी योजना के अनुसार चल रहा था; बस कुछ समय की बात थी।

परिषद और राजा द्वारा उन पर जताए गए विश्वास को निभाने का समय आ गया था। वह घड़ी देखते हुए अपने नाखून चबा रहे थे। उन्होंने दोपहर का भोजन जल्दी समाप्त कर लिया था और कार्यालय आ गए थे ताकि राजा द्वारा पूछे जाने वाले संभावित प्रश्नों के उत्तर तैयार कर सकें।

वह स्क्रीन पर देखते हुए अपने हाथों को आपस में रगड़ रहा था, राजा के फोन का इंतज़ार कर रहा था जो किसी भी पल आने वाला था। उसे याद दिलाया गया कि फोन कुछ ही मिनटों में शुरू होगा। वह गुप्त बैठक कक्ष में चला गया जहाँ उसके अलावा किसी और को जाने की अनुमति नहीं थी।

सिम्हानादा एक 3डी होलोग्राम में प्रकट हुआ। वह आठ फीट लंबा था और उसकी मांसपेशियां चट्टान की तरह सख्त थीं। उसकी उपस्थिति मात्र से ही आसपास के लोग भयभीत हो जाते थे। तारक उनमें सबसे छोटा था और लगभग 5.5 फीट लंबा था, जिसका तोंद निकला हुआ था, जो उसे पुरुषों के बीच रहने के लिए एक आदर्श वेश प्रदान करता था।

“शुभ प्रभात, तारक,” राजा ने अभिवादन किया।

“सुप्रभात, महाराज,” तारक ने घुटने टेककर पूछा, “मैं किसलिए आपसे मिलने आया हूँ, मेरे स्वामी?”

“यहां लगभग दस साल हो गए हैं और आपने दस साल पहले की तुलना में कोई प्रगति नहीं की है। मैं निराश हूं,” सिम्हानादा ने कहा।

“अगर आप सक्षम नहीं हैं, तो मैं आपकी जगह किसी और को भेज दूंगा।” सिम्हानादा ने आगे कहा।

“हमें एक सुराग मिला है, महाराज। हमारा बंदी स्वयं एक महायोगी है। उसने लगभग बीस वर्षों से मुझे अपने मन में प्रवेश करने से रोका है।” तारक ने होंठ सिकोड़ते हुए अपनी बात जारी रखी।

“मैंने उसे शारीरिक और मानसिक रूप से कमजोर कर दिया है। मन पढ़ने की अपनी विशेष क्षमता से मैं उसके दिमाग में प्रवेश कर सका और उसकी यादों को खंगालकर कुत्ते को भौंकने पर मजबूर कर दिया। मैं बक्से के अंदर की सारी सामग्री तो नहीं देख पाया, लेकिन मुझे पता चल गया है कि उसने चाबियां कहां छिपाई थीं। मैंने सारी व्यवस्था कर ली है। हमें जल्द से जल्द चाबियां मिल जाएंगी।”

एक बार चाबियाँ मिल गईं तो रहस्य उजागर होने में बस कुछ ही समय लगेगा। मैं यह सुनिश्चित करूँगा कि मेरी योजना बिना किसी बाधा के पूरी हो जाए। महाराज, मुझ पर भरोसा रखिएगा, मैं आपको निराश नहीं करूँगा,” तारक ने वादा किया।

कॉल काटने से पहले राजा ने आखिरी वाक्य कहा, "शुभकामनाएं।"

लखनऊ होटल

लखनऊ के होटल से कुछ मीटर दूर एक कार आकर रुकी। मुन्ना और बबलू अपने दो साथियों के साथ कार से उतरे और योजना बनाने लगे। उन्होंने रंगीन कमीजें पहनी हुई थीं, उनके बाल लंबे थे, दाढ़ी बढ़ी हुई थी और चेहरे पर निशान थे।

“मैं और बबलू ऊपर जाएंगे, इस बीच आप दोनों रिसेप्शन और सीसीटीवी कर्मियों को व्यस्त रखिएगा; तब तक हम उनके कमरों में प्रवेश कर चुके होंगे।” मुन्ना ने टीम को अपनी योजना समझाई।

मुन्ना और बबलू ने रूम सर्विस के लड़कों को पकड़ लिया और उन्हें बेहोश करने के बाद उनकी वर्दी पहनकर योजना के अनुसार कमरों में घुस गए और उनके बैग, अलमारी और बाथरूम में पेंडेंट और ब्रेसलेट की तलाश की, लेकिन उन्हें ऐसा कुछ भी

नहीं मिला जो उन्हें दिए गए विवरण से मेल खाता हो।

“एक छोटा नीले रंग का तलवार के आकार का पेंडेंट जिस पर 7 रंगीन पत्थर लगे हों और एक नीले रंग का ब्रेसलेट जिस पर 7 रंगीन पत्थर लगे हों।” उन्हें उन चीजों का स्पष्ट विवरण मिल गया था जिनकी वे तलाश कर रहे थे।

उन्हें पता था कि उनका बॉस उनके काम से खुश नहीं होगा, लेकिन समय कम होता जा रहा था। इससे पहले कि किसी को पता चले कि रूम सर्विस वाले लड़कों का क्या हुआ, उन्हें वहां से निकलना था।

“सर, हमने सारे कमरे छान मारे लेकिन हमें पेंडेंट और ब्रेसलेट नहीं मिले,” मुन्ना ने तारक को फोन करके बताया।

तारक खुद को पकड़कर कुर्सी पर गिर पड़ा। “आज मुझे बस इसी की कमी थी! एक और निराशा, अब ये कहाँ जाएँगे? ये मेरे पास आ रहे हैं। तिब्बती धरती में प्रवेश करते ही मैं इनका ख्याल रखूँगा।”

सुखेष्णी और विवांत चिड़ियाघर में एक साथ अच्छा समय बिताने के बाद वापस लौटे। वे एक-दूसरे को चिढ़ा रहे थे और अपने कॉलेज के दिनों को याद कर रहे थे कि कैसे वे छोटे बच्चों की तरह आपस में झगड़ते थे। विवांत ने एक रेस्तरां में नाश्ता करने जाते समय सड़क पर कुछ बुजुर्गों को खाना मांगते देखा। विवांत ने कुछ खाने के पैकेट

खरीदे और उन्हें सड़क पर बैठे बुजुर्गों को दे दिए। उन्होंने उसे सदा सुखी और स्वस्थ रहने का आशीर्वाद दिया।

सुखेशनी का दिल यह दृश्य देखकर पिघल गया और उसने कहा, "मुझे तुम्हारा यह पहलू कभी पता नहीं था।"

“इसमें कुछ भी नहीं है, इन लोगों को उनके परिवारों ने छोड़ दिया है और मैंने यह दर्द जीवन भर सहा है। इसलिए मैं ऐसे लोगों की यथासंभव मदद करने की कोशिश करता हूं,” विवांत ने समझाया।

जैसे ही वे होटल में दाखिल हुए, चिंतित दिख रही रिसेप्शनिस्ट उनकी ओर आई और कहा कि कुछ चोर उनके कमरों में घुस गए थे और उन्हें नहीं पता कि चोर क्या ले गए हैं।

कुछ समय बाद उन्हें पता चला कि उनके दो कर्मचारी बेहोश हैं। रिसेप्शनिस्ट ने कहा, "आप दोनों भूतल पर रिसेप्शन के बगल वाले कमरों में ठहर सकते हैं और हम आपको आश्वस्त करते हैं कि आपकी सुरक्षा का पूरा ध्यान रखा जाएगा।"

वे दोनों अपने-अपने कमरे देखने गए, लेकिन ऐसा लग रहा था कि कुछ भी चोरी नहीं हुआ है, बस सारा सामान बिखरा पड़ा है। बाद में उनका सामान भूतल के कमरों में पहुँचा दिया गया।

वे पूरी रात उस घटना के बारे में सोचते हुए सो नहीं पाए। अगली सुबह वे जल्दी उठकर दार्चुला के लिए रवाना हो गए, जो कैलाश परिक्रमा के लिए आए अन्य पर्यटकों के साथ एसी बस में 14-15 घंटे का सफर था। विवांत और सुखेशनी उत्साहित तो थे, लेकिन साथ ही साथ जो हुआ था, उससे चिंतित भी थे।

बस सुबह 7 बजे लखनऊ से रवाना हुई, लेकिन दार्चुला पहुँचने में काफी देर हो चुकी थी। उन्हें रहने के लिए एक जगह मिली और कुछ अच्छा स्थानीय भोजन मिला, जिसके बाद उन्होंने रात भर आराम किया।

अगले दिन वे नारायण आश्रम गए जहाँ उनकी मुलाकात कैलाश यात्रा पर निकले कुछ

योगियों से हुई। उनका मार्गदर्शन कान्हा नाम का एक व्यक्ति कर रहा था। सभी योगी विश्राम कर रहे थे क्योंकि उनकी यात्रा थका देने वाली थी। खड़ी पर्वतों पर चढ़ाई के दौरान कुछ योगी घायल हो गए थे।

कान्हा भिक्षुओं की तरह गहरे लाल रंग का वस्त्र पहने हुए थे और योगियों की सहायता के लिए हमेशा तत्पर रहते थे। वे सक्रिय थे और धैर्यपूर्वक उनकी हर आवश्यकता और जिज्ञासा को सुनते थे तथा उन्हें सहज महसूस कराते थे।

कैलाश मार्ग पर चल रहे बुजुर्ग लोगों को देखकर विवांत प्रेरित हुआ और उनकी तंदुरुस्ती देखकर चकित रह गया। कान्हा उन्हें प्रोत्साहित और मार्गदर्शन कर रहे थे।

“नमस्कार, मैं विवांत हूँ। इन योगियों को देखकर मैं आश्चर्यचकित हूँ। ये इतने चुस्त-दुरुस्त कैसे हैं और इनका लक्ष्य क्या है? आप इन्हें किस दिशा में मार्गदर्शन दे रहे हैं?” विवांत ने कान्हा से अपना परिचय देने के बाद पूछा।

“हाय विवांत, मैं कान्हा हूँ। मैं कोई गाइड नहीं हूँ। मेरा यहाँ एक छोटा सा व्यवसाय है। मैं एक अच्छे नागरिक होने का अपना कर्तव्य निभा रहा हूँ। एक युवा होने के नाते, बुजुर्गों की मदद करना मेरा फर्ज है,” कान्हा ने जवाब दिया।

विवांत ने कान्हा के साथ मिलकर भिक्षुओं को पर्वत पर चढ़ने में मदद की और घायलों को प्राथमिक उपचार दिया। सुखेष्णी ने देखा कि वे बुजुर्गों की किस प्रकार देखभाल कर रहे थे और उन्हें पानी पिला रहे थे।

कान्हा ने विवांत को धन्यवाद दिया और उन्हें विदाई दी क्योंकि योगी अपनी यात्रा शुरू करने के लिए तैयार थे और आशा करते थे कि वे जल्द ही मिलेंगे।

विवांत, सुखेशनी और उनका समूह आखिरकार सिरखा पहुंच गया, जहां वे रात बिताने वाले थे।

धिथी रिसर्च लैब्स

तारक के पुत्र देवांत अपने पिता की जिम्मेदारियों को संभाल रहे थे और धिथी रिसर्च

लैब्स के कार्यालय के काम से उन्हें कुछ राहत दे रहे थे। खेलों के प्रति उनके उत्साह ने उन्हें धिथी स्पोर्ट्स अकादमी स्थापित करने के लिए प्रेरित किया।

देवांत को खेलों में बहुत रुचि थी और जब भी मौका मिलता, वह दोस्तों के साथ क्रिकेट और फुटबॉल खेला करता था। उसका सपना था कि वह दुनिया का सबसे बड़ा खेल केंद्र बनाए, जिसमें अलग-अलग स्तरों पर इनडोर क्रिकेट और फुटबॉल स्टेडियम हों। उसकी लंबाई 6 फीट से भी अधिक थी। वह हमेशा सूट और चश्मा पहनता था। उसके दोस्त अक्सर कहते थे कि सूट उस पर जितना जंचता है, उतना किसी पर नहीं जंचता।

देवांत कैलाश पर्वत के पास चल रहे शोध की देखरेख भी कर रहे थे। शोधकर्ताओं ने कुछ नई धातुएँ और पत्थर खोजे थे। वैज्ञानिक उन नए पत्थरों पर शोध कर रहे थे जिनसे एक प्रकार का विकिरण उत्सर्जित होता था।

कैलाश पर्वत की तलहटी में पले-बढ़े देवांत को हमेशा से ही उस शांत स्थान में छिपे रहस्यों को देखकर आकर्षण होता था, जिनकी खोज में उनके पिता जी-जान से लगे हुए थे। हिंदू, जैन और बॉन धर्मों के धार्मिक ग्रंथों में कैलाश पर्वत के बारे में सुनी कहानियों ने उन्हें इस रहस्य को जानने के लिए बेहद उत्सुक बना दिया था।

वह उस बक्से के रहस्यों को जानने के लिए उत्सुक था। वह किसी तरह के तंत्र से बंद था।

उसे अपने पिता से पता था कि चाबियाँ विवांत और सुखेशनी के पास हैं। उसने अपनी टीम को बताया था कि उसे चाबियाँ किसी भी कीमत पर चाहिए। उसने अपनी टीम को उन पर नज़र रखने का निर्देश दिया था और कहा था कि अगर वे चाबियाँ नहीं ला पाए, तो उन्हें उनका अपहरण करके उसके पास लाना होगा।

सिरखा

“यहाँ से ट्रेक शुरू होता है। यहाँ चट्टानी पत्थरों से बनी हजारों सीढ़ियाँ हैं। हमें संभलकर चलना होगा। इतनी ऊँचाई पर ट्रेकिंग करना मुश्किल होगा। कृपया अपना ध्यान रखें और बुजुर्गों की मदद करें,” गाइड ने कैलाश यात्रा के लिए आए लोगों को

संबोधित करते हुए कहा।

गाइड ने सभी को उचित प्रशिक्षण दिया और उन्हें एक छोटी अनुकूलन यात्रा पर ले गया। टीम ने अपनी यात्रा पूरी की और तंबुओं में लौट आई।

शाम हो चुकी थी और ट्रेकिंग से सब थक चुके थे, इसलिए एक कप ताज़ा चाय पीने के बाद सब आराम करने चले गए। विवांत और सुखेष्णी ने जुगनुओं को देखा और ठंडे मौसम में उस नज़ारे का आनंद लिया।

शाम को कुछ देर बाद एक अग्नि शिविर लगाया गया। गाइड ने जोड़ों को नाचने और मनोरंजन करने के लिए आमंत्रित किया। सभी जोड़े रोमांटिक माहौल में खूब आनंद ले रहे थे। बारी-बारी से वे संगीत की धुन पर नाचने लगे। लाउडस्पीकरों पर रोमांटिक हिंदी गाने बज रहे थे। अब विवांत की बारी थी, लेकिन साथी न होने के कारण वह नाच नहीं सका। हालांकि, वहां मौजूद बुजुर्गों ने सुखेशनी को उसके साथ नाचने के लिए मना लिया।

विवांत और सुखेष्णी एक-दूसरे को पकड़कर साल्सा मुद्रा में नाचने लगे। बर्फ के टुकड़े और जुगनुओं ने उस जगह को नृत्य-मंच जैसा बना दिया था। वे धीरे-धीरे एक-दूसरे का अनुसरण करते हुए अपने पैर हिला रहे थे और एक-दूसरे की आँखों में गहराई से देख रहे थे। ऐसा लग रहा था मानो दो गुड़िया बर्फ के कांच के गोले के अंदर नाच रही हों। यह जादुई दृश्य था। गाने के बाद तालियों की गड़गड़ाहट ने उनकी नजरों का संपर्क तोड़ दिया।

सुखेष्णी ने रात के खाने के बाद, जब सब सो गए, विवांत को टहलने के लिए बुलाया। दोनों ने अपनी जैकेट पहनी और थोड़ी देर टहलने के लिए बाहर चले गए।

“इतनी ठंड है और ये बर्फ के टुकड़े और जुगनू इसे और भी खूबसूरत बना रहे हैं। इन जगहों की सबसे अच्छी बात यह है कि आप वहां आसमान में सारे तारे देख सकते हैं और मुझे हमेशा ओरियन तारामंडल याद रहता है, जो सबसे आसानी से पहचाना जा सकता है। बैंगलोर में तो एक तारा भी नहीं दिखता,” विवांत ने कहा।

“हां, मेरी मां मुझे बताया करती थीं, जब हम मदिकेरी में रहते थे और मैं छोटी बच्ची

थी। जब भी मैं रोती थी, मेरे पिताजी मुझे बाहर ले जाकर तारे दिखाते थे और मैं चुप हो जाती थी। पिताजी के बारे में मेरी यही एक याद है," सुखेष्णी ने कहा।

"मुझे भी अपने पिता की कोई याद नहीं है। मुझे उनका चेहरा देखना भी याद नहीं है।" विवांत बोल रहा था, लेकिन सुखेष्णी अपने पिता को याद करते हुए आसमान की ओर देख रही थी और कुछ कदम चलकर एक गहरी खाई में गिर गई।

"मदद!!! मदद!!!" सुखेशनी खड़ी चट्टान से नीचे फिसलते हुए चिल्लाई।

विवांत कुछ मिनटों तक सुखेशनी का नाम पुकारता रहा। जब उसकी पुकार का कोई जवाब नहीं मिला तो उसे समझ नहीं आया कि क्या करे। इसलिए वह भी उसी तरह चट्टान से नीचे फिसलने लगा, जैसे सुखेशनी नीचे गई थी।

कुछ देर बाद उसे एक सड़क मिली। वह उस सड़क पर उसे ढूंढ रहा था और उसका नाम पुकार रहा था। तभी उसने एक जीप देखी जिसमें हथियारबंद लोग उसे ले जा रहे थे।

एक पल के लिए उसे लगा कि शायद कुछ आतंकवादी उसे अगवा कर रहे हैं। वह जीप के पीछे भागा लेकिन उसे पकड़ नहीं पाया। हालांकि, उसने उसे जीप में बेहोश पड़ा देखा।

उसने मदद मांगने की कोशिश की। आखिरकार, उसे सड़क के किनारे एक आदमी दीवार के सहारे पेशाब करते हुए मिला। उसने देखा कि उसकी साइकिल सड़क के किनारे खड़ी है, और बिना समय बर्बाद किए, उसने साइकिल स्टार्ट की और जीप के पीछे चल दिया, साइकिल मालिक की साइकिल रोकने की गुहार को अनसुना करते हुए।

उसने सैन्य शिविर में जीप को प्रवेश करते देखा और भारतीय सेना का लोगो देखकर अंततः राहत महसूस की, लेकिन चूंकि वह बिना अनुमति के प्रवेश कर गया था, इसलिए उसे गिरफ्तार कर लिया गया।

विवांत को सेना के उच्च अधिकारियों के सामने पेश किया गया। उसने बताया कि वह

अपनी सहेली सुखेशनी को ढूंढते हुए आया है और वे कैलाश परिक्रमा के लिए निकले थे और सिरखा पहुंच गए थे। उसने अपना पहचान पत्र भी दिखाया।

अधिकारी को यकीन हो गया और वह उसे चिकित्सा शिविर ले गया जहाँ सुखेष्णी का इलाज चल रहा था क्योंकि उसे मामूली चोटें आई थीं। सुखेष्णी वहाँ विवांत को देखकर खुश हुई और उसे बताया कि वह गिर गई थी और उससे पूछा कि उसने उसे कैसे पाया और उसे ये चोटें कैसे लगीं। विवांत ने उसे पूरी घटना बताई और आखिरकार उसे चोटों का इलाज मिल गया। अधिकारी ने उन्हें कर्नल के आने से पहले अगली सुबह जल्दी निकलने के लिए कहा।

सुखेशनी ने विवांत से पूछा कि उसने मदद लेने के बजाय चट्टान से गिरने का जोखिम क्यों उठाया।

विवांत ने कहा, "मैंने तुम्हारी मां से जो वादा किया था कि मैं तुम्हारी देखभाल करूंगा, मैं उसे निभा रहा था।"

अगले दिन सुबह 5 बजे जब वे कुछ सिपाहियों के साथ जीप में निकलने की तैयारी कर रहे थे, तभी कर्नल शिविर में दाखिल हुए। उन्होंने उनके बारे में पूछताछ की और उन्हें अपने कार्यालय में पेश होने का आदेश दिया।

सुखेशनी और विवांत कर्नल के दफ्तर में दाखिल हुए। अपने पिता की तस्वीर को फ्रेम में लगा देखकर सुखेशनी की आँखों में आँसू आ गए। वह तुरंत तस्वीर की ओर खिंची चली गई और रोने लगी तथा धीरे से फुसफुसाते हुए बोली, "पापा!"

कर्नल वीरप्रताप सिंह ने उस दृश्य को देखा और उन्हें यह समझने में कुछ सेकंड लगे कि वह उनके प्रिय पुराने मित्र, स्वर्गीय लेफ्टिनेंट पोन्नप्पा की बेटी थी।

बहुत समय पहले जब कर्नल पोनप्पा के घर गए थे, तब वे उनकी बेटी के साथ खेल रहे थे, उस दौरान की एक याद उनके मन में कौंध गई।

कर्नल ने उन्हें बैठने के लिए आमंत्रित किया और सुखेष्णी से पूछा कि वे वहां कैसे पहुंचे, और विवांत ने कर्नल को अपने साहसिक कारनामे की कहानी सुनाई।

“आपकी मां सुखेशनी कैसी हैं? आपका परिवार अब कहां है?” कर्नल ने पूछा।

दोनों ने विवांत को नजरअंदाज कर दिया था और पिता-पुत्री के एक खूबसूरत पल का आनंद ले रहे थे। कर्नल को पता था कि विवांत को कभी अपने पिता के साथ बचपन बिताने का मौका नहीं मिला था।

कर्नल की नजर तुरंत विवांत द्वारा पहनी हुई चांदी की चेन पर पड़ी, जिसमें नीले रंग का पेंडेंट लगा हुआ था।

“बेटा, तुम्हारा बाप कौन है?” कर्नल ने पूछा।

“मैं उसके बारे में बात नहीं करना चाहता। वह न तो मेरे लिए और न ही मेरे परिवार के लिए कोई मायने रखता है। जब मैं छोटा बच्चा था, तब उसने मुझे और मेरी माँ को छोड़ दिया था,” विवांत ने जवाब दिया।

“क्या आपके पिता डॉ. विश्वनाथ हैं?” कर्नल ने मुस्कुराते हुए पूछा।

विवांत और सुखेशनी दोनों ही असमंजस में थे। वे सोच रहे थे कि विवांत को अपने पिता के बारे में कैसे पता चला और उनका उनसे क्या संबंध था।

पिछले कुछ वर्षों में उसने अपने पिता का नाम तक नहीं लिया था, फिर भी यहाँ एक अजनबी था जिसने उसे उसके पिता के नाम से पहचान लिया।

“हां,” विवांत ने चौड़ी आंखों से जवाब दिया, उसे समझ नहीं आ रहा था कि आगे क्या कहे। वह अपने पिता के बारे में पूछना भी नहीं चाहता था, लेकिन फिर भी उत्सुक था कि कर्नल उसे कैसे जानते हैं। उन्हें कैंटीन ले जाते हुए कर्नल ने कहा, “चलिए नाश्ते पर बात करते हैं और हां, आप लोग अपनी टीम को बता दीजिए कि आप भारतीय सेना के साथ सुरक्षित हैं और थोड़ी देर में आ जाएंगे।”

उन्होंने आलू पराठे और रोटी के टुकड़े खुद ही परोसे और एक मेज पर बैठ गए। कैंटीन खाली थी क्योंकि सैनिक अभी तक नाश्ते के लिए नहीं आए थे, वे प्रशिक्षण और अभ्यास में व्यस्त थे।

“पोनप्पा और मैंने बीस साल पहले यह शिविर स्थापित किया था। बाद में भारत सरकार ने कैलाश पर्वत का सर्वेक्षण करने के लिए एक पुरातत्व दल भेजा, जिसका नेतृत्व डॉ. विश्वनाथ ने किया था। वे कैलाश पर्वत का अन्वेषण करने के लिए यहाँ आए थे और उन्होंने कुछ महत्वपूर्ण बातें खोजीं।” कर्नल अतीत को याद करते हुए विवांत और सुखेष्णी को बताने लगे।

“हमने उन्हें पहले ही बता दिया था कि कई अन्य लोग कैलाश पर्वत का अन्वेषण करने की कोशिश कर रहे हैं और हमारी पुरातात्विक टीम को नुकसान पहुंचा सकते हैं। तब हमसे डॉ. विश्वनाथ और उनकी टीम को उनकी बुरी नजरों से सुरक्षा प्रदान करने के लिए कहा गया।”

कुछ महीनों की खोज के बाद, उन्होंने हमें बताया कि कुछ हथियारबंद लोग कुछ लोगों के साथ मिलकर कुछ खोज रहे थे और उन्होंने हमारी पुरातात्विक टीम को उस जगह को छोड़ने की धमकी दी थी।

सुखेशनी के पिता और मैंने उनका पीछा करने की कोशिश की। शुरू में हमें कोई सुराग नहीं मिला, लेकिन कुछ दिनों तक उनका पीछा करने के बाद हमें पता चला कि उनका धिथी रिसर्च लैब से कुछ न कुछ संबंध जरूर है।

हमारी सुरक्षा व्यवस्था के चलते डॉ. विश्वनाथ अंततः खुदाई शुरू कर सके। एक दिन खुदाई के दौरान डॉ. विश्वनाथ को एक खजाना मिला। कर्नल ने उन्हें खजाने का चित्र दिखाया।

धिथि रिसर्च लैब का नाम सुखेशनी और विवंत के दिमाग में घंटी बजी, लेकिन वे चुप रहे।

"यहां आने से पहले, लेफ्टिनेंट पोन्नप्पा और आपके पिता को जो मिला था, उसे देखकर वे चकित और भयभीत थे। अन्य उत्खननकर्ता उस बक्से को पाने के लिए उनका पीछा कर रहे थे।"

पोन्नप्पा ने उन्हें दूर रखा और बक्से तथा डॉ. विश्वनाथ को सुरक्षित स्थान पर ले आए। विश्वनाथ ने कहा था कि उन्होंने बक्से को ताला लगा दिया है और उसे सुरक्षित स्थान

पर रखना चाहते हैं, और अगर उन्हें वह मिल भी जाए, तो उन्होंने यह सुनिश्चित कर लिया है कि वे उसे खोल न सकें।

उन्होंने गुप्त डिब्बे से पेंडेंट और पत्थर निकाल लिए। वे अपने-अपने गृहनगर चले गए और उसे वहाँ छिपा दिया और मुझसे कहा कि लौटने पर वे डिब्बे में क्या है, यह बता देंगे। वे जल्दी में थे, इसलिए मैंने उन्हें ज़्यादा परेशान नहीं किया।

मैंने आखिरी बार वह पेंडेंट तब देखा था जब आपके पिता अपने पैतृक नगर गए थे। मैंने आने वाले हफ्तों में देखा कि कुछ लोग हमारे शिविर पर नजर रख रहे थे। हमने अपनी सुरक्षा बढ़ा दी थी।" कर्नल ने विवांत को डॉ. विश्वनाथ की स्थिति समझाने की कोशिश की।

"क्या यही वो समय था जब मेरे पिताजी मेरे भाई के साथ वापस आए और मुझे और मेरी माँ को घर पर छोड़ गए? क्या मेरे पिताजी के यहाँ वापस आने के बाद उनके साथ कुछ हुआ था?" विवांत ने पूछा।

"जी हां, दुर्भाग्यवश," कर्नल ने आगे कहा, "कुछ हफ्तों बाद, डॉ. विश्वनाथ आपके भाई वेदांत के साथ वापस आ गए; और पोन्नप्पा तब तक लौट चुके थे। डॉ. विश्वनाथ ने बताया कि घर पर उनका समय कठिन चल रहा था और साल के अधिकांश समय अनुपलब्ध रहने के कारण आपकी मां और दादा-दादी से उनका झगड़ा होता था और आपके जन्म के समय आपकी मां को दो छोटे बच्चों की देखभाल करनी पड़ती थी।"

आपके दादा-दादी चाहते थे कि वह अपनी पत्नी और बच्चों को साथ ले जाए, उन्हें समझ नहीं आ रहा था कि वह परिवार को यहाँ क्यों नहीं लाना चाहता था। विश्वनाथ आपकी माँ को यहाँ के खतरों के बारे में नहीं बताना चाहता था क्योंकि इससे वह डर जाती और उसे वापस नहीं आने देती।

उसने उन्हें दूसरे तरीकों से समझाने की कोशिश की, लेकिन उसका साथ देने वाला कोई नहीं था। इसलिए, रात में वह तुम्हारे भाई को लेकर आया और सोचा कि उसे यहाँ के किसी बोर्डिंग स्कूल में दाखिला दिला देगा और फिर वह सिरखा आ गया।

"उसके बाद जो कुछ हुआ, वह मेरे जीवन की सबसे भयानक शाम थी।" आँखों में

आँसू लिए कर्नल ने उस रात को याद करते हुए विवांत और सुखेष्णी को बताया कि क्या हुआ था।

सुखेशनी की आंखें अपने पिता के प्रति प्रेम से भर उठीं। अपने पिता द्वारा दिखाए गए शौर्य की कहानी सुनने के बाद, वह सिर ऊंचा करके खड़ी हो गई और अपने पिता की तस्वीर को देखने लगी।

कुछ देर रुकने के बाद कर्नल ने आगे कहा, “डॉ. विश्वनाथ और वेदांत का कहीं पता नहीं चला। हो सकता है कि उन्हें बक्से के साथ ही अगवा कर लिया गया हो।”

कर्नल ने विवांत की ओर देखा, जो अपनी नम आँखों से आँसू रोकने की कोशिश कर रहा था क्योंकि उसके पिता के बारे में उसने जो कुछ भी जाना और कल्पना की थी, वह सब गलत निकला था। उसके पिता उससे और उसकी माँ से बहुत प्यार करते थे, उसकी कल्पना से बिल्कुल अलग।

“तुम्हारे पिता ने तुम्हें नहीं छोड़ा, मेरे बच्चे, उन्हें तुम्हारे भाई के साथ ले जाया गया था।” कर्नल ने विवांत की ओर देखते हुए कहा।

“हमने उन्हें ढूंढने की बहुत कोशिश की, लेकिन नहीं मिल पाए। कुछ दिनों बाद हमें तिब्बत में एक 4-5 साल के बच्चे का शव मिलने की खबर मिली। मैंने तुम्हारी माँ को इस बारे में नहीं बताया। मैंने सोचा कि उनके लिए एक परित्यक्त पति के साथ जीना, एक अपहृत पति और एक मृत बेटे के साथ जीने से बेहतर होगा।”

हमें कुछ सुराग मिले जिनसे तारक और धिथी अनुसंधान प्रयोगशालाओं की ओर इशारा मिला। लेकिन तिब्बती धरती पर होने और चीनी सरकार के साथ अच्छे संबंध न होने के कारण हम कुछ नहीं कर सके। सीमा पर अभी भी तनाव बना हुआ है और हमारे सैन्य अभियान भारतीय सीमा तक ही सीमित हैं।

"क्या यह वही धिथी रिसर्च लैब्स नहीं है जिसने हमारी यात्रा को प्रायोजित किया है?" सुखेष्णी ने विवांत और कर्नल की ओर देखते हुए पूछा।

"हां, जब आप लोगों ने मुझे बताया कि आपकी यात्रा धिथी रिसर्च लैब्स द्वारा

प्रायोजित है, तो मेरे कान खड़े हो गए। मुझे इस बात में कुछ गड़बड़ लगी कि आप दोनों को एक ही समय पर प्रायोजित करके यहां लाया गया है।"

लेकिन आपने हमें बताया था कि आपके साथ बीस और लोग हैं, इसलिए यह कोई समस्या नहीं होनी चाहिए। क्या आप लोगों ने उन्हें सूचित कर दिया है? कर्नल ने पूछा।

“हां, वे ट्रेक के शुरुआती बिंदु पर हमारा इंतजार कर रहे हैं,” विवांत ने जवाब दिया। वह अभी भी अपने पिता के बारे में सच्चाई को समझने की कोशिश कर रहा था।

“चिंता की कोई बात नहीं है। हमारा एक जासूस, रॉ एजेंट कन्हैया, तिब्बती धरती पर हमारे लिए काम कर रहा है ताकि वह धिथी रिसर्च लैब्स की जांच और सहायता कर सके।”

ये कार्ड ले लो, इस पर उसका नंबर है; बुरंग में अपने होटल पहुँचते ही उसे फोन कर लेना और उससे संपर्क में रहना। अगर तारक कुछ भी गलत करने की कोशिश करे तो वो तुम दोनों का ख्याल रखेगा। मैं उससे बात करके उसे बता दूंगा कि तुम दोनों पर नज़र रखे।” कर्नल ने कार्ड विवांत को सौंप दिया और उन्हें अपना ख्याल रखने को कहा।

“धन्यवाद सर,” विवांत ने जाने की अनुमति मांगी। उसके मन में सैकड़ों सवाल उठ रहे थे। “उसके पिता और भाई कहाँ हैं? उन्हें क्यों अगवा किया गया? उस खजाने के बक्से में क्या था? ये चाबियाँ क्या हैं? दिथी रिसर्च लैब्स की क्या भूमिका है?” इस बारे में जानकारी केवल रॉ एजेंट कन्हैया के पास ही हो सकती थी। विवांत तिब्बत में उससे मिलकर ये सारे सवाल पूछना चाहता था।

कर्नल वीरप्रताप सिंह ने अपने ड्राइवर को उन्हें ट्रेक के शुरुआती बिंदु पर छोड़ने का आदेश दिया।

दोपहर करीब 12 बजे वे सिरखा में अपनी ट्रेकिंग टीम से मिले। गाइड और टीम के अधिकांश सदस्य चिंतित थे। वे पिछली रात से लापता थे और सुबह 5 बजे से ही उनकी तलाश में जुटे हुए थे।

पूरी घटना बताने के बाद वे अपने कमरों में आराम करने चले गए। गाइड बेहद परेशान था, तभी विवांत ने फोन करके बताया कि वे भारतीय सेना के साथ सुरक्षित हैं।

गाइड और अन्य लोगों ने देखा कि दोनों को कुछ चोटें आई हैं, इसलिए उन्होंने उन्हें शाम तक आराम करने की सलाह दी और कहा कि वे अगले दिन ट्रेक शुरू करेंगे।

अगले दिन सुबह वे गाला गाँव के लिए रवाना हुए। यह विशाल हरे-भरे पहाड़ों का एक खूबसूरत सफर था, जहाँ तरह-तरह के पेड़ और झरने थे, और पृष्ठभूमि में हिमालय के बर्फ से ढके पहाड़ों का मनोरम दृश्य था।

रास्ते में उनकी मुलाकात कई ग्रामीणों से हुई और उन्हें स्थानीय संस्कृति और परंपराओं के बारे में जानकारी मिली। लोगों ने रंग-बिरंगे वस्त्र पहन रखे थे, जो उनकी पारंपरिक पोशाक थी। उन्होंने उनके साथ तस्वीरें भी लीं।

उन्हें गांव में दोपहर के भोजन में स्वादिष्ट रोटियां और पुदीने की चटनी के साथ सब्जी परोसी गई।

उन्हें वन क्षेत्र की वनस्पतियों और जीवों का अवलोकन करने का अवसर मिला। उन्हें सौभाग्यवश कोबरा लिली के फूल देखने को मिले, जो सांप के आकार के होते हैं और बेहद आकर्षक होते हैं।

गाइड ने उन्हें कांटेदार पत्तियों वाले औषधीय पौधे दिखाए और कहा कि यह घुटने के दर्द में दर्द निवारक के रूप में काम करेगा।

गाला गांव में विश्राम करने के बाद अगले दिन टीम बोधि के लिए रवाना हुई। उनमें से अधिकांश को इस बात से राहत मिली कि बोधि तक पहुंचने के लिए उन्हें 4,000 सीढ़ियाँ उतरनी थीं।

रास्ते में उन्हें एक अद्भुत झरना मिला जहाँ सभी लोग समय बिता सकते थे और उन्होंने स्नान करके खुद को तरोताजा किया।

सेना के जवान विवांत और सुखेशनी ने बुजुर्ग लोगों को सीढ़ियों से नीचे उतरने और

ऊबड़-खाबड़ सड़कों पर चलने में मदद की और टीम भोजन करने के लिए लखनपुर पहुंची, तब तक सभी लोग थक चुके थे।

आगे बढ़ते हुए वे मालपा पहुंचे, जहां कुछ साल पहले एक भीषण बाढ़ और भूस्खलन में 300 लोगों की मौत हो गई थी। उनकी यात्रा में खूबसूरत और तेज बहती काली नदी उनका साथ दे रही थी और अंत में वे बोधि गांव पहुंचे, जहां उन्होंने टेंट लगाए और रात वहीं बिताई।

जैसे ही सबकी आंखें अनायास ही बंद होने लगीं, वे सब सो गए क्योंकि उन्हें अगली सुबह जल्दी उठना था।

अगले दिन वे गरबायंग होते हुए गुंजी पहुंचे, जहां आईटीबीपी शिविर में उनकी चिकित्सा जांच हुई। उन्हें कमांडेंट द्वारा प्रशिक्षण दिया गया, जो संपर्क अधिकारी थे।

गुंजी से एक सेना के ट्रक ने उन्हें 9 किलोमीटर दूर स्थित कालापानी तक पहुंचाया, जो काली नदी का उद्गम स्थल है, और फिर उन्होंने वेद व्यास गुफा का दौरा किया।

उस जंगल में हर जगह ऐसे पेड़ थे जिनका उपयोग वैदिक काल में भोजपत्र नामक कागज बनाने के लिए किया जाता था।

सभी ने चीन द्वारा शासित तिब्बती भूमि में प्रवेश करने के लिए अपने आव्रजन प्रपत्र भर लिए। थोड़ी दूर चलने के बाद, उन्हें ओम पर्वत दिखाई दिया, जो अपने आप में एक अद्भुत संरचना थी, और फिर वे नवीधांग पहुंचे। इतनी ऊंचाई पर आईटीबीपी द्वारा निर्मित और उपलब्ध कराई गई सुविधाओं को देखकर वे आश्चर्यचकित रह गए।

वे तड़के 2 बजे नवीधांग से रवाना हुए। कड़ाके की ठंड थी और कई लोगों को सांस लेने में तकलीफ हो रही थी। विवांत और कुछ आईटीबीपी जवानों ने सांस लेने में तकलीफ झेल रहे लोगों की मदद की।

सुबह 7 बजे तक वे लिपुलेख दर्रे पर पहुंच गए और आईटीबीपी के जवानों ने उन्हें चेतावनी दी कि अगर उन्होंने देरी की तो बर्फ पिघलनी शुरू हो जाएगी और उनके लिए आगे बढ़ना मुश्किल हो जाएगा।

सभी को चीनी सेना के हवाले कर दिया गया, जिन्होंने उनके पासपोर्ट और आव्रजन दस्तावेजों की जाँच की। दो किलोमीटर आगे जाने पर पर्यटकों के लिए एक बस बुक की गई, जो उन्हें बुरंग होटल ले गई। वहाँ उन्होंने विश्राम किया और फिर आगे बढ़े।

अध्याय दो

गुरुजी के आश्रम में बिताए दिन

बुरंग होटल

अगले दिन सीमा शुल्क और आव्रजन जांच में बीत गया और बाद में दोपहर में होटल के सभी लोग खरीदारी करने चले गए। विवांत और सुखेशनी ने अपनी खरीदारी पूरी की और होटल लौट आए। उनका कमरा पहली मंजिल पर था और पूरी मंजिल खाली थी। अभी तक कोई भी खरीदारी करके नहीं लौटा था।

उन्हें अपने कमरों से कुछ आवाज़ें सुनाई दीं। विवांत ने सुखेष्णी को चुप रहने का इशारा किया। वह कमरे के पास गया और उसे किसी के ज़ोर से बात करने की आवाज़ सुनाई दी। पहले तो उसे लगा कि शायद रूम सर्विस का कोई कर्मचारी होगा। वह कमरे के और करीब गया और दरवाज़े के पास खड़ा होकर उनकी बातें सुनने लगा।

“देवांत सर को फोन करके इस बारे में बता दो,” वांगमो ने दोरजी को निर्देश दिया। फोन पर बात करते हुए दोरजी ने कहा, “सर, हमें नीला पेंडेंट या नीला कंगन नहीं मिला। मुझे लगता है कि वे इसे अपने साथ ले गए होंगे।”

“मैं कुछ बैकअप और उन लोगों की तस्वीरें भेजूंगा। जैसे ही वे होटल पहुंचें, उन्हें अगवा करके मेरे पास ले आओ,” देवांत ने फोन पर जवाब दिया।

“जी हां, हम होटल के बाहर इंतजार करेंगे और जैसे ही वे आएंगे, हम उन्हें आपके पास ले आएंगे।” दोरजी ने जवाब दिया।

उनकी बातें सुनकर विवांत का दिल डर से ज़ोर से धड़कने लगा। उसने चौंककर सुखेष्णी की तरफ देखा और जल्दी से उसे पहली मंज़िल पर बने रिसेप्शन काउंटर के पीछे छिपने का इशारा किया।

विवांत भी उसके पीछे-पीछे गया और दोनों रिसेप्शन काउंटर के पीछे छिप गए। उसने वांगमो को इशारा किया कि वह कोई आवाज़ न करे। जैसे ही दोरजी और वांगमो कमरे से निकलकर नीचे गए, विवांत ने खिड़की से झाँककर देखा कि वे पार्किंग की ओर जा रहे हैं।

विवांत और सुखेशनी अपने-अपने कमरों में गए और यह देखकर दंग रह गए कि उनका सारा सामान इधर-उधर बिखरा पड़ा था। वे समझ गए कि वे एक खतरनाक स्थिति में हैं।

सुखेशनी के माथे से पसीना टपकने लगा, "क्या हमारा अपहरण होने वाला है? क्या हमें पुलिस को बुलाना चाहिए? रिसेप्शन पर फोन करके उन्हें बता दें?"

“चिंता मत करो, मैं इसका हल निकाल लूंगा, परेशान मत हो। अगर हम अभी इस स्थिति से निकल भी गए, तो भी धीथी रिसर्च लैब्स आने वाले दिनों में हमारे लिए जाल बिछा कर रखेगी; उन्होंने ही इस यात्रा का खर्च उठाया है और होटल बुक किए हैं। चलो कर्नल वीरप्रताप सिंह द्वारा सुझाए गए रॉ एजेंट कन्हैया को फोन करते हैं,” विवांत ने सुखेष्णी को समझाया।

उसने तुरंत कन्हैया को फोन किया। “हेलो सर, मैं विवांत हूँ। कर्नल वीरप्रताप सिंह ने शायद आपको हमारे बारे में बताया होगा। हम बुरंग के एक होटल में हैं। हम गंभीर खतरे में हैं। कुछ लोग हमें अगवा करने आए हैं। मैंने उन्हें बात करते सुना। वे बाहर पार्किंग में इंतजार कर रहे हैं। हमें समझ नहीं आ रहा कि क्या करें। हम डरे हुए हैं।”

“चिंता मत करो, मैं तुम्हारी मदद करूँगा। मैं अपनी जीप से होटल के पार्किंग एरिया के पास आऊँगा। मुझे पहुँचने में 15-20 मिनट लगेंगे और तब तक तुम लोग किसी तरह भेष बदलकर उन्हें बेवकूफ बनाकर मेरी जीप में बैठ जाना। मैं तुम्हें सुरक्षित जगह पहुँचा दूँगा।” विवांत की बात सुनकर कन्हैया ने उन्हें चेतावनी दी और जीप का नंबर दे

दिया।

सुखेष्णी के विरोध के बावजूद, विवांत और सुखेष्णी ने अपनी कुछ ज़रूरी चीज़ें और कपड़े एक छोटे से थैले में पैक कर लिए। उन्होंने दोनों के कपड़े एक ही थैले में रखने की कोशिश की, क्योंकि विवांत जानता था कि अगर कोई उनका पीछा करे तो सुखेष्णी थैलों के साथ तेज़ी से नहीं भाग पाएगी।

सुखेशनी को एक विचार आया। “मैं तुम्हारे कपड़े पहनकर पुरुष का वेश धारण कर लूंगी और तुम स्त्री का वेश धारण कर लो, ताकि हम बिना किसी की नजर में आए पार्किंग स्थल से जल्दी से मुख्य सड़क तक पहुँच सकें, जहाँ कन्हैया ने कहा था कि वह हमारा इंतजार कर रहा होगा।”

विवांत जानता था कि यह बेवकूफी भरा लगेगा, लेकिन उसके पास दूसरे विकल्पों के बारे में सोचने का समय नहीं था, इसलिए उसने उस स्थिति में योजना पर सहमति जताई और सुखेष्णी के कपड़े पहन लिए, जबकि सुखेष्णी ने उसकी पोशाक और जैकेट पहन ली। सुखेष्णी ने विवांत को महिला जैसा दिखाने के लिए उसका मेकअप किया।

बीस मिनट बाद, विवांत ने होटल से कन्हैया को फिर फोन किया। “हम तैयार हैं।” “मैं मुख्य सड़क के पास आ गया हूँ; तुम लोग किसी तरह जीप के पास आ जाओ। आराम से आना, मैं इंतज़ार करूँगा।” कन्हैया ने विवांत को निर्देश दिया।

विवांत और सुखेशनी ने अपना छोटा सा बैग लिया और होटल से बाहर निकलकर चुपचाप मुख्य सड़क की ओर चल दिए। दोरजी, जो अपनी जीप में चाबियों से खेल रहा था, ने उन बैगों पर नज़र डाली और महसूस किया कि ये वही बैग थे जिनकी उन्होंने एक घंटे पहले जाँच की थी और ये विवांत और सुखेशनी के थे।

डोरजी ने वांगमो पर चिल्लाते हुए कहा, "इन्हें पकड़ो; इनके पास वही बैग है जिसकी हमने अभी जाँच की है।" वे दोनों विवांत और सुखेशनी की ओर दौड़े।

कन्हैया ने जीप स्टार्ट की और विवांत और सुखेष्णी उसमें कूद गए। कन्हैया तेजी से जीप लेकर दरचेन की ओर चल पड़ा। दोरजी और वांगमो अपनी जीप से उनका पीछा

करने लगे।

“तुम्हारी सीट के नीचे कील लगी हुई बेल्ट हैं जिनसे उनकी जीप के टायर पंचर हो सकते हैं। उन्हें उठाओ और उनके टायरों पर निशाना लगाओ,” कन्हैया ने निर्देश दिया।

विवांत और सुखेष्णी ने नुकीली कीलों से जड़ी हुई वे बेल्टें उठा लीं। विवांत ने कहा, “कन्हैया, धीरे चलो, उन्हें पास आने दो, हम बेहतर निशाना लगा पाएंगे।” जैसे ही वे पास आए, दोनों ने जीप के टायरों पर निशाना साधा और बेल्टें फेंक दीं।

टायर पंक्चर होने के कारण दोरजी अपनी जीप पर से नियंत्रण खो बैठा और उन्हें रुकना पड़ा और खुद को कोसना पड़ा क्योंकि वे विवांत और सुखेशनी से संपर्क नहीं कर पाए थे।

विवांत ने कन्हैया की ओर देखकर कहा, "तो, कान्हा, तुम एक भारतीय जासूस हो।" कन्हैया यह देखकर हैरान रह गया कि विवांत उसे उसके उपनाम से संबोधित कर रहा है।

कान्हा ने मुड़कर देखा तो विवांत उसके सिर से दुपट्टा हटाते ही नज़र आया। कान्हा को एहसास हुआ कि यह वही लड़का है जिससे वह नारायण आश्रम में मिला था और वह ज़ोर से हंस पड़ा।

“हां, मैं हूं और तुम इस पोशाक में बेहद खूबसूरत लग रहे हो,” कान्हा ने विवांत को चिढ़ाते हुए कहा।

“मैंने तुमसे कहा था, मुझे हास्यास्पद दिखाने का विचार तुम्हारा ही था। सब कुछ व्यर्थ गया। फिर भी उन्होंने हमें पहचान लिया,” विवांत ने सुखेष्णी को ताना मारा।

“मेरी वजह से ही हम बच निकले। अब यह मत कहना कि यह सब व्यर्थ था। वरना हम जीप तक भी नहीं पहुँच पाते,” सुखेष्णी ने तर्क दिया।

“कोई बात नहीं, शांत हो जाओ। अच्छी खबर है कि तुम सुरक्षित हो। मैं तुम्हें सुरक्षित स्थान पर ले जाऊंगा,” कान्हा ने कहा और उनकी बहस रोक दी।

कान्हा उन्हें आश्रम ले गया जहाँ उसके साथ आए सभी योगी ठहरे हुए थे। कान्हा ने कहा कि यह उसका निवास स्थान है क्योंकि योगियों के बीच छुपकर रहने और अपने अभियान को अंजाम देने के लिए यह एकदम सही जगह है।

“सोमेश्वर गुरुजी ज्ञानी हैं और आप भी उनसे कुछ सीख सकते हैं। मैं गुरुजी से बात करता हूँ। जब तक हम आपके भारत जाने का सुरक्षित इंतज़ाम नहीं कर देते, आप लोग यहीं रुक सकते हैं क्योंकि यहाँ अब खतरा है। मेरा कमरा इस्तेमाल कीजिए और कृपया पहले अपने कपड़े बदल लीजिए। गुरुजी से आपके रहने की व्यवस्था के बारे में बात करने के बाद मैं आपसे मिलूंगा,” विवांत का मेकअप देखकर कान्हा ने हंसते हुए कहा।

विवांत ने अपनी एक भौंह उठाई और ऊपर देखते हुए सोचने लगा। यह तो निश्चित था कि वे उसका पेंडेंट ढूंढ रहे थे, लेकिन सुखेष्णी के कमरे में वे क्या ढूंढ रहे थे?

“सुखेशनी, क्या तुम्हारे पास भी कोई पेंडेंट है जो तुम्हारे पिता ने तुम्हारी माँ को दिया था?” विवंत ने सुखेशनी से पूछा।

उसने अपना बैग खोला और नीले गोलाकार पत्थरों और कुछ रंगीन पत्थरों से बना एक शुभ कंगन दिखाया। “नहीं, यह कोई पेंडेंट नहीं है। यह कंगन मेरे पिताजी ने मेरी माँ को दिया था। मैं इसे अक्सर पहनती हूँ। शायद इसी वजह से मैं यहाँ आई हूँ।” सुखेष्णी ने उससे कहा।

“मेरी माँ भी मुझे परीक्षा और घूमने-फिरने के दौरान अक्सर इसे पहनने के लिए देती

थी। शायद बैंगलोर में रहते हुए कोई हमें देख रहा था और उसने हमें यहाँ आने के लिए स्पॉन्सर किया!" विवांत ने हैरानी से कहा।

सुखेशनी के कंगन में भी वही इंद्रधनुषी रंग के पत्थर लगे हुए देखकर वह आश्चर्यचकित रह गया जो उसके पेंडेंट में थे और बाकी पत्थर भी उसी नीले रंग के थे जिससे उसका पेंडेंट बना था।

अब उसे यकीन हो गया था कि वे किसी न किसी मकसद से इस नीले रंग के पत्थर के पेंडेंट और ब्रेसलेट की तलाश कर रहे थे।

कान्हा वापस आए और उन्हें आश्रम के एक छोटे से कमरे की ओर ले गए जहाँ उन्हें ठहरने की अनुमति दी गई थी। सुखेष्णी वहीं ठहरीं और कान्हा विवांत को अपने कमरे में ले गए। एक घंटे आराम करने के बाद सुखेष्णी कान्हा के कमरे में आईं।

विवांत ने लखनऊ के होटल में शुरू से लेकर अब तक जो कुछ भी हुआ था, वह सब कान्हा को बताया और कान्हा समझ गया कि हर कोई उस लटकन और कंगन की तलाश में था।

"मुझे उस गुप्त बक्से के बारे में पता है, कर्नल वीरप्रताप सिंह ने मुझे बताया था कि गुप्त बक्सा छुपाने के बाद तुम्हारे दोनों पिताओं के साथ क्या हुआ था। मेरा अंतर्ज्ञान कहता है कि तुम्हें जो पेंडेंट और कंगन के पत्थर मिले हैं, वे शायद उसी बक्से से हैं," कान्हा ने कहा और आगे बताया।

"जब आपके पिता अपने घर लौटे, तो उन्होंने इसे आपकी माताओं को सौंप दिया और जब वे वापस आईं, तो डॉ. विश्वनाथ और वेदांत का अपहरण कर लिया गया और लेफ्टिनेंट पोन्नप्पा शहीद हो गए।" कान्हा ने संक्षेप में बताया।

विवांत ने सहमति जताते हुए कहा, "मुझे लगता है कि यह पेंडेंट और ब्रेसलेट किसी गुप्त बक्से को खोलने की चाबी हो सकते हैं, जिसे धीथी रिसर्च लैब्स ने शायद पहले ही हासिल कर लिया हो और जिसमें कोई कीमती चीज हो सकती है। वे इसे पाने के लिए बेताब हैं। इसलिए उन्होंने योजना बनाई और हमारी यात्राओं का खर्च उठाया।"

“क्या आपको पता है कि धीथी रिसर्च लैब्स के लोगों द्वारा मेरे पिता का अपहरण किए जाने के बाद उनका क्या हुआ? क्या आपको पता है कि वे अभी भी जीवित हैं?” विवांत ने कान्हा से ये सवाल पूछे, क्योंकि वह इन सवालों को पूछने के लिए और इंतजार नहीं कर सकता था।

“मुझे पता है कि अपहरण धिथी रिसर्च लैब्स के सीईओ तारक ने किया था, लेकिन इससे ज्यादा मुझे कुछ नहीं पता। अब तक वे इस मामले में सक्रिय नहीं थे, लेकिन अब हम अपना काम फिर से शुरू कर सकते हैं। चिंता मत करो, अगर मुझे मौका मिला तो मैं तुम्हारे पिता को छुड़ाने की पूरी कोशिश करूंगा।” कान्हा ने विवांत को आश्वासन दिया।

सभी ने इन घटनाओं पर विचार किया और प्रसादालय में भोजन करने चले गए। विवांत और कान्हा ने योगियों को प्रसादालय में भोजन परोसने की जिम्मेदारी ली और गुरुजी उन्हें भोजन परोसते देखकर प्रसन्न हुए।

गुरुजी सारी कार्यवाही देख रहे थे और उन्होंने विवांत और कान्हा को बाकी लोगों को भोजन परोसने के बाद खुद भोजन करने को कहा। भोजन करने के बाद वे आश्रम के मैदान में थोड़ी देर टहलने गए।

"कल से पृथ्वी पर जीवन की उत्पत्ति पर एक सत्र शुरू होगा और यह एक शानदार सत्र होगा। यदि आप चाहें तो आप गुरुजी से इस बारे में कोई भी प्रश्न पूछ सकते हैं," कान्हा ने विवांत और सुखेशनी को बताया।

“यह तो दिलचस्प लग रहा है, मैं इसका इंतजार करूंगा। मुझे इसमें रुचि तो है, लेकिन इस तरह के सेमिनारों में भाग लेने का मौका कभी नहीं मिला,” विवांत ने उत्साह से कहा।

“उससे पहले, आप सुबह जल्दी उठकर योग सत्र के लिए तैयार होते हैं। इसलिए, अब आराम कर लीजिए,” कान्हा ने उन्हें सलाह दी।

उन्होंने कान्हा के मोबाइल से अपनी माताओं को फोन किया और बताया कि यात्रा में सब कुछ ठीक है और योजना के अनुसार चल रही है। उन्होंने अपनी माताओं को

आश्वस्त किया कि वे सुरक्षित हैं। इसके बाद वे अपने कमरों में चले गए।

अगली सुबह विवांत जल्दी उठ गया और तैयार हो गया। वह दिन की चर्चा में भाग लेने के लिए उत्सुक था। विवांत और सुखेष्णी ने योग सत्र में भाग लिया, सुबह की ताजी हवा का आनंद लिया और प्राणायाम एवं सूर्य नमस्कार किया। इसके बाद, वे तरोताजा हुए और नाश्ता किया।

सभी लोग चर्चा कक्ष में एकत्रित हुए और अन्य योगियों के साथ बैठ गए। गुरुजी के प्रवेश करते ही वहां सन्नाटा छा गया। वे मंच पर रखी कुर्सी पर बैठ गए। गुरुजी ने सभी का अभिवादन किया और कहा कि सभी लोग तीन बार ॐ का जाप करेंगे।

गुरुजी ने कहा, "जैसा कि आप सभी जानते होंगे, आज हम इस बात पर चर्चा करने जा रहे हैं कि पृथ्वी पर जीवन की उत्पत्ति कैसे हुई और इतनी सारी आपदाओं के बाद भी हम इस ग्रह पर कैसे रह रहे हैं। पृथ्वी पर बाढ़ आई और जीवन का विनाश हुआ, और प्राचीन ग्रंथों से हमें अपने पूर्वजों का कुछ इतिहास सुनने को मिलता है।"

मैं अपने शोध और अन्य बुद्धिजीवियों से बातचीत के माध्यम से प्राप्त अपने अनुभव और ज्ञान को साझा करने का प्रयास करूंगा। मैं अपना अधिकांश समय ध्यान में और उस ऊर्जा पर ध्यान केंद्रित करने में व्यतीत करता हूं जो संपूर्ण ब्रह्मांड को संचालित करती है, यानी महाविष्णु जो ब्रह्मांडीय सागर में विराजमान हैं।

विवांत को शुरू में लगा कि यह भगवान के बारे में अन्य गुरुओं के भाषणों की तरह ही होगा, लेकिन उन्हें उम्मीद थी कि उनका यह विचार गलत साबित होगा।

Someshwara Guruji spoke by praying to Mahavishnu.

मैं महाविष्णु को प्रणाम करता हूँ जो ब्रह्मांडीय सागर में विराजमान हैं और इन ब्रह्मांडों नामक बुलबुलों का निर्माण करते हैं। इनमें से प्रत्येक बुलबुला एक समानांतर ब्रह्मांड है।

प्रत्येक ब्रह्मांड में हमारी आकाशगंगा की तरह कई आकाशगंगाएँ हैं, जिसका निर्माण हमारे ब्रह्मा ने किया था। प्रत्येक आकाशगंगा का निर्माता ब्रह्मा ही हैं। प्रत्येक ब्रह्मांड में

समान रचनाएँ हैं, लेकिन हो सकता है कि वे हमारी जैसी स्थिति में न हों।

ब्रह्मा आकाशगंगा के केंद्र में स्थित सत्य लोक नामक अपने ग्रह पर निवास करते हैं। हमारा सौर मंडल ब्रह्मा लोक के चारों ओर सर्पिलाकार रूप में हर 26 करोड़ वर्षों में एक बार परिक्रमा करता है, जो ब्रह्मा का एक वर्ष होता है। आकाशगंगा का जीवनकाल 26 अरब वर्ष है। शोध के अनुसार, आकाशगंगा की वर्तमान आयु 13.1 अरब वर्ष है और हमारे प्राचीन हिंदू ग्रंथों के अनुसार यह ब्रह्मा का 51वां वर्ष है। उन्होंने अपने जीवनकाल का आधा भाग, यानी 13 अरब वर्ष पूरा कर लिया है।

सत्य लोक सर्पिल और क्षुद्रग्रह बेल्ट का दृश्य

मैं कुछ महत्वपूर्ण तथ्य साझा करूँगा जो हाल के अध्ययनों से सामने आए हैं। इन अध्ययनों के अनुसार, प्रत्येक 26 मिलियन वर्षों में सौर मंडल आकाशगंगा के केंद्र में स्थित क्षुद्रग्रह पेटी का चक्कर लगाता है और वैज्ञानिकों ने पाया है कि वे प्रत्येक 26 मिलियन वर्षों में होने वाली सामूहिक विलुप्तियों का पता लगा सकते हैं। ऐसी ही एक विनाशकारी घटना में, डायनासोर इस ग्रह से विलुप्त हो गए थे।

जिस प्रकार ब्रह्मा का अपना सत्य लोक नामक ग्रह है, उसी प्रकार 14 लोक हैं जिनमें जीव निवास करते हैं और जैसा कि हिंदू, जैन और अन्य धार्मिक ग्रंथों में बताया गया है, सात लोक हमारे ऊपर और सात लोक हमारे नीचे हैं। गुरुजी ने 14 लोकों के बारे में समझाया।

1. सत्य लोक - जहाँ सर्वोच्च चेतना ब्रह्मा निवास करते हैं।

2. तप लोक - जहाँ अमर प्राणी निवास करते हैं, उन्हें सर्वोच्च ज्ञान प्राप्त होता है और सत्य लोक तक उनकी पहुँच होती है।

3. जन लोक - जहाँ आत्मज्ञानी आत्माएँ निवास करती हैं, वहाँ उन्हें भौतिक संसार तक पूर्ण पहुँच प्राप्त होती है।

4. महार लोक - जहाँ महान ऋषि निवास करते हैं। वे कठोर तपस्या करते हैं और सर्वोच्च शक्तियाँ और ज्ञान प्राप्त करते हैं, जिसे वे निचले लोकों में प्रसारित करते हैं।

5. स्वर्ग लोक - जहाँ देव और गंधर्व निवास करते हैं। वे निचले लोकों को नियंत्रित करने का प्रयास करते हैं।

6. भुवर लोक - जहाँ दानव निवास करते हैं।

7. भू लोक - जहाँ हम मनुष्य निवास करते हैं।

8. अटल लोक - भू लोक के नीचे स्थित भूमिगत शहर, जिस पर माया के पुत्र बाला का शासन था।

9. विटाला लोका - भूमिगत शहर जहां प्राणी सोना खोदकर अपना जीवन यापन करते हैं।

10. सुतला लोक - राजा बलि द्वारा शासित भूमिगत शहर।

11. तलताला लोका - भूमिगत शहर जहाँ माया सभ्यता के वास्तुकार शासन करते थे।

12. महातला लोका - भूमिगत शहर जहाँ नकाबपोश नाग रहते हैं।

13. रसातल लोक - वह भूमिगत शहर जहाँ दैत्य रहते हैं।

14. पाताल लोक - यह भूमिगत नगर है जहाँ अनेक फन वाले नाग रहते हैं। इस पर नाग राजा वासुकी का शासन है।

विवांत अपने मन में सभी लोकों की काल्पनिक दुनिया में खोया हुआ सा लग रहा था और गुरुजी के पास खगोल भौतिकी और शोध पत्रों और अन्य प्रकाशनों में प्रकाशित हालिया खोजों के बारे में मौजूद ज्ञान की मात्रा से चकित था, और जो बात उन्हें विशेष बनाती थी वह यह थी कि वे इसे प्राचीन हिंदू ग्रंथों से जोड़कर उनकी व्याख्या करने में सक्षम थे।

गुरुजी विश्राम के लिए चले गए और कहा कि वे अगले सत्र में इस पर और चर्चा कर सकते हैं।

“गुरुजी ने इतना ज्ञान कैसे प्राप्त किया?” विवांत ने कन्हैया से पूछा।

“पहाड़ों में रहने और सभी विकसित शहरों से दूर रहने का मतलब यह नहीं है कि वे चल रही सभी खोजों और शोधों से अनजान हैं। कई वैज्ञानिक यहां गुरुजी से वाद-विवाद करने और ज्ञान प्राप्त करने आते हैं,” कन्हैया ने उत्तर दिया।

गुरुजी ने दूसरे सत्र की शुरुआत ओम का जाप करके की और सभी ने उनका अनुसरण किया।

विवांत अब गुरुजी के भाषण में मग्न था और आंखें खोलकर ध्यान से सुन रहा था।

गुरुजी ने अपने सत्र की शुरुआत यह कहते हुए की - "ब्रह्मांड में हर चीज पहले अपने चारों ओर घूमती है और फिर किसी दूसरी चीज के चारों ओर घूमती है और हमेशा एक निरंतर विस्तारित होते ब्रह्मांड में आगे बढ़ती रहती है जब तक कि एक दिन वह सिकुड़कर प्रारंभिक बिंदु पर वापस नहीं आ जाती।"

पृथ्वी अपनी झुकी हुई धुरी पर घूमती है। हर 2,160 वर्षों में एक बार यह एक राशि चक्र नक्षत्र से दूसरे में स्थानांतरित होती है और 25,920 वर्षों में 12 राशि चक्र नक्षत्रों का एक चक्कर पूरा करती है, इसे अग्रगमन या प्लूटोनियन वर्ष कहा जाता है।

एक और विचारोत्तेजक बात यह है कि सूर्य अपने द्विआधारी तारे सीरियस के चारों ओर एक अंडाकार पथ पूरा करता है, जो हमारे सूर्य से बड़ा तारा है, और इसमें उसे ठीक उतना ही समय लगता है, यानी 25,920 वर्ष।

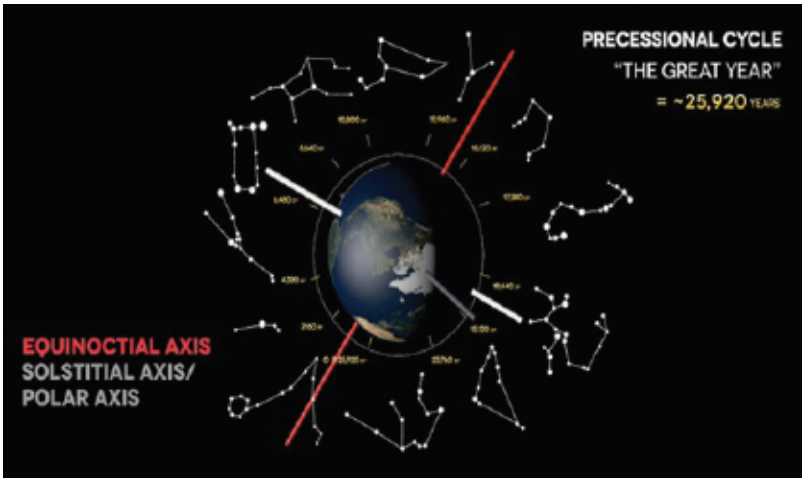

विवांत को लगभग एक साल पहले यूट्यूब पर सुना गया ऐसा ही एक भाषण याद आया और उसने युगों पर आधारित कई और वीडियो भी देखे।

गुरुजी ने आगे कहा, “अब प्रश्नोत्तर सत्र होगा। यदि किसी के मन में कोई प्रश्न हो तो पूछने का यही सही समय है।”

“मैंने यूट्यूब पर कुछ वीडियो देखे हैं। भाषण में यह उल्लेख था कि सूर्य एक महासूर्य के चारों ओर घूमता है और महासूर्य के चारों ओर एक परिक्रमा एक युग चक्र बनाती है। क्या यह वही चक्र है जिसके बारे में आप बात कर रहे थे?” विवांत ने पूछा।

गुरुजी ने उत्तर दिया, “जी मेरे बच्चे, तुम सही हो। क्यों न तुम मेरा भार बाँटो और इंटरनेट से तुमने जो कुछ सीखा है, उसके बारे में श्रोताओं को बताओ? अगर तुम गलत हो तो मैं तुम्हें सुधार सकता हूँ। यह सभी योगियों के साथ अपना ज्ञान साझा करने का एक बेहतरीन मंच है और फिर मैं आगे बोलूँगा।”

गुरुजी ने विवांत को मंच पर आमंत्रित किया। विवांत पोडियम पर गए और सभी को नमस्कार किया।

"जैसा कि गुरुजी ने उल्लेख किया, सूर्य और सीरियस एक द्विआधारी तारा प्रणाली में एक दूसरे के चारों ओर घूमते हैं," विवांत ने अपना भाषण शुरू किया।

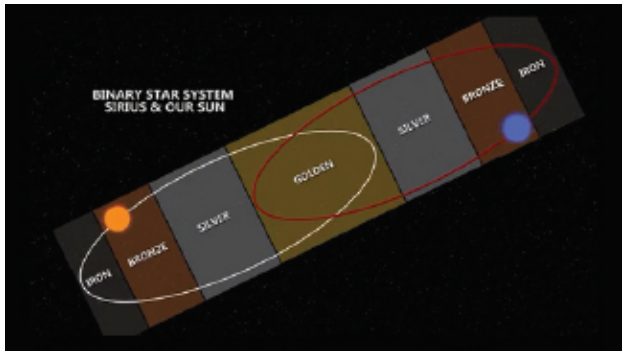

सूर्य और सीरियस का द्विआधारी प्रणाली में दृश्य

और पृथ्वी को अपने अक्ष पर घूमकर सभी 12 नक्षत्रों का चक्कर पूरा करने में भी 25,920 वर्ष लगते हैं, जो आरोही और अवरोही क्रम में चारों युगों का एक युग चक्र बनाता है। यदि हम इसे आधा कर दें तो यह 12,960 वर्ष हो जाता है।

उन्होंने बोर्ड पर एक आरेख बनाया और दर्शकों को अवरोही युग के 12,960 वर्षों और आरोही युग के एक अन्य चक्र के बारे में समझाया।

जब हम इन युगों को 4:3:2:1 के अनुपात में विभाजित करते हैं, तो हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि सत्ययुग 5,184 वर्ष, त्रेतायुग 3,888 वर्ष, द्वापरयुग 2,592 वर्ष और कलियुग कुल 1,296 वर्ष का है।

अवरोही युग मानव के तकनीकी और आध्यात्मिक ज्ञान के पतन को दर्शाते हैं क्योंकि वे सुपर सन (सीरियस तारा) से दूर होते जाते हैं, और वह अंतिम बिंदु जहां सूर्य और सीरियस एक दूसरे से बहुत दूर थे, 1806 ईसा पूर्व था, यदि हम ईसा पूर्व और ईस्वी को संदर्भ के रूप में लें।

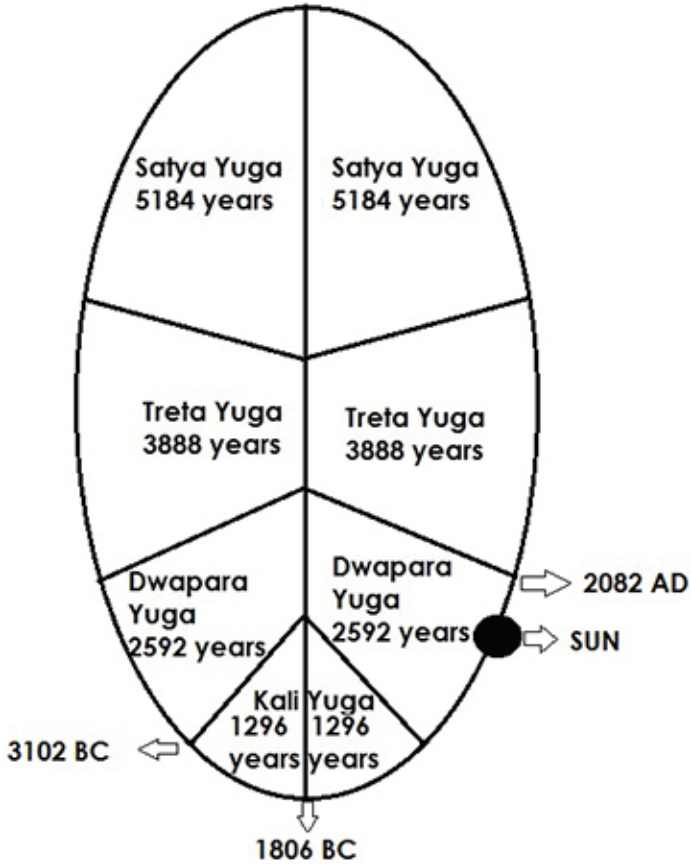

मानव बुद्धि, तकनीकी प्रगति और औसत मानव जीवनकाल अपने सबसे निचले स्तर पर थे। यदि हम इतिहास का ध्यानपूर्वक अध्ययन करें, तो पाते हैं कि प्लेग के प्रकोप के कारण औसत मानव जीवनकाल 20-30 वर्ष था।

हमारे प्राचीन ग्रंथों या महाकाव्यों में उल्लेख है कि हम ईसा पूर्व 3102 में कृष्ण के पृथ्वी पर जीवन का समय मानते हैं, जो द्वापरयुग का अंत था। इसके 1296 वर्ष बाद, ईसा पूर्व 1806 में, कलियुग का अंत हुआ और कलियुग का प्रारंभ हुआ।

श्रीमद् भागवतम् में उल्लेख है:

tatas canu-dinam dharmah

satyam saucam kshamadaya

kalena balina rajan

बहुत बहुत धन्यवाद अयुर बालम स्मृति

– Srimad Bhagavatam, 12.2.1

इसमें कहा गया है कि कलियुग में उम्र बढ़ने की प्रक्रिया, कलियुग धर्म, धार्मिक सिद्धांत, सत्यनिष्ठा, स्वच्छता, क्षमा, दयालुता, जीवनकाल, शारीरिक शक्ति, स्मृति आदि सभी दिन-प्रतिदिन कम होते जाएंगे।

वर्तमान स्थिति को देखते हुए, क्या हमें अब भी लगता है कि हम कलियुग में हैं? चिकित्सा क्षेत्र में हुई प्रगति के कारण जीवन प्रत्याशा प्रतिदिन बढ़ रही है, हम सभी के साथ समान व्यवहार करते हैं, स्वच्छता बनाए रखते हैं और पीढ़ी दर पीढ़ी हमारी स्मृति में सुधार हो रहा है। इससे मैं यह निष्कर्ष निकाल सकता हूँ कि हम युगों के आरोही क्रम में हैं, हम कलियुग पार कर चुके हैं।

हम यह भी देख सकते हैं कि जब हम लगभग 510 ईसा पूर्व कलियुग के अंत की ओर बढ़ रहे थे, तब बुद्ध और महावीर जैसे कई महान आत्माओं ने हमें मोक्ष प्राप्त करने का मार्ग दिखाया।

और अब हम द्वापरयुग में हैं। 2082 ईस्वी में हम अपनी आध्यात्मिक सोच और तकनीकी प्रगति में आगे बढ़ेंगे, क्योंकि हम सीरियस तारे की ओर बढ़ रहे हैं।

भारतीय वैज्ञानिक अनुसंधान संस्थान द्वारा महाभारत और रामायण पर प्रकाशित अन्य शोध पत्रों को पढ़ते समय, स्काईव्यू नामक सॉफ्टवेयर द्वारा खगोलीय कालक्रम से रामायण और महाभारत की तिथियां पता चलीं। विवांत ने अपने भाषण का समापन यह कहते हुए किया कि इंटरनेट पर सीमित ज्ञान के साथ शोध करने से उन्हें यही जानकारी मिली है।

“लेकिन मेरे मन में अब भी कई सवाल हैं कि हमें सिर्फ वर्तमान युग चक्र का ही ज्ञान

क्यों है? इसके बाद के चक्रों का क्या? क्या उन दिनों खगोलीय काल-निर्धारण इतना सटीक था और क्या इस ज्योतिष के पीछे का विज्ञान सही है?" विवांत रुका और गुरुजी की ओर देखा।

गुरुजी मुस्कुराए और बोले, "मेरे बच्चे, तुमने वाकई बहुत शोध किया है और तुम्हें बहुत कुछ पता है। तुमने मेरा बहुत काम आसान कर दिया है। दोपहर के भोजन के बाद मिलते हैं और इस बारे में और बात करते हैं।"

कान्हा ने विवांत के साथ मिलकर सभी योगियों को भोजन परोसा और उनसे कहा कि उन्होंने इस विषय पर काफी शोध किया है। मुझे नहीं पता था कि आपको इन सबमें इतनी रुचि है।

उन्होंने कुछ और स्वयंसेवकों के साथ सभी योगियों को भोजन परोसा और फिर अपना भोजन करके उस हॉल में वापस चले गए जहां गुरुजी चुपचाप ध्यान कर रहे थे।

सबके वापस आकर बैठ जाने के बाद, गुरुजी ने ओम का जाप किया। सभी ने उनका अनुसरण किया और फिर गुरुजी ने सभी से शिष्टाचारपूर्वक बातचीत की।

तीसरे सत्र की शुरुआत करते हुए गुरुजी ने कहा, "यह एक प्रेरणादायक सत्र था। विवांत ने कुछ रोचक प्रश्न उठाए, जैसे सत्ययुग से पहले क्या हुआ था और हम उससे आगे के इतिहास के बारे में क्यों नहीं जानते?"

यह एक कड़वा सच है जिसे हम सभी को जानना चाहिए कि पृथ्वी पर जीवन ब्रह्मांड के जीवनकाल की तुलना में बहुत कम है। मनुष्य का जीवनकाल अधिकतम 100 वर्ष से अधिक नहीं होता है।

पृथ्वी के भूभाग पर जीवन हर 25,920 वर्षों के बाद समाप्त हो जाएगा। युग के इस एक चक्र को मन्वंतर कहा जाता है - जो मनु की एक पीढ़ी का जीवनकाल है, जिसे पश्चिम में आदम के नाम से जाना जाता है।

लेकिन पृथ्वी पर जीवन का अंत नहीं है। सरीसृप जैसी कहीं अधिक बुद्धिमान

प्रजातियाँ हैं, जिन्हें हम नाग कहते हैं, जो भूमिगत शहरों में रहते हैं, और जलमानव और जलपरियाँ, जिन्हें आप अपने पसंदीदा नायक एक्वामैन के नाम से जानते हैं, जो महासागरों में रहते हैं, आमतौर पर इन विनाशकारी घटनाओं से बच जाते हैं। नागों के अपने अद्भुत भूमिगत शहर हैं और वे उनमें रहते हैं क्योंकि वे जानते हैं कि हर 25,920 वर्षों में पृथ्वी पर जीवन लुप्त हो जाता है।

“यदि आपके कोई प्रश्न हों तो कृपया अभी पूछ लें, ताकि हम उन पर कल चर्चा कर सकें।” गुरुजी ने सभा में उपस्थित लोगों से कहा।

विवांत ने गुरुजी से पूछा, “लेकिन हमें यह कैसे पता चलेगा कि विलुप्ति का यह चक्र 25,920 वर्षों तक चलता रहता है?”

गुरुजी ने उत्तर दिया, “इस बारे में हम कल के सत्र में बात करेंगे। अब हम कुछ ध्यान और प्राणायाम करके सत्र समाप्त करते हैं।”

धिथी रिसर्च लैब्स

देवांत ने मेज पर सामान फेंक दिया, वह जानता था कि उसे अपने पिता का सामना खाली हाथ करना पड़ेगा, जो उसे कभी पसंद नहीं था। “तुम लोग सबसे बड़े नाकामयाब हो; मुझे नहीं पता कि मैं अब भी तुम लोगों को इतना काम क्यों सौंपता हूँ। तुम लोग छोटी-छोटी चाबियाँ भी नहीं ला सके और न ही उन बच्चों को ला सके जो हमारे इलाके में हैं। तुम लोग हारे हुए हो और मुझे भी वैसा ही बनाने की कोशिश कर रहे हो। मैं तुम्हें एक आखिरी मौका दे रहा हूँ कि जाओ और उन्हें ढूंढकर मेरे पास लाओ, वरना इस बार दूसरा मौका नहीं मिलेगा।”

श्री तारक निराश थे कि देवांत अपनी योजना को अंजाम नहीं दे सका और वे अभी भी उस गुप्त संदूक को खोलने के लिए आवश्यक पेंडेंट और कंगन हासिल नहीं कर पाए थे। तारक देवांत को एक और मौका देना चाहते थे ताकि उसकी क्षमता का पता चल सके।

श्री तारक केवल यह चाहते थे कि यह सही तरीके से खुले, वे इसे तोड़ना नहीं चाहते थे, भले ही देवांत इसे तोड़ने पर जोर दे रहा था।

“उस संदूक में ऐसा क्या महत्वपूर्ण था कि तारक उसे खोलने का जोखिम भी नहीं उठाना चाहता था?” देवांत हमेशा सोचता रहता था।

दोरजी और वांगमो को एक खबर मिली। “हमने उस जीप के बारे में पता किया है जिसने विवांत और सुखेशनी को बचाया था। हमें एक स्थानीय गैराज से जानकारी मिली है कि एक व्यक्ति आमतौर पर सप्ताह में एक बार जीप की जांच के लिए लाता है। गैराज वाले दावा ने कहा कि अगली बार जब वह जीप लेकर आएगा तो उन्हें फोन करेगा,” दोरजी ने अपने कार्यालय में देवांत को बताया।

“जाओ उसे पकड़ो और पता लगाओ कि वो बच्चे कहाँ हैं। उन्हें मेरे पास लाओ।” देवांत ने दोरजी और वांगमो पर गरजते हुए कहा।

कन्हैया को हाल की घटनाओं के संबंध में कुछ महत्वपूर्ण फोन करने थे। इसलिए, उन्होंने आश्रम से यह कहकर प्रस्थान किया कि वे रात तक लौट आएंगे।

कन्हैया ने गैराज वाले को फोन करके बताया कि वह वर्कशॉप में कुछ काम करवाने आ रहा है।

"वह आदमी कल अपनी जीप लेकर दुकान पर कुछ काम करवाने आएगा," दावा ने दोरजी को बताया।

दोरजी और वांगमो गैरेज की ओर दौड़े और कन्हैया का इंतजार करते हुए अंदर छिप गए।

कन्हैया गैराज में आया और उसने बाहर खड़ी जीप को पहचान लिया, यह उन्हीं दो अपराधियों की जीप थी जिन्हें उसने होटल के पार्किंग स्थल में देखा था।

कन्हैया ने तुरंत दोरजी की जीप में जीपीएस ट्रैकिंग डिवाइस लगा दिया और अपनी टीम को उसकी लोकेशन ट्रैक करने के लिए कहा।

कन्हैया जानता था कि गैराज के अंदर उसे कुछ रोमांचक घटनाओं का सामना करना पड़ेगा। वह एक कुशल आरAW एजेंट था और उसके पास कुछ बेहतरीन जासूसी

उपकरण थे।

जैसे ही वह अपनी जीप लेकर गैराज में दाखिल हुआ, दावा ने आकर उसका अभिवादन किया। "हेलो साहब, मुझे क्या काम करना है?"

कन्हैया ने गैराज के दरवाजे के पास दो लड़कों को देखा। दोरजी और वांगमो ने ताली बजाई।

"तो, आपको लगता है कि आप किसी तरह के सुपरहीरो हैं, जो आकर खतरे में पड़े किसी भी व्यक्ति को बचा सकते हैं?" डोरजी हंसते हुए बोले।

"अगर आपको अब भी शक है, तो आकर मुझे आजमाकर देखिए," कान्हा ने आमंत्रित किया।

वांगमो झपट्टा मारकर कान्हा पर झपटा, जिसने तुरंत अपनी कलम निकाली जो एक धारदार छोटी छुरी में बदल गई और उसने उसे वांगमो के पैर पर फेंक दिया। वांगमो गिर पड़ा और उसके पैर से बुरी तरह खून बहने लगा।

दोरजी ने हाथ में लोहे की छड़ लेकर कन्हैया पर हमला कर दिया। कन्हैया पीछे की ओर झुकते हुए पहले वार से बच गया, फिर तेज़ी से दाईं ओर लुढ़का और एक स्पैनर पकड़कर उसे सीधे दोरजी के हाथ पर निशाना बनाया, जिससे लोहे की छड़ ज़मीन पर गिर गई।

जब दोरजी लोहे की छड़ उठाने के लिए पीछे झुका, तो कन्हैया बाईं ओर लुढ़क गया और दोरजी के चेहरे पर ज़ोरदार लात मारी। फिर वह झट से उठा और दोरजी के चेहरे पर कोहनी से ज़ोरदार प्रहार किया। दोरजी का मुंह खून से भर गया और वह पीठ के बल ज़मीन पर गिर पड़ा।

चाकू लगने से वांगमो के दाहिने पैर से बहुत खून बह रहा था। कन्हैया उसके पास गया, उसका चाकू उठाया और उससे कहा कि वह अपने पैर का इलाज करवाए और अपने बॉस से कहे कि "उन बच्चों से दूर रहे।"

उसने दोरजी के हाथ बांध दिए और उसके मुंह में बेकार कपड़ा ठूंस दिया, उसे एक जीप में लादा और जीप को बारिश से बचाने वाले कवर से ढक दिया।

दावा इन सब से दूर रहा, उसे अपने गैराज में इस तरह के नाटक की उम्मीद नहीं थी। वह एक कोने में खड़ा रहा।

“वांगमो को अस्पताल ले जाओ और उसे उसके घर छोड़ दो,” कन्हैया ने दावा को निर्देश दिया।

कन्हैया दोरजी को आश्रम के पीछे एक गुप्त स्थान पर ले गया और उसे एक कुर्सी से बांध दिया और सेना के सिपाहियों को उसकी देखभाल करने के लिए कहा और आश्रम लौट आया।

जब कान्हा कमरे में दाखिल हुए, तो विवांत और सुखेष्णी सुहावने मौसम में शाम की कॉफी पीने के बाद बातें कर रहे थे।

कान्हा ने उनका अभिवादन किया और पूछा, “कुछ दिनों में आपके वापस जाने का इंतजाम हो जाएगा। लेकिन मुझे लगता है कि आपको गुरुजी के सत्रों में ज्यादा मजा आ रहा है, क्या मैं सही कह रहा हूँ विवांत?”

“जी हां, मुझे ये सत्र बहुत अच्छे लग रहे हैं। गुरुजी ज्ञानी हैं। ये मेरा सौभाग्य है कि मुझे इन सत्रों में शामिल होने का मौका मिला,” विवांत ने कृतज्ञता व्यक्त करते हुए कहा।

कन्हैया और भोजनालय में मौजूद अन्य स्वयंसेवकों ने विवांत और सुखेष्णी के साथ मिलकर व्यंजन परोसे। भोजन के बाद वे रात को सोने से पहले अपनी नियमित सैर पर निकल गए।

अगले दिन सुबह विवांत के जागने से पहले ही, कन्हैया उस गुप्त स्थान पर गया जहाँ उसने दोरजी को कैद कर रखा था और उससे धीथी रिसर्च लैब्स के रहस्यों और उनकी मंशाओं के बारे में जानने के लिए दबाव डालना शुरू कर दिया।

दोरजी एक जिद्दी इंसान था और उससे बात निकलवाना आसान नहीं था। वह श्री तारक का वफादार सेवक था।

कन्हैया ने अपने आदमियों को दोरजी के साथ विशेष व्यवहार करने का आदेश दिया ताकि वह अपना मुंह खोले और आश्रम लौट जाए।

विवांत और सुखेशनी उठे और योग सत्र के लिए तैयार हो गए। जब कन्हैया लौटा, तो विवांत ने पूछा, "तुम कहाँ थे?"

कन्हैया ने कहा, “कहीं नहीं, मैं किसी काम से बाहर गया था। अच्छी खबर यह है कि लखनऊ के लिए आपके परिवहन का इंतजाम हो गया है और आप लोग कल चेक पोस्ट के लिए निकल सकते हैं, जहां कर्नल वीरप्रताप सिंह ने अधिकारियों को भेजा है जो आपका स्वागत करेंगे और आपको वापस सिरखा शिविर और वहां से लखनऊ ले जाएंगे।”

विवांत और सुखेशनी को राहत तो मिली, लेकिन अपने पहने हुए पेंडेंट और ब्रेसलेट के महत्व को जानकर वे अभी भी बाहर जाने से डर रहे थे। कन्हैया ने उनसे पेंडेंट और ब्रेसलेट कर्नल वीरप्रताप सिंह को सौंपने को कहा।

सत्र का दूसरा दिन कुछ ही देर में शुरू होने वाला था। वे सभी हॉल में एकत्रित हो गए।

गुरुजी ने अपने भाषण के दूसरे दिन हॉल में उपस्थित सभी लोगों का अभिवादन किया। सभी ने गुरुजी के बाद ओम का जाप किया।

गुरुजी ने विवांत की ओर मुस्कुराते हुए बोलना शुरू किया और कहा, "कल हम यहां से विवांत के एक खुले प्रश्न के साथ रवाना हुए थे।"

हमें यह कैसे पता चलता है कि हर चीज़ 25,920 वर्षों में एक बार विलुप्त हो जाती है? मैंने कल समझाया था कि सूर्य और सीरियस एक द्विआधारी तारा प्रणाली में एक दूसरे के चारों ओर घूमते हैं।

प्रत्येक तारा 25,920 वर्षों के एक चक्र में दूसरे तारे की कक्षा को पार करता है। जब वे एक दूसरे के करीब आते हैं; चूंकि सूर्य सीरियस से छोटा है, इसलिए दोनों के अपने चुंबकीय क्षेत्र होते हैं।

हम जानते हैं कि हमारी पृथ्वी का भी एक चुंबकीय क्षेत्र है और यह उत्तर और दक्षिण में चुंबकीय ध्रुवों वाले एक छड़ चुंबक की तरह व्यवहार करती है। क्या होगा यदि ऐसा शक्तिशाली चुंबक एक छोटे चुंबक के चारों ओर अर्धवृत्त में घूमे? चुंबक घूमता है, और सौर मंडल में ध्रुवीकरण में परिवर्तन होता है।

इससे पृथ्वी पर ध्रुवीयता में पूर्ण परिवर्तन होता है, जिसके परिणामस्वरूप सुनामी, भूकंप, ज्वालामुखी आदि जैसी आपदाएँ आती हैं। इन आपदाओं ने पृथ्वी पर कई बस्तियों को नष्ट कर दिया। पृथ्वी के भूभाग का जीवनकाल अल्प होता है।

सरीसृप और समुद्री जीवों जैसी अधिक बुद्धिमान प्रजातियाँ ही ऐसी त्रासदियों से बच सकती हैं। उन्हें इन आपदाओं के होने का पहले से ही पता था और उन्होंने भूमिगत शहर बना लिए थे जो कहीं अधिक सुरक्षित हैं।

गुरुजी के इशारे पर विवांत ने बोलने की अनुमति देते हुए हाथ उठाए। विवांत ने पूछा, “लेकिन मानव जाति ऐसी आपदाओं या इतने बड़े पैमाने पर विनाश से कैसे बच रही है?”

“दुर्भाग्यवश, हमारे पास नहीं है!” गुरुजी ने उत्तर दिया।

“इनमें से प्रत्येक चक्र को एक मन्वंतर या मनु का एक चक्र कहा जाता है। हम सातवें मन्वंतर में जी रहे हैं। हमसे पहले पृथ्वी पर मनुष्यों की छह मन्वंतर या छह पीढ़ियाँ रह चुकी हैं। वैज्ञानिक भी यही कहते हैं। आप गूगल पर देख सकते हैं कि होमो सेपियंस 1,70,000 वर्ष पहले पृथ्वी पर प्रकट हुए और फैलना शुरू हुए। दोनों तिथियाँ बिल्कुल मेल खाती हैं - 25,920 को छह पीढ़ियों से गुणा करने पर 1,55,000 वर्ष आते हैं और इस मन्वंतर के 16,000 वर्ष 1,70,000 वर्ष होते हैं।”

इस पृथ्वी पर मानव जाति की कई प्रजातियां विलुप्त हो चुकी हैं। उन प्रजातियों में मानवीय बुद्धि, शारीरिक क्षमता और शक्ति की भिन्न-भिन्न विशेषताएं थीं।

कुछ शोधों के अनुसार, पिछली पीढ़ियों के मनुष्य कद में बड़े थे और उनके संवेदी अंग कहीं अधिक विकसित थे, और कुछ पीढ़ियों में विशालकाय लोग भी थे। और वे सभी पीढ़ियाँ विलुप्त हो चुकी हैं।

गुरुजी ने सभी के चेहरे देखे और उनमें से अधिकांश चिंतित दिख रहे थे।

गुरुजी मुस्कुराए और आगे बोले, “हमारे जीवित रहने का एकमात्र तरीका यही है कि हमारा भगवान हमें बचाए, है ना?”

हम मनुष्यों के बचने का एकमात्र तरीका यह है कि हम तब तक किसी सुरक्षित स्थान पर चले जाएं जब तक कि विनाश समाप्त न हो जाए और सब कुछ अपने नए चुंबकीय उत्तरी और दक्षिणी ध्रुवों के साथ स्थिर न हो जाए।"

सभी ने सहमति में सिर हिलाया। “तो चिंता मत करो, हमारे देवता आएंगे और हमें अपने लोक में एक सुरक्षित स्थान पर ले जाएंगे। पहला मन्वंतर 1,70,000 वर्ष पूर्व स्थापित हुआ था।”

स्वर्ग लोक सीरियस तारामंडल में स्थित है। स्वर्ग लोक एक ऐसा ग्रह है जहाँ असाधारण तकनीकें मौजूद हैं और एक उन्नत सभ्यता विद्यमान है जो मानव जाति को बचा सकती है और अपनी उन्नत तकनीकों के माध्यम से उन्हें विकसित होने में मदद कर सकती है।

केवल भूलोक ही नहीं, बल्कि हमारे सौर मंडल में एक और ग्रह है जिसे भुवरलोक कहा जाता है, जहाँ जीवन मौजूद है और यह इस सौर मंडल में हमारा पड़ोसी ग्रह है।

सत्ययुग में हमारी उल्लेखनीय प्रगति का एक मुख्य कारण यह है कि स्वर्गलोक हमारे निकट है। इसलिए, हम आसानी से वहां जा सकते हैं और उनकी तकनीकों को साझा कर सकते हैं। पृथ्वी पर उन्नत सभ्यताओं के सबसे प्राचीन अवशेष सत्ययुग से ही प्राप्त हुए हैं।

स्वर्गलोक के देवता हमें नए बुद्धिमान प्राणी के रूप में विकसित होने में मदद करेंगे और हमें सौर मंडल के रहने योग्य क्षेत्र में स्थित भूलोक और भुवरलोक में आकर बसने में

सहायता करेंगे।

मंगल ग्रह पर भी वायुमंडल था जो कई सहस्राब्दियों पहले नष्ट हो गया था। न केवल मनुष्य, बल्कि अधिकांश पशु प्रजातियाँ स्वर्गलोक पर ही विकसित हुईं।

इसलिए हमें चिंता करने की कोई आवश्यकता नहीं है, हमारे देवता हमारी रक्षा करेंगे। छठे मन्वंतर के अंत में महाविष्णु हमारे सभी कठिन समय में हमारे साथ रहेंगे और हमारी जान बचाएंगे। सातवें मन्वंतर में, जिसमें हम अभी जी रहे हैं, देवता आए और उन्होंने अधिकांश जानवरों को बचाया और स्वर्गलोक में कई प्रजातियों का विकास हुआ। कुछ प्रजातियों को भूलोक और कुछ को भुवर्लोक भेज दिया गया। गुरुजी ने सभा में मौजूद लोगों के भ्रमित चेहरों को देखते हुए अपना भाषण समाप्त किया।

गुरुजी द्वारा दिए गए विचार को दोहराते हुए, सभी लोग विस्मय से मुंह खोलकर एक पूर्ण 'ओ' का आकार बना रहे थे।

गुरुजी ने विवांत द्वारा उठाए गए दूसरे प्रश्न पर कहा, "हां, ये कैलेंडर और संख्याएं जिनका हम आज जिक्र करते हैं, ईसा पूर्व और हिंदू कैलेंडर पर आधारित हैं, जिनमें शालिवाहन आदि जैसे कुछ राजाओं का भी उल्लेख मिलता है।"

लेकिन क्या अगले 5,000 वर्षों में भी इन्हें उसी रूप में संदर्भित किया जाएगा क्योंकि यह कैलेंडर 2000 वर्षों से पहले अस्तित्व में नहीं था?

हमारे कैलेंडर कभी खगोलीय गणनाओं के आधार पर लिखे गए थे और राशि चक्र गणनाओं के हमारे संदर्भ सभी 12 नक्षत्रों के लिए मान्य हैं, अर्थात् रामायण और महाभारत के समय के कैलेंडर के 25,920 वर्ष।

प्रत्येक दिन को राशि चक्र के नक्षत्रों और तारों और ग्रहों की स्थिति के आधार पर आसानी से देखा जा सकता है।

इसी कारण भारतीय वेद अनुसंधान संस्थान रामायण और महाभारत की रचना तिथि का पता लगा सका, क्योंकि वे इसी शैली में लिखी गई थीं। और हमारी कुंडलियाँ भी इस तरह से लिखी गई हैं कि हम सभी सोचते हैं कि क्या ज्योतिष का कोई अर्थ है।

मैं अपनी युवा पीढ़ी से एक सवाल पूछूंगा - क्या आप अपने कृत्रिम बुद्धिमत्ता एल्गोरिदम द्वारा की गई भविष्यवाणियों पर विश्वास करते हैं?

सुखेशनी ने कहा, "हां, इन्हें बहुत सारे डेटा के साथ डिजाइन किया गया है और भविष्यवाणियां ऐतिहासिक डेटा पर आधारित हैं।"

गुरुजी ने कहा, “तुम सही कह रहे हो मेरे बच्चे, तुम लोग यह क्यों नहीं सोचते कि ज्योतिष लाखों लोगों की कुंडलियों के आधार पर लिखा गया है, जिसमें उनके जीवन के तरीके और खगोलीय तिथियों के अनुसार ग्रहों की किस स्थिति ने उनके जीवन में क्या भूमिका निभाई, यह सब शामिल है। लेकिन यह हजारों साल पहले लिखा गया था।”

इसके बारे में केवल कुछ ही लोगों को सही जानकारी है और इसका अधिकांश भाग गलत तरीके से व्याख्यायित किया जाता है क्योंकि हमारे जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले ग्रहों को हमारे दुर्भाग्य के लिए दोषी ठहराया जाता है और इससे बचने के प्रयास में पूजा-अर्चना की जाती है।

किसी भी चीज़ के हमेशा दो पहलू होते हैं; आपको इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि आप किसे सच मानते हैं।

मैं अपना भाषण समाप्त करना चाहता हूँ। यदि किसी के कोई प्रश्न हों तो आइए चर्चा करें, अन्यथा दोपहर के भोजन के बाद हम ध्यान करेंगे। चूंकि किसी के कोई प्रश्न नहीं थे, इसलिए वे दोपहर के भोजन के लिए चले गए।

अध्याय 3

एक नए महायुग की प्रस्तावना

12000 ईसा पूर्व

स्वर्ग

स्वर्ग लोक के राजा और शासक इंद्र ने मानवों और दानवों की नई पीढ़ी को क्रमशः भूलोक और भुवरलोक में सुरक्षित भेजने के संबंध में चर्चा करने के लिए महर्लोक के सभी महान ऋषियों और महर्षियों को आमंत्रित किया था।

इंद्र चाहते थे कि महर्षि उनकी यात्रा में उनका नेतृत्व करें और उन्हें तथा उनकी आने वाली पीढ़ियों को ज्ञान प्राप्त करने तथा आध्यात्मिक और तकनीकी रूप से विकसित होने में सहायता करें।

इंद्र ने सभा भवन में प्रवेश किया और सभी महर्षियों को नमस्कार किया।

हम सातवें मन्वंतर पर चर्चा करने के लिए सातवीं बार यहां एकत्रित हुए हैं। पिछले छह मन्वंतर पृथ्वी को मजबूत और सक्षम मानव पीढ़ियों के साथ पुनर्स्थापित करने में सफल रहे हैं, और यह हमारा उपहार रहा है, ताकि सौर मंडल के ध्रुवीय परिवर्तन चरण से गुजरते समय हम भूलोक और भुवरलोक की कई प्रजातियों को बचा सकें।

इसने हमें हर बार एक अनूठा अवसर दिया है कि हम मानवों और दानवों को अधिक ज्ञानवान और मजबूत अगली पीढ़ी के रूप में विकसित होने में मदद कर सकें।

"कश्यप ब्रह्मा के नेतृत्व में कई ऋषियों ने मानवों, दानवों और वानर, वराह, नरसिंह, गरुड़ आदि जैसे मानवरूपी प्राणियों की नई पीढ़ी को अधिक उन्नत, बुद्धिमान और शक्तिशाली प्रजातियों में विकसित करने में सफलता प्राप्त की है।" इंद्र ने सभा को संबोधित किया।

“मैं कश्यप ब्रह्माजी को नई पीढ़ी की प्रजातियों पर प्रकाश फैलाने के लिए आमंत्रित करता हूँ,” इंद्र ने कश्यप का स्वागत किया।

कश्यप ब्रह्मा मंच पर आए और सभी खड़े होकर उन्हें नमस्कार करने लगे। कश्यप सांवले रंग के, सुगठित शरीर वाले थे और हमेशा धोती एवं अंगवस्त्र धारण किए रहते थे। उनके लंबे काले बाल सिर पर एक जूड़े में बंधे थे और उनकी लंबी दाढ़ी गर्दन तक फैली हुई थी। उन्होंने अपनी पत्नियों अदिति और दिति को मंच पर बुलाया। उन्होंने सभी महर्षियों को नमस्कार किया और अदिति को आगे बढ़ने का इशारा किया।

"मनुओं की विकसित पीढ़ियाँ, अंतिम मनु के वंशज जो अपनी पीढ़ियों को आगे बढ़ाते हैं, उनमें वही गुण हैं लेकिन वे अब पिछले मन्वंतरों की तुलना में कहीं अधिक ज्ञानी प्राणी हैं।"

मेरा मानना है कि वे अन्य मानवाकार प्रजातियों के साथ पृथ्वी पर शांतिपूर्वक रह सकेंगे और पृथ्वी के पारिस्थितिकी तंत्र को नुकसान नहीं पहुंचाएंगे, बल्कि पृथ्वी पर शानदार शहर बना सकेंगे और भविष्य में अत्याधुनिक वैज्ञानिक प्रगति कर सकेंगे।" अदिति ने मानवों के बारे में बताते हुए सभा को संबोधित किया।

कश्यप ब्रह्माजी ने कहा, "अदितिजी और मैं मानवों की इस पीढ़ी का बारीकी से अवलोकन कर रहे हैं। वे अत्यंत आध्यात्मिक और बुद्धिमान प्राणी हैं। वे महाविष्णु के प्रति समर्पित हैं और पृथ्वी पर जीवन की प्रमुख प्रजाति के रूप में उभरेंगे।"

मेरा मानना है कि नाग और मत्स्य पृथ्वी पर वराह, वानर, नरसिंह, गरुड़ आदि जैसी अन्य मानवाकार प्रजातियों के साथ सह-अस्तित्व में रह सकते हैं। पृथ्वी पर मौजूद अन्य प्रजातियाँ मानवों की सहायता कर सकती हैं। मानवों का तकनीकी ज्ञान भूलोक को तकनीकी विकास में नई ऊँचाइयों तक पहुँचने में मदद करेगा।

Kashyapa invited Dhithiji to speak about Danavas.

"दानव अब पहले की पीढ़ी की तुलना में कहीं अधिक बलवान और सहनशील प्रजाति के रूप में विकसित हो चुके हैं और उन्हें भुवर्लोक की कुछ अधिक कठिन परिस्थितियों में जीवित रहने की आवश्यकता है। वे अपनी शारीरिक क्षमता के कारण अपनी हर इच्छा को सफलतापूर्वक पूरा कर सकेंगे।"

उन्हें किसी महान ऋषि से अच्छा मार्गदर्शन चाहिए और वे विश्व के सबसे महान शासक बन सकते हैं। मानवों की तुलना में उनकी आयु अधिक होती है।

अपनी असाधारण शक्ति के बल पर वे अनेक वास्तुशिल्पीय कृतियों का निर्माण कर सकते हैं। लेकिन उन्हें गलत हाथों में नहीं पड़ना चाहिए। इसलिए, मैं एक महान गुरु से निवेदन करता हूँ कि वे उन्हें सही मार्ग पर ले चलें।" धिति ने दानवों के बारे में बताते हुए सभा को संबोधित किया।

कश्यप ने कहा, "अब महर्षियों के हाथों में है कि वे मानवों और दानवों को उनके विकास के मार्ग पर अग्रसर करें।"

महर्षियों की ओर देखते हुए इंद्र ने कहा, “जैसा कि कश्यप ब्रह्माजी ने कहा था, हमें महान कार्य संपन्न करने में उनकी सहायता के लिए महर्षियों की आवश्यकता है।”

अब मैं यह निर्णय महर्षि भृगु पर छोड़ता हूँ और मुझे पता है कि उन्हें इस पर विचार करने के लिए कुछ समय चाहिए होगा। तब तक, मैं आप महर्षियों से अनुरोध करता हूँ कि आप हमारे आतिथ्य को स्वीकार करें।

महर्लोक

शुक्राचार्य युवा और प्रतिभाशाली थे; शास्त्रों में उनकी साख का कोई सानी नहीं था। अंगिरस ने उन्हें किसी और से कहीं अधिक ज्ञान दिया था, क्योंकि शुक्र अंगिरस द्वारा सिखाई गई हर बात को सहजता से ग्रहण कर लेते थे।

शुक्र का रंग गेहूँ जैसा था और वह अपने पिता से कद में छोटा था। अंगिरासा ने शुक्र के एक विशेष व्यवहार को देखा था, जिससे वह कभी-कभी चिंतित हो जाता था। शुक्र धूर्त था; वह किसी भी व्यक्ति या परिस्थिति को अपने पक्ष में मोड़ सकता था और इसके लिए किसी भी हद तक जा सकता था।

उसके कई सपने थे और वह महान ऊंचाइयों को छूना चाहता था। उसने अपने पिता से भुलोक में उपलब्ध संसाधनों के बारे में सुना था और यह भी कि कैसे वह उनका उपयोग आधुनिक हथियार बनाने और मनुकुला के राजाओं को स्वर्गलोक पर विजय प्राप्त करने के लिए प्रशिक्षित करने में कर सकता है और एक दिन वह अपना बदला ले सकता है।

उन्हें पता था कि उनके पिता जाना चाहेंगे, इसलिए उनके साथ जाने की संभावना थी। शुक्राचार्य इंद्र से एक कारण से घृणा करते थे। शुक्र और बृहस्पति महर्षि अंगिरस के अधीन महर्लोक में अध्ययन कर रहे थे।

दोनों ही बुद्धिमान थे, लेकिन शुक्र बृहस्पति से कहीं अधिक सक्षम थे और वे जानते थे

कि एक दिन उनमें से किसी एक को स्वर्गलोक में उच्च पुरोहित बनने के लिए भेजा जाएगा।

शुक्र अपने पिता भृगु की तरह ही प्रतिभाशाली और विलक्षण थे। वह दिन आ गया जब इंद्र स्वर्गलोक के लिए एक उच्च पुरोहित नियुक्त करने के लिए महर्लोक आए।

इंद्र को अंगिरासा महर्षि से कुछ कृपा की आवश्यकता थी। इसलिए, इंद्र ने सोचा कि यदि वे अपने पुत्र बृहस्पति को प्रधान पुरोहित नियुक्त कर दें तो अंगिरासा प्रसन्न होंगे और आवश्यकता पड़ने पर उनका पक्ष लेंगे। उन्होंने शुक्र की योग्यता को देखते हुए भी बृहस्पति को चुना।

अंगिरासा को पता था कि शुक्र प्रसन्न नहीं होंगे। लेकिन निर्णय लेना उनके हाथ में नहीं था।

“बालक, मैं जानता हूँ कि तुम एक प्रतिभाशाली ऋषि हो और एक दिन तुम अपनी महानता के शिखर पर पहुँचोगे। इस क्रोध को नकारात्मक रूप में मत बदलने देना; इसे हमेशा सकारात्मक दिशा में लगाना।” अंगिरासा ने शुक्र को सलाह दी।

शुक्र को लगा कि इंद्र और अंगिरास ने जरूर कोई राजनीतिक खेल खेला होगा और यह धारणा उनके मन में गहराई से बैठ गई थी।

शुक्र इंद्र से बदला लेने के दिन का बेसब्री से इंतजार कर रहा था। अंततः, वह दिन निकट आ रहा था। इंद्र ने अपने पिता महर्षि भृगु को मानवों और दानवों का नेतृत्व करने वाली सेना का चयन करने का कार्य सौंपा था, जो उन्हें भूलोक और भुवरलोक ले जाएगी।

स्वर्ग

कुछ समय बाद, सभी महर्षि सभा भवन में एकत्रित हुए।

महर्षि भृगु ने सभा को संबोधित करते हुए सभी का अभिवादन किया और कहा, "ब्रह्माजी का आशीर्वाद प्राप्त करने के कारण हम पर यह एक महान जिम्मेदारी सौंपी

गई है।"

हमने कुछ दिन पहले ब्रह्माजी के साथ इस विषय पर चर्चा की थी और यह निर्णय लिया था कि सप्तऋषियों का एक दल मानवों और दानवों के साथ जाएगा।

ये सप्तऋषि मानव और दानव दोनों के लिए आवश्यक सात विभिन्न प्रकार के ज्ञान हस्तांतरण के ध्वजवाहक होंगे।

अतः, मैं, भृगु, सप्तऋषियों के एक दल के साथ मानवों और राजा मनु के साथ भूलोक की यात्रा करूंगा और उनकी पूरी यात्रा के दौरान मानवों को ज्ञान प्रदान करूंगा।

और मैं अपने गौरव के साथ, शुक्र पर पूर्ण विश्वास रखते हुए, उन्हें सप्तऋषियों का नेतृत्व करने और भुवर्लोक में दानवों के समान ज्ञान का प्रसार करने के लिए नियुक्त करूंगा।

शुक्र को समझ नहीं आ रहा था कि वह क्या प्रतिक्रिया दे - इस बात से प्रसन्न हो कि उसके पिता को इतना विश्वास था कि उन्होंने उसे सप्तऋषियों का नेता बनाया और वह दानवों का नेतृत्व कर रहा था, या इस बात से दुखी हो कि उसे भूलोक जाने और अपने पिता द्वारा चुनी गई टीम का हिस्सा बनने का अवसर नहीं मिला, और वह जानता था कि सभी महान महर्षि उसके पिता के साथ जाएंगे।

एक तरह से शुक्र प्रसन्न था क्योंकि उसे सबसे शक्तिशाली लोगों का नेतृत्व करना था, जो भविष्य में विश्व के महानतम शासक बनने वाले थे। यदि वह अपने पास मौजूद तकनीकी ज्ञान से उन्हें अच्छी तरह प्रशिक्षित कर लेता, तो वह एक दिन आसानी से इंद्र को पराजित कर सकता था।

भृगु ने अपने सप्तऋषियों के दल के साथ उन्हें राजा मनु के नेतृत्व में मानवों की देखभाल करने और उन्हें कुछ दिनों में भूलोक जाने के लिए प्रशिक्षित करने का निर्देश दिया।

शुक्र अपने दल के साथ दानवों को प्रशिक्षण देने भी गए, जिनका नेतृत्व दानवों में

सबसे बलशाली भाई हिरण्यकशिपु और हिरण्याक्ष कर रहे थे। दानवों की शक्ति देखकर शुक्र प्रसन्न हुए और उन्होंने उन्हें भुवर्लोक की यात्रा के लिए तैयार किया।

अध्याय 4

विवांत के पिता

गुरु के प्रवचन के बाद, सभी इस बात को लेकर हैरान थे कि उनका अस्तित्व कैसे हुआ। बाद में, शाम को कान्हा ने विवांत और सुखेष्णी को तैयार होने का निर्देश दिया, क्योंकि उन्हें कल जाना था, और उन्होंने कर्नल वीरप्रताप सिंह से उनकी सुरक्षित यात्रा के बारे में बात कर ली थी।

Kanha left the ashram telling Vivaant and Sukheshni that he had some work.

विवांत हमेशा की तरह कन्हैया के काम के बारे में जानने के लिए उत्सुक था। इसलिए, वह चुपके से उसके पीछे-पीछे चला गया। आश्रम के पीछे एक रास्ता था जो एक छोटे से कमरे की ओर जाता था, जहाँ दो सैनिक पहरा दे रहे थे।

जब कन्हैया अंदर गया तो सबने उसे सलाम किया। विवांत दूर से देख रहा था। उसे पता चला कि यह कोई गुप्त स्थान है जहाँ कन्हैया धीथी रिसर्च लैब्स में अपने ऑपरेशन पर काम कर रहा है। विवांत खिड़की के पास वाले छोटे कमरे के पीछे चला गया।

विवांत ने देखा कि कोई कुर्सी से बंधा हुआ है और बुरी तरह से पीटा जा चुका है। कान्हा ने एक कुर्सी उठाई और बोला।

“डोरजी, मुझे न तो तुम्हारी ज़रूरत है और न ही तुम्हारी जान की। न तो यह मेरे लिए कीमती है और न ही तुम्हारे बॉस के लिए। तुम्हें पता है, अगर मैं अभी तुम्हें छोड़ भी दूं, तो तुम्हारा बॉस तुम्हें यह सोचकर मार डालेगा कि तुमने जानकारी लीक कर दी होगी। इसलिए, पिटने और अपनी जान और मेरी गोलियां बर्बाद करने के बजाय हमारे साथ

सहयोग करना बेहतर है।”

अगर आप सहयोग करेंगे, तो मैं आपको तिब्बत से आपकी मनचाही जगह तक सुरक्षित निकालने का वादा करता हूँ। मुझे पता है कि आप इतने सालों से अपने स्वामी के वफादार सेवक रहे हैं। आपको जो कुछ भी पता है, मुझे बता दीजिए और बात यहीं खत्म करते हैं।

दोरजी ने अपने खून से सने मुंह से कहा, "मैं कैसे यकीन कर सकता हूँ कि मुझे बख्श दिया जाएगा और सुरक्षित रूप से स्थानांतरित कर दिया जाएगा? मुझे किसी ऐसे व्यक्ति से बात करनी होगी जिसे मैं जानता हूँ।"

कान्हा मुस्कुराया और बोला, “यह मत सोचो कि मैं मूर्ख हूँ और तुम्हें किसी से बात करने दूँगा ताकि वो मेरा पता लगा सके। अब तुम्हारे पास मेरे शब्दों पर भरोसा करने या मरने के अलावा कोई चारा नहीं है। मुझे लगता है कि यही तुम्हारे लिए सबसे अच्छा विकल्प है, मानो या न मानो।”

खिड़की के बाहर से यह सब सुन रहे विवांत को उत्सुकता थी कि दोरजी क्या कहेंगे। दोरजी ने कान्हा के प्रस्ताव पर प्रतिक्रिया देना शुरू कर दिया।

“ठीक है, मुझे बस इतना ही पता है। मैं श्री तारक से बहुत कम मिला हूँ, लेकिन मैं देवांत सर के साथ काम करता हूँ। ऐसा लगता है कि उन्होंने पिछले बीस वर्षों से एक बूढ़े व्यक्ति को कैद कर रखा है।”

कुछ महीने पहले वे किसी तरह कैलाश पर्वत के पास कहीं छिपे खजाने के बक्से को हासिल करने में कामयाब हो गए थे।

हमें इसे ढूंढकर उसके पास लाने का काम सौंपा गया था। हमने सोचा था कि इसमें बहुत सारा सोना और हीरे होंगे, लेकिन हैरानी की बात यह थी कि यह भारी नहीं था, और यह किसी अजीब प्राचीन तरीके से बंद था जिसे हम खोल नहीं पाए।

हमने इसे तोड़ने का सोचा, लेकिन देवांत सर ने स्पष्ट निर्देश दिए थे कि इसे बहुत खोजबीन के बाद सावधानीपूर्वक खोला जाना चाहिए। हमें पता चला कि इसके लिए

कुछ खास तरह की चाबियों की ज़रूरत होती है, जो छोटी होती हैं और उन्हें डिब्बे में बने छेदों में डालना पड़ता है, तभी यह खुलता है।

श्री तारक को किसी तरह उस बूढ़े आदमी से चाबियों के बारे में पता चल गया। तारक साहब में लोगों से बिना किसी तनाव के बात निकलवाने की अद्भुत क्षमता है।

फिर हमें उन बच्चों से पेंडेंट और ब्रेसलेट लेने का निर्देश दिया गया। मुझे लगता है कि वही चाबियां हैं। हमने ज़ोर देकर कहा कि हम चाबियां बैंगलोर पहुंचने पर ले लेंगे।

श्री तारक ने हमें बाहर कोई जोखिम न लेने और ऐसी कोई स्थिति उत्पन्न न करने के लिए कहा, जहां हमें ज्यादा समर्थन न हो और हम तिब्बत में ही इन बच्चों को खत्म करना चाहते हों।

"शायद वह कभी नहीं चाहता था कि किसी को चाबियों के बारे में पता भी चले," दोरजी ने अपने मन में जो कुछ भी पता था, सब कुछ बड़बड़ा दिया।

यह खबर सुनकर विवांत चौंक गया। लेकिन उसे यह जानकर खुशी हुई कि बीस साल पहले बंदी बनाया गया एक बूढ़ा आदमी अभी भी जीवित है और पूरी संभावना है कि वह उसका अपहृत पिता ही हो। विवांत को एक कड़वी सच्चाई का एहसास हुआ कि बक्से का रहस्य खुल जाने के बाद उसे चैन से नहीं रहने दिया जाएगा।

धमाका! सैनिकों ने विवांत के सिर के पिछले हिस्से पर वार किया। सिपाही उसे उठाकर कमरे के अंदर ले गए।

सिपाहियों ने कन्हैया को बताया कि वह खिड़की के पीछे से बातचीत सुन रहा था।

“कोई बात नहीं, मैं उस लड़के को जानता हूँ। लड़के को आश्रम ले जाओ और उसे मेरे कमरे में आराम करने के लिए कहो,” कन्हैया ने सिपाहियों को निर्देश दिया।

कान्हा ने दोरजी को आश्वासन दिया कि यह सब खत्म होने के बाद उन्हें सुरक्षित रास्ता मिल जाएगा और सिपाहियों को खाना देने के लिए कहकर आश्रम में अपने कमरे में वापस चले गए।

कुछ देर बाद विवांत ने अपने कमरे में आंखें खोलीं और देखा कि कान्हा उसके सामने बैठा है।

कन्हैया ने उसे एक गिलास पानी देते हुए कहा, “तुमने जो भी सुना हो, मुझे परवाह नहीं, लेकिन अगर तुम्हारी जगह कोई और होता, तो अब तक मर चुका होता। मुझे नहीं पता कि मेरे पीछे-पीछे यहाँ आने से पहले तुम क्या सोच रहे थे और अब क्या सोच रहे हो, लेकिन यह तुम्हारी कल्पना से कहीं ज़्यादा खतरनाक है।”

आपकी जान जा सकती है और अगर आप यहाँ कुछ दिन भी रुके तो परिणाम अकल्पनीय होंगे। वे लोग बेहद गंभीर हैं; मैंने वर्षों से उन्हें देखा है।

श्री तारक के काफी प्रभावशाली संपर्क हैं और वह आप लोगों का सफाया कर सकते हैं और हम कुछ नहीं कर सकते क्योंकि यह हमारा मैदान ही नहीं है।

दोरजी से मैंने जितना सुना है, उसके अनुसार तारक आपके और सुखेष्णी के जीवन के लिए एक गंभीर खतरा है।

अगर चीनी सरकार को जरा भी पता चल जाए कि हमारा यहां एक गुप्त सैन्य अड्डा और कार्यस्थल है, तो वे इसी एक कारण से युद्ध छेड़ने के लिए तैयार हो जाएंगे।

देश के हित और आपकी सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए, बेहतर होगा कि आप आज शाम ही चले जाएं। मैंने सभी व्यवस्थाएं कर ली हैं और कृपया पेंडेंट और ब्रेसलेट कर्नल वीरप्रताप सिंह को सौंप दें।

कान्हा ने देखा कि विवांत की आँखों की सारी खुशी गायब हो रही है। तभी किसी ने दरवाजे पर दस्तक दी। जब कान्हा ने दरवाजा खोला तो सुखेष्णी कमरे में दाखिल हुई। उसने देखा कि विवांत के सिर पर चोट लगी है और उसने पूछा कि क्या हुआ। विवांत और कान्हा दोनों ने एक साथ जवाब दिया, "कुछ नहीं।"

“तो, आप दोनों ने सारा सामान पैक कर लिया है और तैयार हैं? आप दोनों को शाम तक आश्रम से निकल जाना चाहिए,” कान्हा ने मुस्कुराते हुए सुखेष्णी से पूछा।

विवांत ने हठपूर्वक स्वर में कहा, "मैं कहीं नहीं जा रहा हूँ।"

सुखेष्णी ने विवांत को हैरानी भरी नजरों से देखा, जो घटनाक्रम से अनभिज्ञ था, लेकिन कान्हा ने अपना संयम बनाए रखा और विवांत की ओर देखते हुए कहा, "देखो, मैं नहीं चाहता कि तुम लोग किसी मुसीबत में पड़ो। यह खतरनाक है।"

सुखेशनी ने गंभीर होकर पूछा, "दोस्तों, यह सब किस बारे में है?"

“लेकिन वो मेरे पापा हो सकते हैं!” विवांत ने कान्हा की तरफ देखते हुए कहा। सुखेशनी चौंक गई।

विवांत ने आगे कहा, “दो दशकों के बाद मुझे उनसे मिलने और बात करने का मौका मिला है। मुझे उन्हें बचाना है।”

मैं पिछले बीस सालों से हर दिन अपनी माँ को देखता आ रहा हूँ, उनके लौटने और उनसे बात करने का इंतज़ार करता रहा हूँ। मैं उन्हें अपनी माँ के पास ले जाना चाहता हूँ और यह एक बेटे का कर्तव्य है।

अगर तारक किसी तरह से उस बक्से को खोल देता है, तो वह मेरे पिता को जिंदा नहीं रहने देगा। वह इसलिए जिंदा हैं क्योंकि बक्सा अभी तक खोला नहीं गया है।

सुखेशनी यह सब सुनकर अभी भी सदमे में थी और उसे समझ नहीं आ रहा था कि उससे क्या छूट गया और यह सब कहाँ से आ रहा है। वह अपनी जिज्ञासा को रोक नहीं पाई और विवांत से पूछा, "तुम्हें कैसे पता कि तुम्हारे पापा ज़िंदा हैं?"

“मैंने कान्हा के बंदी हत्यारे से सुना, जो हमारे पीछे था। वे हमारे प्रायोजक, धिथी ग्रुप ऑफ कंपनीज के प्रमुख श्री तारक के लिए काम करते हैं।”

"वह हमें यहां इसलिए लाया है ताकि वह हमें खत्म कर सके और पेंडेंट और ब्रेसलेट हासिल कर सके जिससे वह एक गुप्त खजाने का बक्सा खोल सके और उसके बाद वह मेरे पिता को मार डालेगा," विवांत ने बताया।

“वह मेरे पिता का हत्यारा है; मुझे भी बदला लेना है।” वह कान्हा की ओर मुड़ी और

हठपूर्वक बोली, “मैं भी कहीं नहीं जा रही।”

“देखो दोस्तों, यह मेरे या तुम्हारे बारे में नहीं है। अब तक तारक को पता चल गया होता कि कोई तुम्हें वांगमो से बचा रहा है। उसके अच्छे संपर्क हैं।”

मुझे इस ऑपरेशन को बंद करने और इसे रोकने के स्पष्ट निर्देश मिले हैं। चीनी सेना अब हाई अलर्ट पर है। अगर तारक को कोई सुराग मिला, तो वह हमारे पीछे आएगा और हमें खत्म कर देगा। वह आसानी से चीनी सरकार को सूचित कर सकता है और भारतीय सरकार की ओर से हमें चीनी सेना के लिए खतरा बता सकता है।” कान्हा ने उन्हें समझाने की कोशिश की।

“ठीक है। आप यह ऑपरेशन बंद कर सकते हैं। मैं अकेला जाऊंगा और अपने पिता को तारक के चंगुल से वापस लाऊंगा। मुझे किसी और की जरूरत नहीं है।” विवांत ने कान्हा से बहस की।

“यह आपके बारे में नहीं है। यह राष्ट्र की सुरक्षा के लिए एक गंभीर खतरा है। अगर उन्हें पता चल गया कि आश्रम ने आपको शरण दी थी, तो पूरा आश्रम खतरे में पड़ जाएगा,” कान्हा ने तर्क दिया।

“तारक को हमारी, हमारे पेंडेंट और ब्रेसलेट की ज़रूरत है। इसीलिए उसने हमें स्पॉन्सर किया है। वह चीनी सरकार को सूचित करने और हमें पकड़ने के लिए कहने के बारे में सोचेगा भी नहीं। वह गुप्त खजाने को खतरे में नहीं डालेगा। जब तक वह उसे खोल नहीं लेता, तब तक वह कोई जोखिम भरा काम नहीं करेगा।” सुखेष्णी ने गरमागरम बहस में अपनी बात रखी।

“हाँ, सही है। जब तक चाबियाँ हमारे पास हैं, तब तक हमें फायदा है। चलो पहले उस पर हमला करके उसे चौंका देते हैं। उसे सोचने का समय नहीं देना चाहिए। प्लीज़, कान्हा, हमारी मदद करो और मुझे बताओ कि मेरे पिताजी को कहाँ बंदी बनाकर रखा गया है,” विवांत ने कान्हा को समझाने की कोशिश की।

कान्हा जानता था कि विवांत नहीं रुकेगा। आखिर वो उसका पिता था, कोई उसे रोक ही नहीं पाता। कान्हा ने आह भरी और उनकी तरफ देखा।

“मैं आज आधिकारिक तौर पर इस अभियान को बंद कर रहा हूँ। मैं आप दोनों को इसे अकेले संभालने नहीं दे सकता। यह राष्ट्र के लिए गंभीर खतरा है। इस कहानी को सुनने के बाद हमारी मदद करने वाला एकमात्र व्यक्ति कर्नल वीरप्रताप सिंह हो सकता है।”

मैं आप लोगों के साथ ही रहूंगा। लेकिन पहले हमें इस स्थिति से निपटने की योजना बनानी होगी। आप लोग आराम कीजिए। मैं कर्नल से बात करके थोड़ी देर में लौट आता हूं।” कान्हा ने उनकी ओर देखते हुए कहा।

धिथी रिसर्च लैब्स

तारक के लड़कों को आखिरकार वह व्यक्ति मिल गया जिसने वांगमो का सामना किया था और दोरजी एक भारतीय अधिकारी था।

श्री तारक ने कन्हैया को रोकने के लिए अपने सारे राजनीतिक प्रभाव का इस्तेमाल किया। उन्हें पता था कि उन बच्चों को बचाने के लिए वे अपनी सारी हदें पार कर सकते हैं।

उन्होंने भारतीय सरकार पर तिब्बती धरती पर रॉ के सभी ऑपरेशन बंद करने का दबाव डाला था। इसके बाद, भारतीय सरकार ने कन्हैया को अपने सभी ऑपरेशन बंद करने का नोटिस जारी किया था।

अपने दफ्तर में बैठे श्री तारक ने होंठ सिकोड़ते हुए देवांत से कहा, “मुझे नहीं लगता कि कोई भी अधिकारी हमारे और आश्रम में छिपे उन बच्चों के बीच आएगा। जाओ और उनका पेंडेंट और कंगन ले आओ और उन्हें खत्म कर दो। आखिरकार वो समय आ गया है जब हम देखेंगे कि सदियों से उस बक्से में क्या छिपा है।”

आश्रम

“आश्रम में रहना सुरक्षित नहीं है, तारक कभी भी अपने आदमियों को भेजकर आप लोगों को पकड़वा सकता है। आइए सब कुछ किसी सुरक्षित स्थान पर ले चलें।”

जंगल के अंदर कुछ किलोमीटर दूर एक सुरक्षित ठिकाना है जहाँ हम ठहर सकते हैं और आश्रम से हमारे एक करीबी सहयोगी के माध्यम से खाद्य सामग्री प्राप्त कर सकते हैं।

हम आश्रम को सूचित कर देंगे कि हम भारत के लिए रवाना हो गए हैं और ऐसी व्यवस्था करेंगे कि किसी सैन्य चौकी पर भी यही सूचना दोहराई जाए। इसके लिए हमें आपको पासपोर्ट के साथ कुछ लोगों को भेजना होगा ताकि सही ढंग से प्रविष्टि की जा सके और यह सुनिश्चित किया जा सके कि प्रवेश और निकास चौकियों पर इसे दर्ज किया जाए।" कन्हैया ने विवांत और सुखेष्णी को तुरंत व्यवस्था करने का निर्देश दिया और कर्नल से फोन पर बात की।

कन्हैया ने कर्नल को योजना समझाई, "सर, कृपया दो ऐसे लोगों का इंतजाम कीजिए जो विवांत और सुखेशनी से मिलते-जुलते हों ताकि उन्हें विवांत और सुखेशनी के पासपोर्ट के साथ चीनी सीमा से बाहर भारत वापस भेजा जा सके।"

कर्नल उन बच्चों की जान जोखिम में डालने की योजना से खुश नहीं थे, लेकिन वे उनकी भावनाओं को समझते और उनका सम्मान करते थे और उन्हें कन्हैया पर पूरा भरोसा था और उन्हें यकीन था कि वह उन्हें कुछ नहीं होने देगा।

देवंत ने अपने कुछ लोगों को आश्रम से विवांत और सुखेष्णी को लाने के लिए भेजा। लेकिन जब तक वे पहुँचे, उन्हें पता चला कि विवांत और सुखेष्णी सुबह-सुबह ही भारत जाने के लिए आश्रम छोड़ चुके थे। उन्हें पता था कि सीमा पार करने के बाद उन्हें पकड़ना असंभव होगा। वे उनकी तलाश में निकले, लेकिन वे उन्हें नहीं ढूंढ पाए।

कन्हैया ने विवांत और सुखेष्णी के हमशक्लों को पासपोर्ट दे दिए। उनके बाल और शरीर का गठन एक जैसा था; दोनों सेना से थे, विवांत और सुखेष्णी एथलीट थे, इसलिए उनका शरीर सेना के जवानों की तरह सुगठित था। उन्होंने अपने कपड़े और बैग लिए और भारत में प्रवेश का पास लेने के लिए चेकपोस्ट पर चले गए।

वांगमो और अन्य लोग चेकपॉइंट के पास तैनात थे। वांगमो ने उनके बैग और कपड़े पहचान लिए, लेकिन वे उनके पास जाने के लिए कुछ नहीं कर सके।

उन्होंने इस बारे में देवांत को सूचित किया। देवांत ने उनसे कहा कि कोई बात नहीं, और भारत पहुँचने पर वह किसी को पेंडेंट और ब्रेसलेट लाने के लिए भेज देंगे।

अध्याय 5

SHUKRA'S PLAN

स्वर्ग

इंद्र से बदला लेने की शुक्र की योजना में एक ही बाधा थी। वह दुनिया में केवल एक ही व्यक्ति से डरता था और वह था उसका पिता भृगु।

वह जानता था कि जब तक उसके पिता आसपास नहीं होंगे, तब तक वह अपनी किसी भी योजना को अंजाम नहीं दे पाएगा। वह जानता था कि वह सभी सप्तऋषियों को तो संभाल सकता है, लेकिन अपने पिता को नहीं। उसने उन्हें महार्लोक वापस भेजने की योजना बनाई।

जब सभी ऋषि एकत्रित हो गए, तो शुक्र ने कहा, "हे पिता, मुझे अत्यंत प्रसन्नता है कि आपने मुझे दानवों का नेतृत्व करने के लिए चुना है। परन्तु मेरी एकमात्र चिंता यह है कि इन ऋषियों को सप्तऋषियों के समान ज्ञान के सभी क्षेत्रों में महान ऋषि बनने के लिए कौन प्रशिक्षित करेगा।"

उन्हें महान महर्षि बनने का मार्गदर्शन कौन करेगा? मेरा मानना है कि महर्षि भृगु जैसे महान गुरु को भूलोक तक ही सीमित नहीं रहना चाहिए, बल्कि उन्हें सभी लोकों के लिए उपलब्ध होना चाहिए और चौदह लोकों के कल्याण के लिए काम करना चाहिए।

पहली बार, देवराज इंद्र समेत सभी देवताओं और ऋषियों ने शुक्र के ज्ञानवर्धक शब्दों पर सहमति जताई, लेकिन कोई भी उनके इरादे को नहीं जानता था। उनमें से किसी ने भी सपने में भी शुक्र के मन की बात नहीं सोची थी। इंद्र भृगु महर्षि से भयभीत भी थे। उन्होंने सोचा कि अगर भृगु वहां नहीं होते तो वे आसानी से भूलोक और भुवरलोक को अपने वश में कर लेते।

महर्षि भृगु भी इस बात से सहमत थे कि उनके लिए महर्लोक में रहना और अन्य ऋषियों को तैयार करना बुद्धिमानी होगी तथा उन्हें अपने पुत्र और अन्य ऋषियों पर पूरा भरोसा होना चाहिए।

सभी ने ब्रह्मा और महाविष्णु से प्रार्थना की कि वे आकर मानवों और दानवों को आशीर्वाद दें और उन्हें भूलोक और भुवर्लोक पहुंचने में सहायता करें।

ब्रह्मा और महाविष्णु ने सभी को आशीर्वाद दिया।

शुक्र जानता था कि अगर उसे ब्रह्मा से पुष्पक विमान मिल जाए तो यात्रा आसान हो जाएगी।

“हे महान ब्रह्मा, इस ब्रह्मांड के निर्माता, हमें आशीर्वाद दें और हमें भुवर लोक का मार्ग दिखाएँ,” शुक्र ने ब्रह्मा से प्रार्थना की।

ब्रह्मा ने विश्वकर्मा द्वारा निर्मित अपना पुष्पक विमान शुक्र को दिया। उन्होंने कहा, “यह आपको अल्प समय में सौर मंडल में कहीं भी ले जा सकता है और जहाँ भी आपको इसकी आवश्यकता हो, वहाँ उतर सकता है।” उन्होंने शुक्र को दानवों को भुवर्लोक ले जाने का निर्देश दिया। ब्रह्मा ने शुक्र को आशीर्वाद दिया।

शुक्र ने ब्रह्मा को बाध्य किया और हिरण्यकश्यप और हिरण्याक्ष और अन्य दानवों को भुवर्लोक ले गए।

“हे महाविष्णु और महान ब्रह्मा, हमें आशीर्वाद दें और हमें भूलोक का मार्ग दिखाएँ,” सप्तऋषियों ने ब्रह्मा और विष्णु से प्रार्थना की।

सप्तऋषियों ने अपनी चिंता व्यक्त करते हुए कहा, “पृथ्वी की तीन-चौथाई सतह जल से ढकी हुई है। हम ऋषियों के लिए भी अपने सामान्य विमान से भूलोक की सतह पर उतरना कठिन होगा। यह प्रलय के बाद का समय है और महासागर उग्र होंगे।”

पुष्पक विमान की तरह इस विमान में तकनीकी उन्नति नहीं थी, जो सवार के उतरने के लिए सुरक्षित स्थान मिलने तक आसानी से जमीन के ऊपर मंडरा सकता था।

“सप्तऋषियों, चिंता मत करो, मुझ पर विश्वास रखो, सब ठीक हो जाएगा। सागर पर उतरते ही मत्स्यों से तुम्हें सहायता मिलेगी,” विष्णु ने सप्तऋषियों और मनु को आशीर्वाद दिया।

सप्तऋषि, मानवों और शुक्र की टीम के साथ दानवों ने स्वर्गलोक से अपने-अपने ग्रहों के लिए प्रस्थान किया।

सप्तऋषि और मनु अपने विमान पर सवार होकर भूलोक की ओर चल पड़े। कुछ वर्षों की यात्रा के बाद, विमान दुर्घटनाग्रस्त होकर अरब सागर में जा गिरा। सागर उग्र था, और उसमें विमान को संभालना मुश्किल था। सागर का वातावरण अनुकूल नहीं था। समुद्री धाराओं के कारण विमान इधर-उधर लुढ़क रहा था।

मत्स्यराज मत्स्येंद्र आधे मनुष्य और आधे जलमानव थे। वे सातों महासागरों के राजा और शासक थे, जिनका रंग गोरा था, लंबे बाल थे और आधा शरीर नीले रंग की विशाल मछली जैसा था। उन्होंने अपनी आँखों के सामने सभी छह मन्वंतरों को फलते-फूलते और लुप्त होते देखा था। वे जानते थे कि यह जीवन और मृत्यु के चक्र का हिस्सा है। मत्स्यराज का यह कर्तव्य होता था कि वे भूमि पर रहने वाले प्राणियों की आवश्यकताओं की पूर्ति करके नए मन्वंतरों की शुरुआत में सहायता करें।

मत्स्येंद्र को पता था कि सप्तऋषियों के भूलोक पहुंचने का समय आ गया है। उन्होंने सातों सागरों के सभी राज्यों को आदेश दिया था कि वे उन्हें सप्तऋषियों के आगमन की सूचना दें।

मत्स्येंद्र को सूचना मिली कि एक विमान हिंद महासागर में दुर्घटनाग्रस्त हो गया है। मत्स्यराज अपने दल के साथ वहाँ गए और सप्तऋषियों और मनु को बचाया।

सप्तऋषियों और मनु ने उन्हें धन्यवाद दिया और उनके सामने नतमस्तक हुए। सप्तऋषियों ने उन्हें और उनके राज्य को आने वाले समय में समृद्धि का आशीर्वाद दिया।

मत्स्येंद्र ने कहा, “मुझे खुशी है कि मैं आपके इस नेक काम में सहायक हो सकूंगा। हमारे पास एक अत्याधुनिक पनडुब्बी है जो आपको सुरक्षित रूप से तट तक पहुंचा

देगी।”

“मानव जाति आपकी सहायता के लिए सदा ऋणी रहेगी। आप हमारे लिए महाविष्णु का ही रूप हैं, जो भूलोक पर मानव जाति के फलने-फूलने में सहायता और संरक्षण करते हैं।” मनु ने मत्स्येंद्र से आशीर्वाद लिया।

मानव और सप्तऋषि पनडुब्बी में सवार होकर जंबूद्वीप की ओर रवाना हुए।

नोट: सुमेरियन ग्रंथों में यह भी कहा गया है कि एक मछली-मानव ओएनेस सात ऋषियों को अपने साथ लेकर आया और महाप्रलय के दौरान उनका मार्गदर्शन किया, जैसा कि हिंदू साहित्य के मत्स्यपुराण में वर्णित है।

कुछ वर्षों के शासन के बाद, मनु ने जंबूद्वीप की पूरी भूमि को देखकर यह महसूस किया कि वहाँ धन-संपत्ति का अभाव है और मनुकुल की आवश्यकताएँ बहुत अधिक हैं। मनु ने महाविष्णु से प्रार्थना की कि वे उन्हें मनुकुल की सभी आवश्यकताओं को पूरा करने में सक्षम बनाएँ।

महाविष्णु उनके सामने प्रकट हुए और बोले, “मनु, मानवों को जिस चीज की आवश्यकता है, वह सब इस भूलोक में मौजूद है। तुम्हें कहीं और खोजने की जरूरत नहीं है।”

मनु अपनी राय पर अड़ा रहा, "लेकिन भूलोक पर वैसा धन-दौलत नहीं है जैसा मैंने सुना या सपने में देखा था।"

"धन और समृद्धि संतुष्टि प्राप्त करने का तरीका नहीं हैं, लेकिन यदि आप दृढ़ रहें, तो आपकी जरूरत की हर चीज मंदार पर्वत पर स्थित भूलोक में उपलब्ध है, जो अब समुद्र में डूबा हुआ है।"

"तुम कुरमाराज से प्रार्थना करो और कूर्मों की सहायता लो जो भूमिगत में मंदार पर्वत की खोज करेंगे और मनुकुल को संतुष्ट करने के लिए तुम्हें जो कुछ भी चाहिए वह दिलाएंगे," विष्णु ने मनु को आशीर्वाद दिया।

मनु ने कुरमाराज से प्रार्थना की कि वे उन्हें धन लाने में मदद करें और उन्हें मनुकुला की जरूरतों को पूरा करने में सक्षम बनाएं।

कुरमाराज उतने ही प्राचीन थे जितने कि स्वयं सागर। वे बुद्धिमान और सांसारिक सुख-सुविधाओं और धन-दौलत से विरक्त थे। वे मंदारा पर्वत के नीचे स्थित मंदारावती नामक भूमिगत नगर में संसार से एकांत में रहते थे। वे हमेशा जरूरतमंदों की सहायता करते थे।

कुर्मराज ने आकर पूछा, "मनु, क्या तुम इस सारी संपत्ति से मानवों की सभी जरूरतों को पूरा कर पाओगे? मैंने इस भूलोक पर मानवों की कई पीढ़ियाँ देखी हैं और मैं जानता हूँ कि इससे कुछ नहीं हो पाएगा।"

"जी हां, मैं मानवों की जरूरतों को पूरा करना चाहता हूं। कृपया समुद्र में डूबे हुए धन को धरती पर लाने में मेरी मदद करें," मनु ने कुरमाराज से विनती की।

कुर्मराज ने कहा, "धन सुख और समृद्धि नहीं लाता; सुख तो केवल क्षणिक होता है। मैं जानता हूँ कि मनुकुला को हमारे इस सुंदर भूलोक पर फलने-फूलने में क्या सहायक होगा।"

कुर्मराज समुद्र के भीतर गए और मनुकुला के लिए आवश्यक सभी रत्न और धन लेकर आए और उन्होंने कहा कि यह धन मनु को अपने राज्य को पूरी समृद्धि से स्थापित करने में मदद करेगा और उनके राज्य को एक समृद्ध भविष्य की ओर ले जाने में सहायक होगा।

कुरमाराज ने कल्पवृक्ष लाकर मनु को आशीर्वाद दिया और कहा कि इस कल्पवृक्ष से जो भी प्रार्थना करेगा, वह मंदारवती से प्राप्त होगी।

कुरमाराज ने कामधेनु दान में दी, जिससे मनु को भूमि जोतने और सरस्वती नदी के किनारे एक सभ्यता की शुरुआत करने में मदद मिली।

"यह कामधेनु माता हैं, जिन्होंने भूलोक पर मानव जाति की कई पीढ़ियों को फलने-फूलने में सहायता की है। कामधेनु और उनकी जैसी अन्य गायें खानाबदोशों और

शिकारी-संग्रहकर्ताओं को बसने और परिवार बसाने में मदद करेंगी। इससे मानवों को जीवन का एक नया तरीका अपनाने में सहायता मिलेगी।”

"कामधेनु जहां भी बसेगी, वहां से दूध देगी, इसका गोबर जमीन के लिए अच्छा उर्वरक होगा और इसके मूत्र का उपयोग उनकी बीमारियों के लिए एंटीबायोटिक के रूप में किया जा सकता है," कुरमराजा ने कहा।

यह सब सुनकर मनु को सौभाग्य प्राप्त हुआ और उन्होंने कूर्मराज को धन्यवाद देते हुए कहा, "मनुष्य सदा आपके ऋणी रहेंगे और आपकी पूजा करेंगे, हे मेरे स्वामी।"

कामधेनु ने मानवों को सरस्वती नदी के किनारे बसने और सभ्य जीवन शुरू करने में सहायता की। मानव कामधेनु को देवी के रूप में पूजते थे।

धन, कल्पवृक्ष और कामधेनु की सहायता से मनु ने नई सभ्यता का नेतृत्व किया और अपने साथी मानवों को समृद्ध और व्यवस्थित जीवन जीने में मदद की।

जैसे-जैसे वर्ष बीतते गए, मानवों की इच्छाएँ बढ़ती गईं। इच्छाएँ लोभ में परिवर्तित हो गईं। लोभ ने उनके सुखमय जीवन को दुखमय बना दिया। मनु अपने सभी लोगों की समस्याओं को सुलझाने और उन्हें संतुष्ट करने से तंग आ गया था।

कुछ वर्षों बाद मनु ने फिर महाविष्णु से प्रार्थना की। जब महाविष्णु मनु के सामने प्रकट हुए, तो उन्होंने पूछा, “इतने प्रयास करने के बाद भी और सब कुछ होने के बावजूद मैं मानवों की सभी इच्छाओं को पूरा नहीं कर सकता। मुझे क्या करना चाहिए? कृपया मुझे सलाह दें कि मैं मानवों की सभी इच्छाओं को कैसे संतुष्ट करूँ?”

महाविष्णु मुस्कुराए और उत्तर दिया, "पर जब कूर्मराज ने पूछा कि क्या तुम सभी आवश्यकताओं को पूरा कर पाओगे, तो तुमने कहा था, हाँ।"

मनु ने सिर झुकाकर क्षमा मांगी। “हे प्रभु, मैं एक बच्चे की तरह अज्ञानी हूँ, मुझे क्षमा करें। मैं एक मूर्ख था जिसने सोचा कि धन से मानवों की इच्छाएँ पूरी हो सकती हैं।”

"समुद्र का मंथन करके सारी दौलत हासिल करने के बजाय, मनुष्यों को अपने भीतर

की मानस का मंथन करना चाहिए ताकि उन्हें जवाब मिल सकें और वे यह जान सकें कि उनके पास पहले से ही वह सब कुछ है जिसकी उन्हें ज़रूरत है। इच्छाएँ कभी खत्म नहीं होतीं। इसका मतलब यह नहीं है कि इच्छाएँ बुरी होती हैं। इच्छा ही मनुष्य को महान कार्य करने के लिए प्रेरित करती है। अगर यह लालच में बदल जाए, तो सब कुछ बर्बाद हो जाएगा।"

“स्वमन्थना आत्म-साक्षात्कार के लिए सबसे महत्वपूर्ण है, जिससे मनुष्य अपनी इच्छाओं के प्रति सचेत रूप से प्रतिक्रिया करना सीख सकें। अपनी आवश्यकताओं को प्राप्त करने के अनेक तरीके होंगे, लेकिन उन्हें सचेत रूप से सही मार्ग चुनना चाहिए, भले ही गलत मार्ग छोटा और आसान हो। यह तुम्हारा कर्तव्य है कि तुम मनुष्यों को इसका उपदेश दो,” महाविष्णु ने मनु को सलाह दी।

मनु ने महाविष्णु को प्रणाम किया और यह महसूस किया कि कोई भी धन मानवों की इच्छाओं को समाप्त नहीं कर सकता है और उन्होंने महाविष्णु से वादा किया कि वे मानवों को आत्म-साक्षात्कार के मार्ग पर उपदेश देने और उनका मार्गदर्शन करने का प्रयास करेंगे।

गुप्त सेना चौकी

विवांत और सुखेशनी कान्हा के साथ बैठे और कर्नल से खबर का इंतजार करने लगे कि उनके भेष बदलकर भारत में प्रवेश कर चुके हैं। कान्हा बाहर गए और कर्नल का फोन आया, जिन्होंने खुशी-खुशी कान्हा को बताया कि उनकी योजना सफल हो गई है।

विवांत तारक के चंगुल से अपने पिता को बचाने के लिए बेताब था। जिस व्यक्ति से उसने जीवन भर नफरत की थी, वही अब उसका मिशन था, लेकिन उसे यह नहीं पता था कि अपने पिता को खोजने के लिए उसे क्या करना चाहिए और कहाँ जाना चाहिए।

विवांत श्री कृष्ण की तस्वीर के पास गया और प्रार्थना करने लगा, “हे भगवान, कृपया मुझे मेरे पिता को ढूंढने और उन्हें बचाने का मार्ग दिखाएँ। कृपया इस बार मेरी मदद

करें, मैं जीवन में फिर कभी कुछ नहीं माँगूँगा। मुझे अपनी माँ के चेहरे पर मुस्कान वापस लानी है, यही मेरे जीवन की एकमात्र इच्छा है।”

विवांत ने कान्हा की ओर देखकर कहा, “कान्हा, तुमने मेरी मदद करने के लिए हाँ कह दी है। चलो, तारक को पकड़ते हैं और मेरे पिता को उस नरक से बाहर निकालते हैं।”

कान्हा ने कहा, “ईश्वर से मदद मांगना, इस तरह की परिस्थिति पर प्रतिक्रिया देना मनुष्य की स्वाभाविक प्रवृत्ति है। मैं आपको मनुष्यों और उनकी इच्छाओं के बारे में एक कहानी सुनाऊंगा, फिर आप तय करें कि सही क्या है।”

कान्हा ने कूर्म अवतार की कथा सुनाई और उनसे कहा कि जब हमारे पास सब कुछ मौजूद है, तो हमें हमेशा भगवान से उत्तर नहीं माँगने चाहिए, वे अपना रास्ता खुद खोज लेंगे। हमें हमेशा अपनी अंतरात्मा की इच्छाओं के प्रति सचेत रहना चाहिए और कोई भी शॉर्टकट नहीं अपनाना चाहिए।

कान्हा ने विस्तार से बताया, "आइए अब हमारे पास मौजूद आंकड़ों का विश्लेषण करें।" सभी ने अपने-अपने ज्ञान के आधार पर बताना शुरू किया।

सुखेशनी ने बात शुरू करते हुए कहा, “विश्वनाथ चाचा और पिताजी कैलाश पर्वत के पास किसी चीज की खोज में गए हैं। इसलिए, कैलाश पर्वत के पास कुछ सुराग मिल सकते हैं।”

विवांत ने कहा, “धिथी रिसर्च लैब्स स्पष्ट रूप से इसमें शामिल है। हम उनके कर्मचारियों पर नज़र रख सकते हैं और उनसे जानकारी निकालने की कोशिश कर सकते हैं।”

कान्हा ने जवाब दिया, "हां, हम वांगमो और तारक के कुछ लड़कों की दैनिक दिनचर्या पर नज़र रख सकते हैं, ताकि हमें इस बारे में कुछ जानकारी मिल सके कि उन्होंने विश्वनाथ सर को कहां छिपा रखा है।"

“मेरा एक बहुत अच्छा दोस्त है, एक तिब्बती विशेष अधिकारी जो कैलाश पर्वत जैसे स्थानों की रक्षा करने वाले गुप्त बल का हिस्सा है। उसका नाम ल्हावांग है।”

"शायद वही इस काम के लिए सही व्यक्ति हो और विश्वनाथ सर को ढूंढने में हमारी मदद कर सके। यह हमारे लिए जोखिम भरा हो सकता है; क्योंकि चीनी पुलिस यह सत्यापित करेगी कि मैंने अपना अभियान बंद कर दिया है और भारत वापस आ गया हूँ।" कान्हा ने विवांत और सुखेष्णी से कहा।

अध्याय 6

अवतारों

मनु ने कल्पवृक्ष के आशीर्वाद से भूलोक को हरियाली से भर दिया और कामधेनु की सहायता से नदियों के किनारे स्थित भरत कांड की भूमि को उपजाऊ बनाया। मनु ने भूलोक पर रहने वाली अन्य सभी प्रजातियों को सुखी जीवन जीने में सहायता की।

भुवर्लोक में शुक्र को भूलोक की महिमा और सुंदरता तथा महाविष्णु द्वारा मानवों को दी गई सभी सहायता का समाचार मिला। शुक्र को यह आभास हुआ कि देवताओं ने एक पक्ष चुनकर उनके साथ विश्वासघात किया है और दानवों को कुछ भी नहीं दिया है।

शुक्र ने हिरण्याक्ष और हिरण्यकशिपु को इन शब्दों से भर दिया और वे भी ईर्ष्या की आग में जल रहे थे।

शुक्र ने उन्हें ब्रह्मा की तपस्या करके शक्ति प्राप्त करने का मार्गदर्शन दिया ताकि वे अमर हो सकें और स्वर्गलोक और भूलोक पर नियंत्रण कर सकें।

हिरण्याक्ष कई वर्षों तक एक पैर पर खड़े होकर ब्रह्मा की तपस्या करने गया। भारी बारिश, गरज, सूर्य की भीषण गर्मी और चक्रवात भी उसे रोक नहीं पाए। दानवों में सबसे शक्तिशाली हिरण्याक्ष की क्षमता की पूरी परीक्षा हुई और अंततः वह ब्रह्मा को प्रसन्न करने में सफल रहा।

ब्रह्मा उसके सामने प्रकट हुए और बोले, “पुत्र, उठो, अपनी इच्छा बताओ, मैं उसे पूरा करने के लिए यहाँ आया हूँ।”

“ब्रह्माजी, मुझे बुलाने के लिए धन्यवाद। कृपया मुझे अमरता का वरदान प्रदान करें,” हिरण्याक्ष ने निवेदन किया।

“मेरे बच्चे, मैं यह किसी को नहीं दे सकता। हर रचना का अंत निश्चित है और वह विनाश की ओर ही ले जाएगी। कृपया इसके अलावा कुछ और मांगो।” ब्रह्मा ने उससे कहा।

Hiranyaksha thought that the only thing that could kill him was Indra’s Vajrayudha, Shiva’s Trishul and Vishnu’s Sudarshana Chakra.

“पूरे ब्रह्मांड में किसी भी शस्त्र या अस्त्र से मेरी मृत्यु नहीं होनी चाहिए,” हिरण्याक्ष ने कहा।

“मैं, ब्रह्मा, तुम्हें आशीर्वाद देता हूँ कि तुम्हारी मृत्यु किसी भी शस्त्र या अस्त्र से नहीं होगी,” ब्रह्मा ने कहा।

प्रसन्न होकर हिरण्यक्ष वापस आया और शुक्र के सामने हिरण्यकशिपु से बोला, “मैं इस संसार में किसी को भी परास्त करने के लिए तैयार हूँ। कृपया मुझे आशीर्वाद दीजिए कि मैं जाकर भूलोक और स्वर्गलोक पर विजय प्राप्त कर आपको तीनों लोकों का राजा बनाऊँ।”

जब हिरण्याक्ष ब्रह्मा की गहरी तपस्या में लीन था, तब भूलोक पर कई वर्ष बीत गए और यह अनेक वनस्पतियों और जीवों की प्रजातियों का घर बन गया तथा वानर, नरसिंह, वराह, मानव और कई अन्य प्रजातियों जैसे अधिकांश पशु और मानवाकार जीव स्वर्गलोक से आकर भरत कांड या जंबूद्वीप पर शांतिपूर्वक रहने लगे।

नोट: अन्य महाद्वीपों में कई अन्य मानवाकार प्रजातियाँ भी रही होंगी जिनका उल्लेख कई मिस्र के पिरामिडों की दीवारों पर लिखे शिलालेखों में मिलता है।

प्रत्येक प्रजाति का कुछ क्षेत्रों पर शासन था और कई कुलों के कई राजकुमार सप्तऋषि आश्रमों में अध्ययन करने आते थे।

अगस्त्य आश्रम

भारत खंड में, अगस्त्य मुनि का गुरुकुल प्रसिद्ध गुरुकुलों में से एक था। वे राजकुमारों को युद्धकला और शस्त्र विद्या सिखाते थे, जबकि उनके आश्रम में अन्य ऋषि वेद, उपवेद और वेदांग जैसे शेष विषयों की शिक्षा देते थे।

अगस्त्य मुनि के साहसी और बुद्धिमान शिष्यों में से एक वराह भूधर था। भूधर का रंग गहरा और त्वचा कठोर थी, उसकी सूंड नुकीली थी और उसका धड़ मांसल था, जिसके हाथों में सौ हाथियों के बराबर ताकत थी।

वह बलवान था, पर हृदय से बच्चा था, बाहरी दुनिया के बारे में हमेशा जिज्ञासु रहता था। वह बच्चों के साथ खेलता था और उनकी संगति का आनंद लेता था। वह बच्चों को अपने दांत पकड़ने और खेलने के लिए देता था।

अगस्त्य मुनि और अन्य सभी ने भूलोक के रक्षक महाविष्णु की पूजा की। उन्होंने उन्हें मत्स्य और कूर्म अवतारों की कथाएँ सुनाईं और बताया कि भूलोक में किसी भी समय कोई भी समस्या उत्पन्न होने पर महाविष्णु किसी न किसी रूप में आकर उनकी रक्षा करेंगे।

“यदि महाविष्णु सब कुछ जानते हैं और हमारे भूलोक की रक्षा करना चाहते हैं, तो क्या वे भूलोक को कोई नुकसान पहुंचाने से पहले उसे रोकेंगे भी नहीं?” बुधरा ने पूछा।

अगस्त्य मुनि मुस्कुराए और उन्हें कर्म का सिद्धांत समझाया। “वत्स, कर्म करने से पहले किसी को उसका कर्मफल कैसे मिल सकता है? कर्म अच्छा हो या बुरा, हर किसी को अपने कर्मों का फल मिलता है। अपराध करने वाले को दंड मिलेगा, लेकिन सिर्फ इसलिए कि कोई भविष्य में अपराध करे या न करे, उसे अपना काम करने से नहीं रोका जा सकता।”

अन्यथा, हर किसी को कभी न कभी कैदी बनना पड़ेगा। हर किसी में अपराध करने की क्षमता होती है।

बुधरा ने मुस्कुराते हुए सिर हिलाया और पूछा, "महाविष्णु ठीक समय पर आकर भूलोक को किसी भी प्रकार की हानि पहुँचाने से कैसे रोकेंगे?"

“महाविष्णु किसी न किसी रूप में सदा हमारे साथ रहेंगे। वे हममें से प्रत्येक में, यहाँ तक कि आप में भी जीवित हैं। समय आने पर वे स्वयं कार्य करेंगे,” अगस्त्य मुनि ने बुधरा के प्रश्न का उत्तर दिया।

कुमारी कांडा पर हमला

हिरण्याक्ष ने अपने भाई और गुरु शुक्र के आशीर्वाद से पुष्पक विमान पर सवार होकर भूलोक की यात्रा की। उसने कुमारी कांड के सुंदर महाद्वीप को निहारा। उसके दुष्ट मन में इसे नष्ट करने की इच्छा जागृत हुई। अब उसे मृत्यु का भय नहीं था। उसे ऐसा प्रतीत हुआ जैसे वह अमर हो गया हो।

पुष्पक विमान में विराजमान हिरण्याक्ष कुमारी कांड के ऊपर मंडरा रहा था। उसने अपनी गदा उठाई और कुमारी कांड के केंद्र में अत्यंत बलपूर्वक प्रहार किया। प्रहार इतना जोरदार था कि मानो परमाणु विस्फोट हुआ हो। भूमंडल कांपने लगा। एक ऐसा भीषण भूकंप आया जो पहले कभी महसूस नहीं किया गया था। हिरण्याक्ष ने बार-बार भूमि पर प्रहार करके भूलोक में तबाही मचा दी और अपनी गदा को समुद्र की गहराई में समुद्र तल तक पहुंचा दिया।

भूलोक कांपने लगा और समुद्र तल ने अपना मुँह खोलकर ऊपर की भूमि को निगलना शुरू कर दिया। कुमारी कांड डूबने लगा। भारत कांड में भयंकर सुनामी आई और सभी भूमिगत शहर हिल गए। कोई भी इसके लिए तैयार नहीं था, भूमि पर शासन करने वाले राजाओं ने विमानों और जहाजों से लोगों को निकालने का प्रयास किया, लेकिन वे केवल कुछ ही लोगों को बचा सके।

भूमिगत नगरों में दहशत फैल गई और मत्स्य और नागों को हिरण्याक्ष के बारे में पता चल गया और उन्होंने उस पर हमला करना शुरू कर दिया। अगस्त्य ने अपने सभी शिष्यों को संकट में फंसे लोगों की रक्षा के लिए भेजा और उन्होंने बुधरा के नेतृत्व में अपने वीर योद्धाओं के समूह को निर्देश दिया। अगस्त्य मुनि ने बुधरा को बताया, “यह

कुमारी कांड पर भारी प्रभाव डालने वाली किसी चीज के कारण हुआ है, समुद्र तट पर जाओ और नागों के राजा वासुकी से प्रार्थना करो। मत्स्य और नाग आपस में लड़ रहे होंगे, जाओ और उनकी मदद करो।"

बुधर अभी भी इस बात की प्रतीक्षा कर रहे थे कि महाविष्णु कब प्रकट होकर उन्हें बचाएंगे। वे समुद्र तट पर गए और वासुकी से प्रार्थना की। बुधर की प्रार्थना से प्रसन्न होकर वासुकी समुद्र से बाहर आए। बुधर को देखकर वे समझ गए कि वे कोई साधारण वराह नहीं बल्कि विष्णु के अवतार हैं।

वासुकी ने अपने सात फनों के ऊपर भूधर को बिठाया और उस समुद्र के मध्य में गए जहाँ हिरण्याक्ष उत्पात मचा रहा था।

भूधर ने अपने शस्त्र-ज्ञान का पूरा प्रयोग किया, अनेक मंत्रों का जाप किया और शक्तिशाली बाणों से हिरण्याक्ष को मार गिराने का प्रयास किया। हिरण्याक्ष वहीं खड़ा भूधर पर दुष्टतापूर्वक हँस रहा था। भूधर ने अपने गदा से उस पर प्रहार करने का प्रयास किया, लेकिन हिरण्याक्ष ने वार सह लिए और संसार को अपनी सामर्थ्य का परिचय दिया।

वासुकी ने भूधर से कहा, "मैंने सुना है कि उसे ब्रह्मा से यह वरदान प्राप्त है कि कोई भी अस्त्र या शस्त्र उसे मार नहीं सकता।"

"मुझे पता है, वह अपनी ताकत का प्रदर्शन करना चाहता है, वह मूर्ख है, और उसे यह नहीं पता कि इन हमलों को सहन करने से वह कमजोर होता जा रहा है," भुधरा ने वासुकी से कहा।

अंततः भूधर ने उसे द्वंद्वयुद्ध के लिए चुनौती दी। हिरण्याक्ष बलवान था, लेकिन भूधर के पहले के हमलों से वह दुर्बल हो चुका था। फिर भी हिरण्याक्ष भूधर को दो बार पराजित करने में सक्षम रहा। अगली बार जब भूधर को नीचे गिराया गया, तो वह स्वेच्छा से नीचे गिरा और अपनी नुकीली सूंडों से हिरण्याक्ष की छाती पर प्रहार किया। भूधर ने उसे अपनी सूंडों से उठाकर दूर फेंक दिया, जिससे उसकी मृत्यु हो गई।

वासुकी ने हाथ झुकाकर वराह स्तुति का गायन किया और उन्हें महाविष्णु के अवतार

होने की उनकी वास्तविक क्षमता का एहसास कराया।

भूधरा महाविष्णु के विराट रूप में वराह अवतार में प्रकट हुए और सभी को आशीर्वाद दिया।

सुनामी और भूकंप शांत हो गए, लेकिन संगम संस्कृति वाला पूरा महाद्वीप समुद्र की गहराइयों में समा गया। इस प्रकार, कुमारी कांड के अंत तक सत्ययुग का पतन शुरू हो गया।

नोट: यह घटना लगभग 10000 ईसा पूर्व यानी 12000 वर्ष पूर्व घटी थी, महाभारत और रामायण के घटित होने से बहुत पहले। संगम साहित्य के लगभग न के बराबर ही अवशेष बचे हैं।

18वीं शताब्दी में, एक यूरोपीय वैज्ञानिक ने काल्पनिक लेमुरिया महाद्वीप की खोज की, जो संभवतः हिंद महासागर या प्रशांत महासागर में डूबा हुआ था।

गुप्त सेना शिविर

कान्हा ने धिथी रिसर्च लैब्स की जांच को संभालने के विचार का जिक्र चीनी विशेष अधिकारी ल्हावांग के सामने किया।

विवांत ने इस मामले की जिम्मेदारी चीनियों को सौंपे जाने पर अपनी नापसंदगी जाहिर की, जबकि वे इसे स्वयं संभाल सकते थे। तारक आसानी से चीनी सरकार के किसी भी अधिकारी को प्रभावित कर सकता था और वह इस मामले को स्वयं संभालना चाहता था।

“वे चीनी सरकार के लिए काम नहीं करते हैं। वे विशेष अधिकारी हैं जो रहस्यमय स्थानों की देखभाल करते हैं जिनमें कुछ रहस्य छिपे हो सकते हैं और उनकी रक्षा करते हैं।”

इसलिए चिंता करने की कोई जरूरत नहीं है। तारक उसे उस तरह प्रभावित नहीं कर सकता जैसा आप सोचते हैं,” कान्हा ने कहा।

विवांत ने जवाब दिया, "लेकिन, हम इसे खुद संभाल सकते हैं।"

कान्हा ने उत्तर दिया, "नहीं, हम जोखिम नहीं उठा सकते और वह जानता होगा कि शोध की जांच कैसे करनी है और कैलाश पर्वत के पास उन्हें क्या-क्या पता चला है।"

तारक के बारे में कुछ महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त करने के लिए, बिना कोई जोखिम उठाए, वही हमारी एकमात्र उम्मीद है।"

“लेकिन हम क्या करेंगे?” विवांत ने सवाल किया। “हम यहाँ यूँ ही बैठे-बैठे यह उम्मीद नहीं कर सकते कि कोई हमारे लिए काम कर देगा।”

कान्हा मुस्कुराया, वह जानता था कि अपने पैरों पर खड़े बेटे को अपने पिता को वापस लाने के लिए मनाना आसान नहीं था।

“विवांत, तुमने पौराणिक कथाओं का बहुत अध्ययन किया है। तो मुझे बताओ कि विष्णु ने स्वयं हिरण्याक्ष का वध क्यों नहीं किया, बल्कि वराह अवतार क्यों लिया?”

“ऐसा इसलिए हुआ क्योंकि हिरण्याक्ष को वरदान प्राप्त था कि उसे किसी भी हथियार से मारा नहीं जा सकता था। इसलिए उसने वराह का रूप धारण किया और अपने दांतों से उसका वध कर दिया।” विवांत ने पौराणिक कथाओं के अपने ज्ञान को ताज़ा करते हुए कहा।

कान्हा ने कहा, “बिल्कुल सही! हर काम में विशेषज्ञता होनी चाहिए। हर कोई सब कुछ नहीं कर सकता। इसलिए, हमें अधिकारी ल्हावांग के वापस आने तक इंतजार करना होगा। मुझे कुछ काम है; मैं बाहर जा रहा हूँ, आप लोग आराम करें या कुछ योजना बनाएँ, लेकिन किसी मुसीबत में मत पड़ना, बाहर सुरक्षित नहीं है।”

“विवांत, चिंता मत करो, हम चाचा को बचा लेंगे। मैं तुम्हारे साथ हूँ। मैं उस काम को पूरा करूँगी जिसके लिए मेरे पिता ने अपनी जान दी,” सुखेष्णी ने उसे शांत करने की कोशिश की। वह जानती थी कि उसके पिता 20 साल से उसके साथ नहीं थे और उसे उनकी अनुपस्थिति की आदत हो गई थी, लेकिन विवांत अपने पिता के जीवित होने और अपनी माँ के उनके बिना दुख भोगने की बात जानकर भावनात्मक रूप से टूट रहा

था।

“सुखेशनी, हर चीज़ के लिए धन्यवाद; तुमने मेरा बहुत साथ दिया है।” विवांत ने कॉलेज में हुए झगड़ों के दौरान उसे इतना परेशान करने के बावजूद भी साथ रहने के लिए उसका शुक्रिया अदा किया।

कॉलेज के दिनों की लड़ाइयों को याद करके दोनों खूब हँसे। झगड़ालू दो लोग दोस्त बन गए थे और दोस्ती से बढ़कर, अब वे साझेदार बन गए थे। वे एक-दूसरे के परिवारों के बारे में भावनाओं को समझते थे और एक-दूसरे का समर्थन करते थे।

विवांत के मन में उसके लिए और भी अधिक सम्मान था क्योंकि उसके पिता अपने पिता और भाई को बचाने की कोशिश में शहीद हो गए थे।

Mars or Bhuvarloka

हिरण्याक्ष के साथ जो हुआ, उसे सुनकर हिरण्यकशिपु का क्रोध भड़क उठा और उसने बदला लेने की कसम खाई, “मैं उस धोखेबाज विष्णु को मार डालूंगा, उसने धोखे से मेरे भाई को मार डाला, मेरे भाई ने उससे लड़ने की हिम्मत नहीं की, इसलिए वह वराह का रूप धारण करके आया और उसे मार डाला, मैं उसे नहीं छोड़ूंगा,” उसने शुक्र से कहा।

“इसके लिए तुम्हें बलवान बनना होगा, हिरण्यक्ष से भी अधिक बलवान। जाओ और ब्रह्मा की तपस्या करो और अमरत्व का वरदान प्राप्त करो, अपना वरदान सावधानीपूर्वक मांगो, ताकि इस बार विष्णु तुम्हें धोखा न दे सकें,” शुक्र ने सलाह दी।

हिरण्यकशिपु ने शुक्र का आशीर्वाद लिया और ब्रह्मा से अमरता का वरदान प्राप्त करने के लिए तपस्या करने चला गया। उसने कई वर्षों तक तपस्या की।

इंद्र ने उसे रोकने के लिए कई उपाय आजमाए। वे जानते थे कि यदि हिरण्यकशिपु अत्यधिक शक्तिशाली हो गया तो वह उनके लिए मुसीबत बन जाएगा। इंद्र ने अग्नि को अग्नि वर्षा करने का आदेश दिया, वरुण को गरजती हुई वर्षा करने का आदेश दिया, वायु ने चक्रवातों से आक्रमण किया, लेकिन हिरण्यकशिपु ने सब कुछ सहन

कर लिया। अपने भाई की मृत्यु का दर्द और विष्णु के प्रति घृणा ने उसे शक्ति प्रदान की।

हिरण्यकशिपु की पत्नी कयादु गर्भवती थी। उसके तपस्या के लिए चले जाने के बाद दानव लोक की देखभाल करने वाला कोई नहीं था।

स्वर्गलोक में इंद्र हिरण्याक्ष के वर्तमान स्वरूप के बारे में सुनकर और यह सोचकर कि हिरण्यकशिपु अमरता प्राप्त कर सकता है और उन्हें पराजित कर सकता है, दिन-प्रतिदिन शक्तिहीन महसूस कर रहे थे।

दानवों को शुक्र ने प्रशिक्षित किया था। वह जानता था कि जल्द ही दानव स्वर्गलोक पर आक्रमण करेंगे और उसे उससे छीन लेंगे।

हिरण्यकशिपु के बिना दानवों का कोई प्रमुख नेता नहीं था। इंद्र ने भुवर्लोक पर आक्रमण करके कायदु को पकड़ने और हिरण्यकशिपु तथा उसके परिवार का नाश करने का अवसर देखा और सोचा कि इससे उसकी तपस्या भंग हो जाएगी और संपूर्ण दानव वंश का विनाश हो जाएगा।

हिरण्यकशिपु ब्रह्मा से प्रार्थना कर रहा था, इसलिए ब्रह्मा का यह कर्तव्य था कि वे अपने भक्त और उसके परिवार की रक्षा करें। अतः उन्होंने अपने पुत्र नारद मुनि को कायदु को बचाने के लिए भेजा। नारद भुवर लोक गए।

इंद्र और अन्य देवताओं ने भुवर लोक को घेर लिया था और वे कयादु और उसके अजन्मे बच्चे को मारना चाहते थे। लेकिन इससे पहले कि ऐसा हो पाता, नारद कयादु को लेकर भुलोक आ गए और उसे अपने आश्रम में ले आए और उसे आश्वासन दिया कि वह वहाँ सुरक्षित रहेगी।

Hiranyakashipu was going strong in his penance. Kayadu gave birth to a male child, Narada Muni named him as Prahalada.

प्रहलाद ने अपने जीवन के हर पल महाविष्णु के मंत्रों और कथाओं को सुनते हुए अपना बचपन बिताया। नारायण जप उनकी हर सांस का हिस्सा बन गया था।

नारद विष्णु के परम भक्त थे, इसलिए वे दिन भर उनकी महिमा का गुणगान करते रहते थे। उनके प्रभाव से प्रहलाद विष्णु के परम भक्त बन गए। प्रहलाद ने सच्चे मन से उन पर आस्था रखी। इतनी कम उम्र में ही प्रहलाद ने सभी विषयों का ज्ञान प्राप्त कर लिया था।

कुमारी कांड और संगम सभ्यता के उदय के बाद, कई मानवों और मानव जैसे प्राणियों ने विष्णु के वराह अवतार की पूजा की और उनकी इच्छा के अनुसार मानव, वानर, वराह, नरसिंह और अन्य सभी लोकों में फैल गए और भारत, मिस्र, मध्य एशिया और यूरोप जैसे कई स्थानों पर बस गए।

कई वर्ष बीत गए और हिरण्यकशिपु विष्णु से बदला लेने के लिए तपस्या करता रहा। प्रहलाद नारद के आश्रम में महाविष्णु का परम भक्त बनता जा रहा था।

नारद का आश्रम नरसिम्हा के राज्य की सुरक्षा में था। नारद जानते थे कि इंद्र नरसिम्हा की सुरक्षा में स्थित किसी स्थान पर आक्रमण करने का साहस कभी नहीं करेंगे, क्योंकि वे उनके क्रोध से भलीभांति परिचित थे, जो उन्हें नष्ट कर सकता था।

उग्रलोचना नरसिंह वंश के राजा थे, जिनकी राजधानी वर्तमान मिस्र में थी। इंद्र उग्रलोचना की प्रचंड आँखों से भयभीत थे, और इसी कारण उन्होंने नारद के आश्रम में कयादु या प्रहलाद को हानि पहुँचाने का साहस नहीं किया।

उग्रलोचना का एक पुत्र था, राजकुमार वज्रनाख, जो नरसिंह वंश में सबसे वीर और बुद्धिमान था और उसने सभी मानव प्रजातियों को एक राज्य के अधीन कर लिया था। वह अपने किसी भी प्रजाजन को हानि पहुँचाने का प्रयास करने वाले को नहीं छोड़ता था। वज्रनाख का क्रोधित चेहरा इतना भयानक होता था कि कोई भी उसे देखना नहीं चाहता था। यदि वह अपनी आँखें खोलता, तो उसके सामने खड़ा हर कोई चुप हो जाता। जब कोई सेना उन पर हमला करती, तो उसकी गर्जना सुनकर पूरा युद्धक्षेत्र थम जाता।

वह अपने पिता से प्रेम करता था और उन सभी राज्यों से भी जिन्होंने उनके समक्ष आत्मसमर्पण कर दिया था, वह उनके शासन और न्याय के लिए उनकी प्रशंसा करता

था और इस बात के लिए भी कि वह सभी का सम्मान करते थे और सभी के साथ समान व्यवहार करते थे।

हिरण्यकशिपु की तपस्या से प्रसन्न होकर ब्रह्मा उसके सामने प्रकट हुए और बोले, "पुत्र, जाग जाओ, मैं तुम्हारी तपस्या से प्रसन्न हूँ, तुम जो चाहो वर मांग सकते हो।"

हिरण्यकशिपु ने ब्रह्मा से अमरता का वरदान देने का अनुरोध किया।

ब्रह्मा ने कहा, "मैं यह वरदान संसार में किसी को नहीं दे सकता। इसलिए कृपया अपनी कोई और इच्छा मांग लें।"

हिरण्यकशिपु क्रोधित था क्योंकि वह जानता था कि उसके भाई को भी यह बात समझ नहीं आई थी और इसी वजह से उसकी मृत्यु हुई थी, लेकिन उसने एक वैकल्पिक योजना सोची।

"मुझे यह वरदान दीजिए कि मैं न तो घर के अंदर, न बाहर, न दिन में, न रात में, न किसी हथियार से, न किसी मनुष्य या जानवर के हाथों मरूं, और न ही मुझे अंतरिक्ष में या धरती पर मारा जा सके," हिरण्यकशिपु ने प्रार्थना की।

"जैसा तुम चाहो, मैं तुम्हें वही प्रदान करता हूँ," ब्रह्मा ने कहा।

हिरण्यकशिपु अपने राज्य लौट आया और उसे अपनी अनुपस्थिति में घटी घटनाओं और इंद्र द्वारा किए गए कार्यों के बारे में पता चला। वह अपनी पत्नी के साथ क्या करने की योजना बना रहा था और नारद मुनि ने उन्हें कैसे बचाया, यह भी उसे पता चला।

हिरण्यकशिपु भूलोक स्थित नारद आश्रम गया और अपनी पत्नी कयादु और पुत्र प्रहलाद को सुरक्षित पाकर प्रसन्न हुआ। उसने नारद मुनि को धन्यवाद दिया और उन्हें अपने राज्य ले गया।

प्रहलाद हमेशा विष्णु का नाम जपता रहता था और उनकी स्तुति करता था। हिरण्यकशिपु को यह बात असहनीय लगने लगी।

“मेरे सामने विष्णु का नाम जपना बंद करो। उसने तुम्हारे मामा को मारा, दानवों को धोखा दिया और हमेशा मानवों का पक्ष लिया। तुम्हें उससे घृणा करनी चाहिए और बदला लेना चाहिए,” हिरण्यकशिपु ने उसे समझाने की कोशिश की।

“पिताजी, चाचा ने भूलोक को नष्ट करने की कोशिश की और लाखों मानवों को मार डाला। विष्णु ने ऐसा अपने भक्तों की रक्षा के लिए किया। आप भी प्रार्थना करना शुरू कर दीजिए। वे हमारा भी भला करेंगे,” प्रहलाद ने अपने पिता को समझाने का प्रयास किया।

“विष्णु उसके देवता नहीं हैं। मैं उसका देवता हूँ, उसे मेरी पूजा करने दो, तब तक मैं इंद्र को सबक सिखा दूँगा।” हिरण्यकशिपु ने कायदु को उसे समझाने का आदेश दिया।

वह स्वर्गलोक गया। इंद्र को पता था कि वह गंभीर खतरे में है और वह विष्णु से मदद मांगने के लिए पहले ही वैकुंठ भाग गया था, लेकिन विष्णु वैकुंठ में नहीं थे।

हिरण्यकशिपु इंद्र की दशा पर हँसा और स्वर्ग लोक पर विजय प्राप्त करके स्वयं को तीनों लोकों का स्वामी घोषित कर दिया। वह अपने महल में लौटकर स्वर्ग लोक पर विजय प्राप्त करने से प्रसन्न हुआ और कयादु से कहा कि वह एक दिन इंद्र को मारकर अपना बदला पूरा करेगा।

वह प्रहलाद के पास यह सोचकर गया कि वह उसकी वास्तविक शक्ति को पहचान लेगा और उसे देवता के समान मानेगा, लेकिन प्रहलाद महाविष्णु की पूजा कर रहा था।

हिरण्यकशिपु इतना क्रोधित हुआ कि उसने गरजते हुए कहा, “देखो, मैंने स्वर्ग लोक पर विजय प्राप्त कर ली है और मैं सभी देवताओं का स्वामी हूँ। मैं समस्त लोकों का नया देवता हूँ। तुम्हारा विष्णु लापता हो गया है। अब से मैं तुम्हारा देवता हूँ, समस्त विश्व मेरी पूजा करता है।”

“हे पिता, मैं आपका आदर करता हूँ और आपको ईश्वर मानकर आपकी पूजा करता हूँ क्योंकि आप मेरे पिता हैं और प्रेम के कारण। सारा संसार भय के कारण आपकी पूजा करता है।”

“परन्तु समस्त विश्व विष्णु की आराधना प्रेमवश करता है क्योंकि वे उनकी रक्षा करते हैं। इसलिए प्रेम का प्रसार करो, भय का नहीं,” प्रहलाद ने धैर्यपूर्वक उत्तर दिया।

हिरण्यकशिपु ने अपने जबड़े भींचे और अपने बेटे को मौत की सजा देने का आदेश दिया।

उसकी बहन होलिका पर आग का कोई असर नहीं होता था। इसलिए उसने उससे कहा कि वह उसे आग के पास ले जाए और जला दे।

“हे स्वामी, उसे क्षमा कर दीजिए, वह एक छोटा बच्चा है। जब वह बड़ा होगा तो उसे अपनी गलती का एहसास हो जाएगा। कृपया उसे इतना क्रूर दंड न दीजिए,” कायदु ने रोते हुए हिरण्यकशिपु से क्षमा की विनती की।

होलिका बेहद खुश थी क्योंकि वह चाहती थी कि उसका बेटा अगला राजा बने और अब वह सिंहासन के लिए प्रतिस्पर्धा को खत्म कर सकती थी।

होलिका उसे अपने द्वारा उत्पन्न विशाल चिता के पास ले गई। प्रहलाद महाविष्णु से प्रार्थना करने लगा और होलिका की गोद में बैठ गया।

आग ने होलिका को जला दिया और वह राख हो गई, लेकिन प्रहलाद को कुछ नहीं हुआ।

हिरण्यकशिपु पहले ही विष्णु के कारण अपने भाई को खो चुका था। अब होलिका भी उसके साथ चली गई, वह क्रोध से उबल रहा था।

इंद्र ब्रह्मा से सहायता मांगने सत्यलोक गए और बोले, “कृपया मुझे स्वर्गलोक वापस दिलाने में मदद करें, मुझे मेरे ही घर से निकाल दिया गया है और सभी देवताओं को हिरण्यकशिपु के प्रकोप से बचाएं।”

ब्रह्मा ने कहा, “तुम्हें अपने कर्मों का फल मिल रहा है। समय आने पर केवल विष्णु ही हिरण्यकशिपु का अंत कर सकते हैं।”

इंद्र ने कहा, "लेकिन विष्णु तो वैकुंठ में नहीं हैं, हम उन्हें कहाँ पा सकते हैं?"

ब्रह्मा मुस्कुराए और बोले, "तो फिर उन्होंने पहले ही अवतार ले लिया है और समय आने पर वे कार्य करेंगे।"

हिरण्यकशिपु प्रहलाद के पास गया। “मैं उस विष्णु को मार डालूँगा, मुझे बताओ वह कहाँ है? उसने मेरे भाई और बहन को मार डाला है। मैं उससे इसका बदला लूँगा, मुझे बताओ वह कहाँ छिपा है?” हिरण्यकशिपु चिल्लाया।

युवा प्रहलाद ने कहा, "वह सर्वत्र विद्यमान है, वह मेरी प्रार्थनाओं में है, वह आप में है, वह मुझ में है, वह अंतरिक्ष में है, वह उस भूमि पर है जिस पर आप खड़े हैं, सभी लोक वही हैं और वह उनमें विद्यमान है।"

हिरण्यकशिपु ने क्रूरता से हंसते हुए कहा, “यदि तुम्हारा विष्णु सर्वत्र विद्यमान है तो वह मेरे या तुम्हारे सामने क्यों नहीं आएगा? और हां, मुझे याद है कि भूलोक में रहते हुए तुम विष्णु के प्रति आसक्त हो गए थे। तुम्हारा आश्रम खोज शुरू करने के लिए एक अच्छा स्थान हो सकता है।”

हिरण्यकशिपु भूलोक गया और प्रहलाद को अपने साथ नारद के आश्रम ले गया। नारद बुद्धिमान थे, उन्होंने हिरण्यकशिपु से कहा कि इस भूमि पर उग्रलोचन का शासन है, वह जाकर उनसे पूछ सकता है, वे विष्णु को खोजने में उसकी सहायता करेंगे।

हिरण्यकशिपु को कोई भय नहीं था, उसे किसी बात की परवाह नहीं थी। वह उग्रलोचना के महल में गया और बोला, "मैं, तीनों लोकों का देवता, तुमसे यह जानना चाहता हूँ कि विष्णु कहाँ छिपे हैं। मैं उन्हें मार डालूँगा।"

उग्रलोचना वृद्ध और बुद्धिमान थे; उन्होंने हिरण्यकशिपु को मुस्कुराते हुए उत्तर दिया, “यदि तुम ईश्वर हो तो तुम्हें पता होना चाहिए कि ईश्वर कहाँ विद्यमान है। वह प्रत्येक प्राणी के हृदय में विद्यमान है। वह सर्वव्यापी है और जो स्वयं को ईश्वर के रूप में प्रस्तुत करता है वह ईश्वर नहीं है।”

हिरण्यकशिपु को मिली प्रेरणा सुनकर क्रोध आ गया। उसने विष्णु के दर्शन पाने के लिए उग्रलोचना का हृदय भेदने का निश्चय किया।

हिरण्यकशिपु ने सिंहासन पर बैठे उग्रलोचना पर अपना खंजर फेंका और उसे मार डाला। इसके बाद उसने अपने ऊपर हमला करने वाले हर व्यक्ति को मारना शुरू कर दिया और भूलोक में विष्णु की खोज में निकल पड़ा।

यह खबर सुनकर वज्रनाखा महल पहुंचा और नम आंखों से धीरे-धीरे अपने पिता के शव की ओर बढ़ा। उसने हिरण्यकशिपु का वध करने की शपथ ली।

वज्रनाख अपने बढ़ते क्रोध को रोक नहीं सका; वह क्रोधित हो उठा। वह अकेले ही हिरण्यकशिपु से युद्ध करने चला गया। वज्रनाख के क्रोध से तीनों लोक कांप उठे; उसने हिरण्यकशिपु से सीधा युद्ध किया।

वज्रनाख और हिरण्यकशिपु ने अपने गदाओं से युद्ध किया। गदाओं के टकराने की ध्वनि से तीनों लोकों में कंपन उत्पन्न हो गया। वज्रनाख ने गर्जना करते हुए हिरण्यकशिपु की छाती पर तब तक लात मारी जब तक वह जमीन पर गिर नहीं गया।

सभी देवता यह सब देख रहे थे। यह एक भयंकर युद्ध था। हिरण्यकशिपु जानता था कि ब्रह्मा से प्राप्त वरदान के कारण वह किसी भी कीमत पर मर नहीं सकता। वह अजेय हो चुका था।

वज्रनाखा हिरण्यकशिपु के वरदान के बारे में जानता था और अगर किसी के पास उसे मारने का मौका था, तो वह वही था क्योंकि वह न तो मनुष्य था और न ही पशु; उसके नाखून इंद्र के वज्र के समान थे; इसलिए उसे वज्रनाखा कहा जाता था।

उसने तब तक उससे युद्ध किया जब तक कि गोधूलि बेला नहीं छा गई, जब न दिन था न रात। वज्रनाख ने हिरण्यकशिपु को उसके बालों से पकड़कर महल के प्रवेश द्वार पर घसीटा, जहाँ गोधूलि बेला में न अंदर था न बाहर, उसने उसे अपनी गोद में बिठाया और अपने नाखूनों से उसका पेट छेदकर उसे चीर डाला; इस प्रकार उसकी कहानी समाप्त हो गई।

वज्रनाख अपने पिता की मृत्यु के दर्द से बेकाबू होकर हिंसक हो गया था और एक भूखा शेर बन गया था। वह अपने रास्ते में आने वाली हर चीज को नष्ट कर रहा था। यदि उसे काबू में नहीं किया गया तो दुनिया में हर कोई खतरे में पड़ जाएगा; आज

तक किसी ने भी विष्णु के इस क्रोध को नहीं देखा था।

सभी ने शिव से प्रार्थना की और भूलोक को बचाने के लिए उनके पास गए, अन्यथा नरसिम्हा इसे पूरी तरह नष्ट कर देगा। शिव जानते थे कि किसी भी क्रिया को रोकने के लिए उसकी एक समान और विपरीत प्रतिक्रिया होनी चाहिए।

शिव ने शरब अवतार धारण किया, जिनका चेहरा मनुष्य जैसा और शरीर सिंह जैसा था, और पृथ्वी पर आकर वज्रनाखा से आमने-सामने युद्ध किया। शरब ने वज्रनाखा पर झपट्टा मारा, उसके हाथ पकड़कर उसे पीछे धकेल दिया। वज्रनाखा ने उन पर हमला किया। उनका युद्ध कई दिनों तक चला, दोनों ने एक-दूसरे के शरीर पर खरोंचें मारीं लेकिन थके नहीं।

Sharaba told Prahalada to chant a Narasimha stuti to please Vajranakha reminding him that he was Vishnu and after Prahalada chanted, Vajranakha calmed down.

शरबा द्वारा भुलोक की रक्षा करने की स्मृति में, मिस्र के लोगों ने भुलोक और भुवरलोक दोनों पर शरबा की एक विशाल संरचना का निर्माण किया।

नोट: स्फिंक्स मिस्र की एक विशाल संरचना है। इसकी सटीक तिथि अभी तक स्पष्ट नहीं है। वर्षा के कटाव से पता चलता है कि यह 5000-6000 ईसा पूर्व से बहुत पहले की है, क्योंकि मिस्र में आखिरी बार इसी समय वर्षा हुई थी। स्फिंक्स में शेर का शरीर और मनुष्य का सिर दर्शाया गया है और इतिहास में स्फिंक्स का सबसे पुराना उल्लेख तुर्की के गोबेकले टेपे में लगभग 9500 ईसा पूर्व मिलता है।

शाराबा एक स्फिंक्स भी है। कई हिंदू मंदिरों में उन्हें शिव के अवतार के रूप में दर्शाया गया है, जो नरसिम्हा को रोकते हैं। ग्रीक स्फिंक्स को आमतौर पर पंखों के साथ चित्रित किया जाता है। कुछ मंदिरों में शाराबा को आधे शेर और आधे मनुष्य के रूप में, पंखों और शेर के चेहरे के साथ दर्शाया गया है।

युगों के हमारे चक्र के अनुसार, 9585 ईसा पूर्व सत्ययुग का अंत होता है।

अध्याय 7

राज खुल गए

सेना शिविर

तिब्बती अधिकारी ल्हावांग से चर्चा करने के बाद कान्हा शिविर में लौट आया। उसने कहा, “मेरे पास एक बहुत अच्छी खबर है। अधिकारी ल्हावांग को उस इमारत का खाका मिला है जहाँ उन्होंने गुप्त संदूक और शायद डॉ. विश्वनाथ को बंदी बनाकर रखा होगा।”

मैं कल उससे मिलूंगा और उसे ले आऊंगा। बाद में, हम मिलकर योजना बनाएंगे कि बक्सा कैसे हासिल करें और उसे कैसे बचाएं।” कान्हा ने विवांत और सुखेशनी से कहा।

कान्हा ने उस पुराने गोदाम का खाका इकट्ठा किया जिसमें एक गुप्त भूमिगत अड्डा था जहाँ तारक अपना सारा गुप्त काम करता था।

कान्हा, विवांत और सुखेशनी गोदाम जाने की योजना बनाने के लिए बैठ गए और उन्होंने नक्शे का अध्ययन किया जिसमें सभी सुरक्षा गार्डों की तैनाती और उनसे निपटने के तरीकों का पता लगाया गया था। उन्हें सीसीटीवी कैमरों, इन्फ्रारेड सिग्नलों और सभी गार्डों से निपटना था।

कान्हा ने हथियार तैयार कर लिए; ऐसी बंदूकें जो पहरेदारों को बेहोश करने के लिए कुछ शक्तिशाली बेहोशी की दवा दाग सकती थीं; उसे लगा कि वे अपना काम पूरा करने के लिए काफी हैं।

कान्हा ने एक योजना बनाई और उन्हें बताई। उसने विवांत को बेहोश करने वाली बंदूक दी और कहा, “चलो अंदर चलते हैं; हम इन इयरफ़ोन से जुड़े रहेंगे। सीसीटीवी कक्ष पर नियंत्रण करने के बाद सुखेष्णी हमें वहाँ से मार्गदर्शन करेगी। खतरे की आशंका होने पर सुखेष्णी हमें संकेत देगी। हम दोनों अंदर जाकर गुप्त बक्सा निकालेंगे और

डॉ. विश्वनाथ को बचाएंगे। योजना से न भटकें और दूसरों की जान खतरे में न डालें। मेरी आखिरी सलाह है, जान बचाकर मरना।" कान्हा ने निर्देश दिए।

"सारा काम रात में ही करना होगा, हालांकि तापमान इसमें ज़्यादा मदद नहीं करेगा। कड़ाके की ठंड होगी और कान्हा जानता था कि विवांत और सुखेशनी उस मौसम के आदी नहीं होंगे।" उन्होंने कान्हा द्वारा दिए गए कपड़े पहने जिनमें कुछ बेहतरीन उपकरण लगे हुए थे।

कड़ाके की ठंड में दांत किटकिटाते हुए वे तीनों गोदाम के पास गए। ठंडी हवाएं उनके चेहरों पर लग रही थीं, विवांत और सुखेष्णी को घुटन महसूस हो रही थी, वे कड़ाके की ठंड में सांस नहीं ले पा रहे थे।

कान्हा ने उन्हें अपने सूट का लाल टैग खींचने को कहा। सूट जल्दी गर्म हो गया और उन्हें आराम महसूस हुआ। कान्हा के पास ऑक्सीजन सप्लाई करने वाली एक छोटी किट थी। दोनों ने ऑक्सीजन ली और अब थोड़ा बेहतर महसूस कर रहे थे और कार्रवाई के लिए तैयार थे।

कान्हा जानता था कि उसे यह काम जल्दी खत्म करना होगा। दूर से उन्होंने बड़े गोदाम के गेट के दोनों सिरों पर दो सुरक्षा गार्डों को बैठे देखा। कान्हा ने काफी दूरी से दोनों सुरक्षा गार्डों की गर्दन पर बेहोशी की गोली दाग दी।

विवांत और कान्हा सीसीटीवी कैमरे की नजरों से बचते हुए गेट की ओर बढ़ने लगे। सीसीटीवी कक्ष में तैनात गार्ड यह देखने के लिए आए कि क्या हुआ और गेट पर तैनात दोनों गार्ड क्यों सो गए थे।

कान्हा और विवांत चुपके से उनके पीछे आए और उन्हें बेहोश करने वाली दवा का इंजेक्शन लगाया। वे चुपके से गेट के अंदर घुस गए और किसी के ध्यान देने से पहले ही उसे धीरे से बंद कर दिया।

कान्हा और विवांत द्वारा दोनों गार्डों को बेहोश कर दिए जाने के बाद सुखेष्णी ने गेट के पीछे स्थित सीसीटीवी कक्ष का नियंत्रण अपने हाथ में ले लिया। उन तीनों ने सीसीटीवी फुटेज में उनकी सुरक्षा व्यवस्था का जायजा लिया था। वे जानते थे कि वे

उनका मुकाबला नहीं कर सकते।

तहखाने में जाकर उन्होंने देखा कि वहां सुरक्षा का स्तर बहुत ऊंचा था। वहां एक लिफ्ट थी जो सीधे तहखाने तक जाती थी, लेकिन उन्होंने देखा कि दो आदमी उसकी रखवाली कर रहे थे।

सुखेशनी उन्हें रास्ता दिखाने के लिए सीसीटीवी कक्ष में ही रुकी रही। कान्हा लिफ्ट से तहखाने में गया। जब लिफ्ट तहखाने में खुली, तो गार्डों ने देखा कि लिफ्ट के अंदर कोई नहीं था।

गार्ड लिफ्ट में दाखिल हुए और सोचा कि ऊपर जाकर पता लगा लें कि लिफ्ट कौन चला रहा है। जैसे ही वे अंदर गए और दरवाजा बंद किया, कान्हा, जो अपने चुंबकीय सूट की मदद से लिफ्ट की छत पर छिपा हुआ था, ने उन दोनों को बेहोशी की दवा का इंजेक्शन लगा दिया। लिफ्ट खुलते ही कान्हा ने गार्डों को बाहर इंतजार कर रहे विवांत की ओर धकेल दिया। उन्होंने गार्डों को एक तरफ खींच लिया; उनके पहचान पत्र और हथियार छीन लिए और तहखाने में चले गए।

सीधी गलियारे में कोई नहीं था; दूर से किसी ने चीनी भाषा में चिल्लाकर पूछा, "क्या सब ठीक है?"

“सब ठीक है,” कान्हा ने उसी भाषा में जवाब दिया। विवांत, जिसे उनकी बातचीत का कोई अंदाजा नहीं था, बस कान्हा के पीछे-पीछे चल दिया।

योजना के अनुसार, वहाँ एक छोटा सा कार्यालय था जहाँ तारक बैठता था। वह स्थान जहाँ संदूक छिपाया गया होगा और वह स्थान जहाँ बंदी को रखा गया था, अभी भी उनके लिए अज्ञात था।

कान्हा और विवांत तारक के कमरे की ओर बढ़े। तारक के कमरे के सामने तैनात पहरेदारों को यह नहीं पता था कि ये दोनों पहरेदार नहीं हैं। कान्हा और विवांत ने भेस बदल रखा था और अपने चेहरे नकाबों से ढके हुए थे।

कान्हा और विवांत उनके पास आए और उनके सिर पर ज़ोर से वार किया जिससे वे

बेहोश हो गए। वे उन बेहोश गार्डों को कमरे के अंदर ले गए।

वहाँ एक लॉकर था जो पासवर्ड से सुरक्षित था। कान्हा ने पासवर्ड हैक करने वाला उपकरण खोला, लेकिन उसने कहा कि पासवर्ड को डिक्रिप्ट करने और लॉकर खोलने में कम से कम 10-15 मिनट लगेंगे।

इस बीच विवांत ने तारक के पर्सनल कंप्यूटर को हैक करने का समय लिया और कैलाश पर्वत से संबंधित शोध फाइलें ढूंढ निकालीं। विवांत ने तुरंत उन फाइलों को डाउनलोड करके अपनी पेन ड्राइव में ट्रांसफर कर लिया।

उसे डॉ. विश्वनाथ नाम की फाइलों वाला एक फोल्डर मिला। उसमें कुछ वीडियो थे जिनमें उसने अपने पिता को बॉक्स के बारे में और बॉक्स खोलने के तरीके के बारे में जानकारी निकालने के लिए प्रताड़ित होते देखा।

उसने देखा कि तारक ने अपना हाथ अपने पिता के सिर पर रखा हुआ था और उसका हाथ चमक रहा था, जिससे डॉ. विश्वनाथ तारक की हर बात मानने को मजबूर हो रहे थे। उसने उनसे डिब्बा खोलने का तरीका पूछा। डॉ. विश्वनाथ कुछ देर तक तो काफी देर तक चुप रहे, लेकिन आखिरकार एक दिन वे टूट गए। विश्वनाथ गुस्से से आग बबूला हो गए, तारक के प्रति उनका क्रोध बढ़ता ही जा रहा था।

विवांत को एक और सुरक्षा कैमरा सेटअप करने वाला एप्लिकेशन मिला और उसने उसे खोला। उसने देखा कि उसके पिता को कई गार्डों द्वारा सुरक्षित एक कमरे में रखा गया है।

जब तक पासवर्ड क्रैक हुआ, कान्हा ने बॉक्स को बाहर निकालने के लिए अपने आईआर चश्मे पहन लिए थे। उन्होंने बॉक्स के सामने आईआर विकिरण देखा। कान्हा ने रिफ्लेक्टर लगाने की कोशिश की और उन्हें अपने बैग से निकाल लिया।

विवांत ने डिब्बे को देखा और तुरंत जाकर अपने पिता को बचाना चाहा। इसलिए उसने डिब्बा बाहर निकाला। विवांत की इस हरकत से अलार्म बज उठा। अब सभी खतरे में थे।

सुखेष्णी ने ईयरफोन पर सूचना देते हुए कहा, "सभी गार्ड तैनात कर दिए गए हैं और वे तहखाने के आखिरी छोर पर स्थित एक कमरे की ओर बढ़ रहे हैं।"

“मैंने सीसीटीवी में देखा कि पापा को वहीं छिपाकर रखा गया है। मैं वहीं जा रहा हूँ।” विवांत ने ईयरफोन पर कान्हा और सुखेशनी को बताया।

गार्डों के मुखिया ने फोन करके तारक को सूचना दी। तारक ने उन्हें डॉ. विश्वनाथ की सुरक्षा सुनिश्चित करने का निर्देश दिया। तारक को यह आशंका नहीं थी कि कोई उनके कार्यालय में घुसपैठ कर सकता है, क्योंकि वह बेहद सुरक्षित था।

कान्हा ने देखा कि विवांत की नसों में एड्रेनालाईन तेज़ी से दौड़ रहा था। वह जानता था कि उन वीडियो को देखने के बाद उसका खून खौल रहा था। कान्हा ने पहली बार विवांत की आँखों में उग्रता देखी। वह कमरे की ओर दौड़ रहा था, कान्हा ने उसे रोका और शांत होने को कहा, "यह सही समय नहीं है।" सुखेशनी ने भी यही बात दोहराई, "कमरे को लगभग 50 सैनिकों ने घेर रखा है, इसलिए यह सही समय नहीं है।"

विवांत सुनने को तैयार नहीं था। वह किसी भी कीमत पर अपने पिता को बचाना चाहता था। “विवांत, तुम्हारी आँखों में नरसिम्हा का क्रोध झलक रहा है, जो अब तक हमने जो कुछ भी हासिल किया है, उसे नष्ट कर देगा; ठीक वैसे ही जैसे नरसिम्हा ने हिरण्यकशिपु को मारने के बाद सब कुछ नष्ट करना शुरू कर दिया था। हमें अपने भावों और विचारों पर नियंत्रण रखना आना चाहिए। अगर हम इस बक्से और उन फाइलों के साथ बाहर नहीं निकले, तो शायद हम तुम्हारे पिता को इस जगह से बाहर न निकाल पाएं। तारक के यहाँ आने से पहले हमें यहाँ से निकलना होगा।” कान्हा ने विवांत को शांत करने की कोशिश की।

विवांत शांत हो गया और कान्हा की बात सुनकर चुपचाप निकलने की कोशिश करने लगा। कान्हा ने सुखेष्णी से कहा कि वह किसी के आने से पहले गाड़ी की तरफ चली जाए।

सुखेशनी बाहर चली गई, विवांत और कान्हा लिफ्ट से भूतल पर आ गए। वहाँ कोई नहीं था क्योंकि अधिकांश गार्ड कैदी के कमरे की रखवाली कर रहे थे, वे गेट की ओर

चले गए।

“मुझे गेट की तरफ एक कार आती दिख रही है; शायद तारक की है,” सुखेष्णी ने बताया। विवांत और कान्हा ने गेट गार्ड का वेश बनाया। तारक की कार आते ही उन्होंने गेट खोला और गेट बंद करके अपनी जीप की तरफ भागे और अपने गुप्त शिविर की ओर चल दिए।

Tretayuga

प्रहलाद दानवों के राजा बने और उन्होंने कई वर्षों तक विवेकपूर्ण शासन किया। वे एक ऐसे राजा थे जिनका सभी लोकों में सम्मान था।

उन्होंने तीनों लोकों में शांति बनाए रखी। वे विष्णु के परम भक्त थे और उन्होंने अपना अधिकांश जीवन प्रार्थना करने और विश्व को विष्णु की महानता के बारे में सिखाने में व्यतीत किया।

सत्ययुग में मानव जाति के राजा इक्ष्वाकु मनु के पुत्र थे। इक्ष्वाकु और प्रहलाद दोनों ही शांतिप्रिय थे। वे अपनी सभ्यताओं को अब तक की उपलब्धियों से कहीं अधिक विकसित करना चाहते थे।

वे लोगों को अपने ग्रहों और तारामंडलों से परे यात्रा करने में सुविधा प्रदान करना चाहते थे। इसलिए, उन्होंने विश्वकर्मा से अन्य तारों, नक्षत्रों और ग्रहों के लिए पोर्टल बनाने का अनुरोध किया।

विश्वकर्मा ने अपने सर्वश्रेष्ठ शिष्य माया को भूलोक और भुवरलोक पर ताराद्वार और पोर्टल बनाने का कार्य सौंपा। माया पूरे ब्रह्मांड की सबसे महान वास्तुकारों में से एक थीं।

माया ने विश्वकर्मा, इक्ष्वाकु और प्रहलाद के साथ पिरामिड के आकार के ताराद्वार बनाने की अपनी योजनाओं पर चर्चा की।

माया ने समझाया कि स्टारगेट बनाने के लिए इसके भीतर बहुत सारी ऊर्जा समाहित

करनी पड़ती है और उस केंद्रित ऊर्जा को आयनमंडल की ओर प्रक्षेपित करने की आवश्यकता होती है ताकि एक वर्महोल का निर्माण हो सके, जो बदले में एक स्टारगेट से दूसरे स्टारगेट के बीच एक सुरंग खोलेगा।

उन्होंने गोले, घन, घनाकार, गोलाकार और पिरामिड जैसी कई संरचनाओं का अध्ययन किया था। जब इन संरचनाओं में ऊर्जा को सीमित करने का प्रयास किया गया, तो पिरामिड को छोड़कर बाकी सभी संरचनाओं में ऊर्जा की भारी हानि हुई, जबकि पिरामिड में ऊर्जा की हानि न्यूनतम थी।

पिरामिड 85% ऊर्जा को समाहित कर सकते हैं। वह ऐसे पिरामिड बनाना चाहता था जो असीमित ऊर्जा प्रदान कर सकें और जिससे पूरी दुनिया को लाभ हो सके।

एक बार जब ये पिरामिड बन गए, तो लोग लायरा नक्षत्र में स्थित महार लोक और प्लीएड्स नक्षत्र में स्थित महान ऋषियों के ग्रह जनालोक जैसे उच्च ग्रहों की यात्रा कर सकते थे।

नक्षत्र द्वारों से होकर गुजरने के लिए, व्यक्ति को यह जानना आवश्यक है कि उसका शरीर पंचभूतों से बना है। लोगों को पंचभूतों के बारे में जागरूक होना चाहिए और सभी चक्रों को सक्रिय करना चाहिए, जिससे उन्हें स्वस्थ जीवन जीने में सहायता मिलेगी।

माया ने बताया कि पिरामिडों की डिजाइन इस प्रकार है कि वे पंचभूत तत्वों जैसे पृथ्वी, वरुण, अग्नि, वायु और व्योम से संबंधित विकिरणों को बढ़ाएंगे और उत्सर्जित करेंगे।

किसी पिरामिड को अपनी ऊर्जा केंद्रित करने के लिए एक लेंस की आवश्यकता होती है। पिरामिड के शीर्ष भाग में स्थित केंद्र बिंदु पर एक अंडाकार आकार का गोला रखा जाता है, जो सारी ऊर्जा को अवशोषित करके उसे केंद्रित करता है और विकिरण उत्सर्जित करता है।

यह गोला तय करेगा कि वह पंचभूतों के किन तत्वों को केंद्रित कर सकता है और उन्हें पूरी पृथ्वी पर उन सभी लोगों तक पहुंचा सकता है जो इसकी तलाश कर रहे हैं।

उदाहरण के लिए, यदि किसी पिरामिड के केंद्र में अग्नि का गोला रखा जाए, तो वह अग्नि की आवृत्ति के बराबर विकिरण उत्पन्न करेगा जो मणिपुर चक्र को सक्रिय करेगा और इससे लोगों को पूरे शरीर में प्राण ऊर्जा का संचार करने में मदद मिलेगी।

दो अन्य विशेष गोले भी हैं जो आत्मा और चेतना से संबंधित हैं।

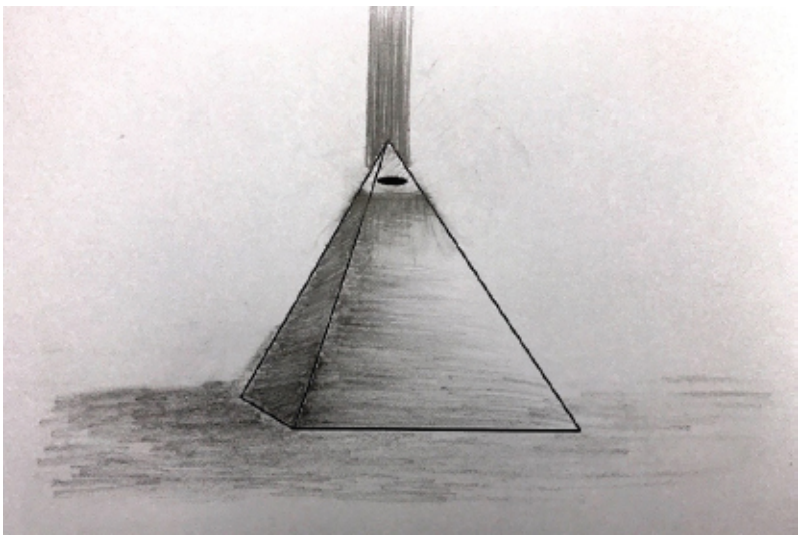

ये सात पत्थर मानव शरीर के सात चक्रों के अनुरूप हैं। जब पिरामिड से ये विकिरण भारी मात्रा में उत्सर्जित होते हैं, तो सभी मनुष्यों को इसका लाभ मिलता है क्योंकि चक्र सक्रिय हो जाते हैं, उनमें ऊर्जा का संचार होता है और वे किसी भी रोग से मुक्त हो जाते हैं।

उन्होंने विश्वभर में कई पिरामिड बनाने की अपनी योजना का प्रदर्शन किया, जो भूलोक और भुवरलोक दोनों स्थानों पर शरीर के सभी सात चक्रों को सक्रिय कर देंगे।

एक महायोगी जिसने अपने सभी चक्रों को सक्रिय कर लिया है, उसे अन्य लोकों में यात्रा करने के लिए पोर्टल खोलने में सक्षम होना चाहिए।

मानव शरीर पृथ्वी, वरुण, अग्नि, वायु और व्योम जैसे सभी तत्वों से मिलकर बना है।

आत्मा और चेतना मिलकर उसे एक पूर्ण मनुष्य बनाते हैं।

पोर्टल खुलते ही, मानव शरीर की प्रत्येक कोशिका सभी तत्वों की प्राकृतिक आवृत्ति पर कंपन करने लगती है और शरीर तत्वों के साथ एक हो जाता है। मानव शरीर विकिरण बन जाता है और पिरामिड के दूसरी ओर स्थित पोर्टल से होकर एक अन्य ग्रह में प्रवेश कर जाता है।

विश्वकर्मा को अपने शिष्य की इस संपूर्ण योजना और डिजाइन पर गर्व हुआ। प्रहलाद और इक्ष्वाकु ने अपना पूरा समर्थन दिया और कहा कि वे माया सभ्यता को उन पिरामिडों के निर्माण के लिए जितने भी पुरुषों की आवश्यकता होगी, उतने पुरुष उपलब्ध कराएंगे।

तारक का कार्यालय

तारक अपने गोदाम में दाखिल हुआ और डॉ. विश्वनाथ को सुरक्षित देखकर राहत महसूस की। उसने सोचा कि किसने इतनी हिम्मत की होगी अंदर घुसने की।

उसके मन में एक ख्याल आया; क्या किसी को उस गुप्त बक्से के बारे में पता था? फिर उसने खुद को यकीन दिलाया कि किसी को इसके बारे में पता नहीं था।

इसके बाद उन्होंने सीसीटीवी फुटेज देखने की मांग की। फुटेज देखते समय उन्होंने तीन लोगों को अंदर आते और उनमें से दो को लिफ्ट में जाते देखा। इसके बाद जो उन्होंने देखा, उससे वे दंग रह गए।

उसने देखा कि दो लोगों को लिफ्ट से बाहर निकाला गया और वे दोनों तहखाने में चले गए, फिर अलार्म बज गया और कुछ मिनटों के बाद, दो लोग बक्से को बाहर ले जाते हुए लिफ्ट से बाहर आए।

उसे आभास हुआ कि कुछ अकल्पनीय घटना घटित हुई है। वह सोचने लगा कि उन्हें उस बक्से के बारे में कैसे पता चला और किसने बताया होगा। तभी उसे एहसास हुआ कि दोरजी कान्हा की हिरासत में है और यह सब उसी का काम हो सकता है।

वह अचानक गुस्से में अपने कमरे में गया और लॉकर खोलकर देखा तो उसमें बक्सा गायब था। बाहर आकर उसने चिल्लाकर पूछा कि गेट पर पहरेदार कौन थे और वे बाहर कैसे गए।

तारक के साथ सीसीटीवी फुटेज की निगरानी कर रहा व्यक्ति आगे आया और बोला, "सर, वे बेहोश थे, आपके लिए गेट खोलने वाले गार्ड ही चोर थे। हमने फुटेज में यह देखा।"

तारक का गुस्सा हद से ज्यादा बढ़ गया था। उसने देवांत को बुलाया और उसे अपने दफ्तर ले जाकर दरवाजा बंद कर लिया।

देवांत फुटेज देख रहा था जबकि तारक ने कहा कि यह वही भारतीय अधिकारी कान्हा हो सकता है जिसने दोरजी को बंदी बनाया था। देवांत ने विवांत के हाथ में लैपिज लाजुली का पेंडेंट देखा और पुष्टि की कि वह डॉ. विश्वनाथ का पुत्र है और संभवतः कान्हा के साथ आया था और उन्होंने अनुमान के विपरीत देश नहीं छोड़ा था और लड़की सुखेशनी हो सकती है।

सेना का गुप्त शिविर

कान्हा को बक्सा मिल जाने की खुशी थी। लेकिन विवांत खुश नहीं था क्योंकि वह अपने पिता को बचाने में नाकाम रहा था।

कान्हा ने उन्हें भरोसा दिलाया कि वे डॉ. विश्वनाथ को बचा लेंगे। लेकिन पहले उन्हें उनका काम पूरा करना था, उन्हें यह जानना था कि डॉ. विश्वनाथ किस चीज की रक्षा करने की कोशिश कर रहे थे। उन्हें यह नहीं पता था कि बक्सा कैसे खोला जाए।

विवांत ने डिब्बा उठाया। जैसे ही उसका पेंडेंट डिब्बे के पास आया, डिब्बे के बीचोंबीच से नीली रोशनी निकलने लगी। उसने पेंडेंट उठाया और उसे उस जगह पर रखा जहाँ रोशनी चमक रही थी और चाबी की तरह घुमाया। क्लिक की आवाज़ आई, लेकिन कुछ नहीं हुआ। उसने कई बार पेंडेंट को बाएँ से दाएँ घुमाने की कोशिश की, लेकिन डिब्बा नहीं खुला।

उसने सुखेष्णी से उसका कंगन लाने को कहा और जब कंगन डिब्बे के पास आया, तो जिस जगह पर पेंडेंट लगा हुआ था, उसके नीचे सात छोटे छेद चमकने लगे।

इंद्रधनुष के रंगों में छेद चमकने लगे। सुखेष्णी के कंगन में विभ्योर के रंगों के पत्थर जड़े थे। विवांत ने कंगन को काटकर एक-एक करके पत्थरों को निकाला और उन्हें उनके संबंधित रंगों के छेदों में लगा दिया।

सभी पत्थरों को लगाने के बाद, उसे एक तेज़ क्लिक की आवाज़ सुनाई दी। फिर उसने मुड़कर पेंडेंट लगा दिया।

कुछ जटिल तालों की मदद से बक्सा खुला। अंदर ताड़ के पत्तों पर लिखी कुछ पुरानी पांडुलिपियाँ थीं जिन पर संस्कृत में कुछ लिखा हुआ था।

वहां एक पिरामिड का चित्र था जिसके शीर्ष से प्रकाश की किरण निकल रही थी, पिरामिड के केंद्र में एक अंडाकार आकार का गोला था और बहुत सारे ताड़ के पत्तों पर संस्कृत में कुछ लिखा हुआ था।

तारक का कार्यालय

तारक दुखी नहीं दिख रहा था, वह हो रही घटनाओं पर मुस्कुरा रहा था।

“पापा, आप क्यों मुस्कुरा रहे हैं?” हैरान देवांत ने तारक से पूछा।

“यह संदूक सही जगह पर पहुँच गया है। यह संदूक सदियों से बंद पड़ा था; अब इसे खोला जाएगा। इसके रहस्य अब आसानी से उपलब्ध हैं। अब समय आ गया है कि हम इसे अपने हाथ में लें।” तारक ने खुशी-खुशी देवांत से कहा।

Tretayuga

प्रहलाद के बाद उनके पुत्र विरोचन ने शांतिपूर्वक शासन किया और उनके बाद उनके पुत्र बलि ने। बलि एक महत्वाकांक्षी राजा थे, जिन्हें स्वयं शुक्राचार्य ने सर्वश्रेष्ठ योद्धा बनने के लिए प्रशिक्षित किया था; उनकी महत्वाकांक्षा समस्त लोकों को जीतना थी।

बाली हमेशा अपने वचन का पक्का था और अपने पिता और दादा की तरह विष्णु का कट्टर भक्त था।

विरोचना के बाद जब बाली राजा बने, तो उन्होंने पूरी सेना को पिरामिड के अंतरिक्ष द्वारों से होते हुए भूलोक ले जाकर बिना ज्यादा रक्तपात किए भूलोक पर विजय प्राप्त की। उन्होंने यह सुनिश्चित किया कि सभी लोग सुखी रहें।

इंद्र बलि की शक्ति से भयभीत थे। कैलाश पर्वत ने एक विशाल द्वार खोल दिया, जिसके माध्यम से बलि के स्वर्गलोक पर घेराबंदी करने से पहले ही पूरी सेना को स्वर्गलोक ले जाया जा सका। सत्ययुग के बाद महर्लोक में बसे नरसिंहों और अन्य मानवों से सहायता मांगने के लिए इंद्र महर्लोक गए।

सभी मानवों के राजा त्रिविक्रम नरसिम्हा ने कहा, “हम केवल अपने ग्रह की रक्षा करेंगे, हम तीनों लोकों में हस्तक्षेप नहीं करेंगे। हमने वह सब छोड़ दिया है और महार्लोक में बस गए हैं।”

इंद्र के पास विष्णु से सहायता मांगने के अलावा कोई चारा नहीं बचा था, इसलिए वे वैकुंठ गए। विष्णु ने कहा कि बलि ने किसी को हानि नहीं पहुंचाई है और वह सबके साथ न्याय कर रहा है। “यदि वह अधर्म के मार्ग पर चलेगा, तभी मैं उसे रोकूंगा।”

इंद्र ने बलि से सुलह करने की कोशिश की और उसे बहलाने-फुसलाने की कोशिश की, यह कहकर कि मानव इस वातावरण में विलासितापूर्ण जीवन व्यतीत कर रहे हैं और वह भूलोक के माध्यम से अपनी मनचाही चीजें प्राप्त कर सकता है।

दूसरी ओर, दानव सदा परिश्रम और संघर्ष में लगे रहते थे। इंद्र ने उन्हें सलाह दी कि वे दानवों को भूलोक ले आएं ताकि वे यहाँ के संसाधनों का लाभ उठा सकें।

बलि यह भूल गया था कि मानव और दानव स्वभाव से भिन्न थे और सुखपूर्वक एक साथ नहीं रह सकते थे। दानव बलवान थे, इसलिए भूलोक आने के बाद उन्होंने मानवों को सताना और उन पर प्रभुत्व जमाना शुरू कर दिया।

कुछ दिनों बाद, उन्होंने आश्रमों पर हमला करना और ऋषि मुनियों और उनके परिवारों

को नुकसान पहुंचाना शुरू कर दिया। वे विष्णु से प्रार्थना करने लगे कि वे आकर उन्हें दानवों से बचाएं।

बाली शांति बनाए रखने और ऋषि-मुनियों का विश्वास जीतने का प्रयास कर रहा था, ताकि वे यज्ञ कर सकें और ऋषियों को भूमि, रत्न और बहुमूल्य वस्तुएँ दान कर सकें, जिससे वे अपना आश्रम पुनः स्थापित कर सकें। इसी दौरान, विष्णु वामन नामक एक बौने ब्राह्मण के वेश में पृथ्वी पर आए।

बाली ने पूछा, "वामन ब्राह्मण, कृपया मुझे बताएं कि आपको क्या चाहिए।" वामन ने बाली से कहा कि वह अपना तुलाभार ग्रहण करे और जो कुछ भी वह दे सके, दे दे।

बाली वामन का तुलाभार करने के लिए सहमत हो गया। तराजू के एक तरफ महान वामन बैठे थे और बाली ने दूसरी तरफ अपना सारा सोना और रत्न भर दिया, लेकिन तराजू जरा भी नहीं हिला।

बाली ने कहा, "मैं, तीनों लोकों का राजा, अपने हाथों में पूरे भूलोक का भार तौल सकता हूँ," और तराजू को नीचे खींचने की कोशिश की। तराजू जरा भी नहीं हिला।

फिर उसने उससे कहा कि वह स्वर्ग लोक का पूरा भार अपने दाहिने पैर पर उठाएगा और उसे नीचे दबाने की कोशिश की। पैर थोड़ा सा हिल गया।

बाली को अहसास हुआ कि वह कोई साधारण व्यक्ति नहीं है। उसने उससे कहा कि वह तीनों लोकों का भार अपने ऊपर ले लेगा और वह तराजू पर बैठकर विष्णु से प्रार्थना करने लगा कि उसे ब्राह्मण की आवश्यकताओं को पूरा करने की शक्ति प्रदान करें।

फिर तराजू केंद्र में आ गया। बाली प्रसन्न हुआ और उसने विष्णु से अपना असली रूप प्रकट करने को कहा। विष्णु ने अपना असली रूप प्रकट किया। बाली ने घुटने टेककर उनके चरण छुए और उनका आशीर्वाद मांगा।

"हे प्रभु, सारा ब्रह्मांड आप में समाहित है। मैं मूर्ख था जिसने सोचा था कि मैं तीनों लोकों पर शांतिपूर्वक शासन कर सकता हूँ, लेकिन मैं जानता हूँ कि मैं बुरी तरह

असफल रहा हूँ, इसीलिए आपका आना पड़ा।" बलि ने महाविष्णु के समक्ष आत्मसमर्पण कर दिया।

"बाली, तुम सर्वोत्कृष्ट राजा हो जिसने तीनों लोकों पर शांतिपूर्वक शासन करने का प्रयास किया। परन्तु मानव और दानव अपने-अपने लोकों में अलग-अलग और सुखपूर्वक रहें।" विष्णु ने कहा और बाली को अगले मन्वंतर का इंद्र बनने का आशीर्वाद दिया।

बाली ने फैसले को स्वीकार कर लिया और विष्णु ने उसे सुतल लोक का राजा बना दिया।

अध्याय 8

सात चक्र

आश्रम

सभी योग सत्रों के समाप्त होने के कुछ घंटों बाद, गुरुजी अपने ध्यान मंदिर में ध्यान कर रहे थे, तभी कान्हा ने उनका अभिवादन किया।

"वे बच्चे कहाँ हैं? मैं तुम तीनों का इंतज़ार कर रहा था। उन्हें लाओ और पुस्तकालय वाले हिस्से में मुझसे मिलो," गुरुजी ने कान्हा को आदेश दिया।

कान्हा यह जानकर हैरान रह गया कि गुरुजी को इस बारे में कैसे पता चला। लेकिन उसने गुरुजी के निर्देशों का पालन किया और विवांत और सुखेशनी को पुस्तकालय ले गया।

"क्या मैं डिब्बा देख सकता हूँ?" गुरुजी ने मुस्कुराते हुए पूछा। सभी लोग यह देखकर हैरान रह गए कि गुरुजी को इसके बारे में कैसे पता चला।

"तुम्हें उस डिब्बे के बारे में कैसे पता चला?" सुखेष्णी ने अपनी जिज्ञासा को रोक न पाने के कारण पूछा।

“किसी ने मुझे आपके आने की सूचना दे दी है, लेकिन इस बारे में हम बाद में बात करेंगे,” गुरुजी ने उनसे कहा।

गुप्त संदूक में मिली चीज़ों को देखकर गुरुजी चकित रह गए। उन्होंने कहा, "ये ताड़ के पत्तों पर लिखे शिलालेख हजारों साल पुराने हैं।"

इन शिलालेखों में कैलाश पर्वत को माया नामक प्राचीन वास्तुकार द्वारा निर्मित एक पिरामिड के रूप में वर्णित किया गया है। कैलाश पर्वत भूलोक का सबसे बड़ा पिरामिड है, जो हिमालय में भलीभूत रूप से छिपा हुआ है।

वास्तुकार का कहना है कि यह स्थान देवताओं के शहर, स्वर्गलोक और अन्य ग्रहों और तारामंडलों की ओर जाता है।

कई मान्यताओं में कैलाश को स्वर्ग की सीढ़ी के रूप में जाना जाता है। माया कहती है कि स्वर्ग का द्वार केवल एक महायोगी ही खोल सकता है जिसने अपने सभी चक्रों को सक्रिय कर लिया हो।

आदियोगी शिव द्वारा कभी धारण की गई शक्तियों का प्रयोग कौन कर सकता है? केवल वही अन्य लोकों के द्वार खोलने के लिए एक आवृत्ति उत्पन्न कर सकते हैं।

ऐसा लिखा है कि पिरामिड के चारों फलक क्रिस्टल, माणिक, सोने और नीलमणि से बने हैं। नीलमणि वाले हिस्से में एक दरवाजा है जिसे खोला जा सकता है। एक महायोगी इस दरवाजे को खोलकर पिरामिड के अंदर प्रवेश कर सकता है।

पिरामिड की ऊर्जा को केंद्रित और निर्देशित करने की आवश्यकता है:

जो व्योमा में जन्म लेता है

जो आया और पृथ्वी को स्पर्श किया

जिसने अग्नि प्रज्वलित की

जो जल से आकारित होता है

जो वायु से अविचलित हो

जिसकी आत्मा स्वयं शिव है

गुरुजी ने कहा, "हमें यह जानना होगा कि यह क्या है और इस पहेली को सुलझाना होगा।"

सभी को आश्चर्य हो रहा था कि स्क्रिप्ट किस बारे में बात कर रही है और वे गुरुजी से जवाब की उम्मीद कर रहे थे, लेकिन उन्हें भी इसे सुलझाने के लिए कुछ समय चाहिए था क्योंकि फिलहाल उन्हें खुद भी इसका कोई अंदाजा नहीं था।

"वह कौन है जो इस ऊर्जा को निर्देशित कर सकता है, क्या इसे केवल शिव ही खोल सकते हैं, जैसे उन्होंने पृथ्वी पर गंगा के प्रवाह को नियंत्रित और निर्देशित किया था?" सुखेष्णी ने पूछा।

गुरुजी ने कहा, "निश्चित रूप से इसमें लिखा है कि आत्मा शिव की है, लेकिन इसके अलावा भी कई और बातें हैं जिनका सत्य होना आवश्यक है।"

“ठीक है, चलिए एक-एक करके देखते हैं। व्योमा में क्या जन्म लेता है?” विवांत ने पूछा।

गुरुजी ने कहा, "अंतरिक्ष तारों, ग्रहों, क्षुद्रग्रहों, उल्काओं से भरा हुआ है और पृथ्वी को छूने वाली एकमात्र चीज उल्का ही है।"

"यह बात समझ में आती है, उल्कापिंड गिरने से गर्मी के कारण कभी-कभी जंगल में आग लग सकती है, है ना?" सुखेष्णी ने पूछा।

“हां, लेकिन जल से क्या आकार लेता है?” विवांत ने आश्चर्य व्यक्त किया।

“अब मुझे समझ आ गया!” गुरुजी ने कहा।

“What is it Guruji?” asked Sukheshni.

पृथ्वी पर गिरने वाले उल्कापिंड कई वर्षों की अवधि में सरस्वती नदी में लिंग के

आकार में ढल जाते हैं। वर्तमान युग में भी, नर्मदा नदी में पाए जाने वाले लिंग इसी प्रकार निर्मित होते हैं। शिवलिंग वायु द्वारा गतिमान नहीं होता और उसमें स्वयं शिव की आत्मा समाहित होती है।

गुरुजी ने समझाया, "शायद शिवलिंग को पिरामिड के केंद्र में स्थापित करने की आवश्यकता है ताकि प्रवेश द्वार सफलतापूर्वक खुल सके।"

ताड़ के पत्तों पर लिखे ग्रंथों की आगे की जांच करने पर गुरुजी ने खुलासा किया, "इसमें उल्लेख किया गया है कि जो व्यक्ति पोर्टल खोल सकता है, वह अग्नि, पृथ्वी, आकाश, जल और वायु की आवृत्तियों का उत्सर्जन कर सकता है और शरीर में ऊर्जा का विकिरण करने के लिए ऐसी किसी भी आवृत्ति का उत्सर्जन करने के लिए इसका उपयोग किया जा सकता है।"

ये विकिरण सभी लोगों के चक्रों को सक्रिय करने में सहायक हो सकते हैं। एक महायोगी मंत्रों का जाप करके ऐसी आवृत्तियाँ उत्पन्न कर सकता है जो इस गोले द्वारा उत्पन्न आवृत्तियों से मेल खाती हों, जिससे ताराद्वार खुल जाता है और लोग किसी भी लोक की यात्रा कर सकते हैं।

इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि प्राचीन काल में इतने सारे योगी थे जिन्होंने अपने सभी चक्रों को सक्रिय किया था।

विवांत ने पूछा, “ये चक्र क्या हैं? क्या ऐसे पत्थर हैं जो पांचों तत्वों की आवृत्तियाँ उत्सर्जित कर इन चक्रों को सक्रिय कर सकते हैं?”

“मेरे बच्चे, सात चक्र होते हैं और प्रत्येक व्यक्ति को उन्हें सक्रिय करने का प्रयास करना चाहिए।”

वे पांच तत्व जिनसे समस्त सृष्टि प्रकट हुई है और उनकी शक्ति रीढ़ की हड्डी में स्थित 'चक्रों' के माध्यम से प्राप्त की जा सकती है।

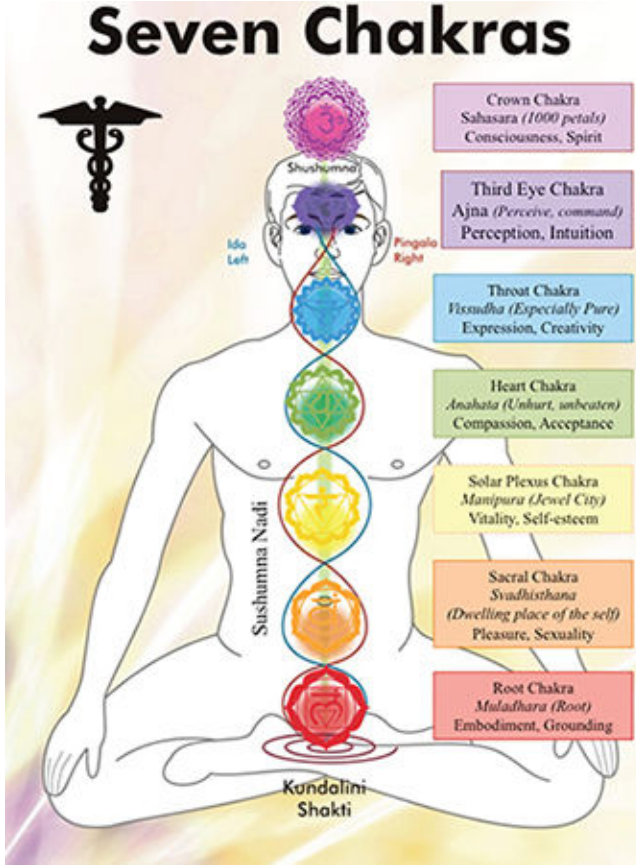

चक्र सूक्ष्म शरीर में ऊर्जा केंद्र होते हैं, जो रीढ़ की हड्डी के पांच स्थानों और मस्तिष्क के दो स्थानों से संबंधित होते हैं। प्रत्येक चक्र में कुछ शक्तिशाली गुणों को जागृत करने की क्षमता होती है।

इस पेंडेंट पर मौजूद सात पत्थर या उस ब्रेसलेट के सात पत्थर जिन्हें आपने खोलने के लिए इस बॉक्स में डाला है, सात चक्रों का प्रतिनिधित्व करते हैं।

• लाल पत्थर मूलाधार चक्र या रूट चक्र का प्रतीक है। इसके सकारात्मक गुण हैं अच्छी शारीरिक ऊर्जा और स्फूर्ति। यह पीठ के निचले हिस्से, रीढ़ की हड्डी के निचले भाग, गुर्दे और मूत्राशय के कार्यों को नियंत्रित करता है। यह पृथ्वी तत्व का संकेत

देता है।

• नारंगी पत्थर स्वाधिष्ठान या त्रिकास्थि चक्र का प्रतीक है और लचीलेपन और प्रवाह से युक्त होता है। इसका संबंध श्रोणि और प्रजनन अंगों से है। यह जल तत्व का संकेत देता है।

• पीला पत्थर मणिपुर चक्र या सौर जाल चक्र का प्रतीक है। यह पाचन अंगों, पेट, अग्न्याशय, यकृत, पीठ के मध्य भाग और मांसपेशियों को नियंत्रित करता है। यह शक्ति और ऊर्जा प्रदान करता है। यह अग्नि तत्व का संकेत देता है।

• हरा पत्थर अनाहत या हृदय चक्र का प्रतीक है। यह हृदय तंत्रिका, थाइमस ग्रंथि, स्तन, भुजाओं, कंधों, छाती, फेफड़ों और हृदय से संबंधित है। यह सभी के प्रति प्रेम, सहानुभूति और करुणा का प्रतीक है। यह वायु तत्व का भी संकेत देता है।

• नीला पत्थर विशुद्ध या कंठ चक्र का प्रतीक है। यह तालू, ग्रसनी, जीभ, जबड़े और मुख से संबंधित है। यह स्वयं पर विश्वास, दूसरों पर भरोसा और रचनात्मकता का प्रतीक है। यह व्योम या अंतरिक्ष तत्व को भी इंगित करता है।

• इंडिगो पत्थर आज्ञा चक्र या तृतीय नेत्र चक्र का प्रतीक है। इसका पीनियल ग्रंथि से गहरा संबंध है। यह भावनाओं, श्रवण और दृष्टि से जुड़ा है। यह आपके आंतरिक ज्ञान, प्रेरणा और आपके सच्चे उद्देश्य के निर्माण में सहायक है। यह प्रकाश तत्व या आत्मा का प्रतीक है।

• बैंगनी पत्थर सहस्रार या क्राउन चक्र का प्रतीक है। यह आपको ब्रह्मांड से जोड़ता है। इसका संबंध मस्तिष्क के कॉर्टेक्स से है।

क्राउन चक्र की ऊर्जा आपको हर चीज के साथ रहस्यमय एकात्मता का अनुभव कराती है। इसमें शांति, आनंद और प्रसन्नता निहित है। यह आपको उन अन्य वास्तविकताओं की झलक देती है जो आपकी भौतिक और सांसारिक वास्तविकता से परे हैं। यह विचार तत्व या चेतना का सूचक है।

यह चक्रों का संक्षिप्त परिचय है। इन्हें योग और ध्यान जैसी कई विधियों से सक्रिय

किया जा सकता है। आप पुस्तकालय में इनके बारे में और अधिक पढ़ सकते हैं।

विवांत ने गुरुजी से पूछा, "लेकिन वे अंडाकार पत्थर कौन से हैं जो इसे और अन्य ग्रहों के लिए अंतरिक्ष पोर्टल द्वार को सक्रिय कर सकते हैं?"

गुरुजी ने कहा, "मुझे पुस्तकालय में इसे खोजने के लिए कुछ समय चाहिए।"

सुखेशनी ने कहा, "मैं भी मदद कर सकती हूं, लेकिन मुझे एक लैपटॉप चाहिए ताकि मैं इंटरनेट पर उनके बारे में खोज कर सकूं।"

“चलिए नाश्ता कर लेते हैं और फिर यह शोध करते हैं। हम पुस्तकालय और इंटरनेट पर इसके उत्तर खोजने का प्रयास करेंगे,” गुरुजी ने कहा।

कुछ समय बाद, सभी लोग उन प्रकाशमान पिंडों के बारे में अधिक जानने के लिए शोध करने लगे। थोड़ी देर बाद, सुखेष्णी ने बताया कि उसे कुछ मिला है और उसने उस पर अध्ययन किया है। उसने सबको बुलाया और अपने सिद्धांत के बारे में बताया।

"मुझे ऐसा लगता है कि ये वे शिवलिंग हैं जिन्हें आदियोगी शिव की तपस शक्ति द्वारा जीवंत किया गया था, जो पंचभूतों की आवृत्तियों का उत्सर्जन कर सकती हैं।"

ये पांचों शिवलिंग, जिन्हें सर्वप्रथम स्थापित किया गया था, एक ही देशांतर यानी 79° पूर्व में स्थित हैं।

पृथ्वीलिंग जो मूलाधार चक्र को सक्रिय कर सकता है वह कांचीपुरम में है और लिंग एकम्बरेश्वर है।

स्वाधिष्ठान चक्र को सक्रिय करने वाला जलालिंग तिरुवनैकवल में है और लिंग जम्बुकेश्वर है।

अग्निलिंग जो मणिपुर चक्र को सक्रिय कर सकता है वह तिरुवन्नमलाई में है और लिंग अरुणाचलेश्वर है।

अनाहत चक्र को सक्रिय करने वाला वायुलिंग कालहस्ती में है और लिंग

श्रीकालहस्तेश्वर है।

मूलाधार चक्र को सक्रिय करने वाला आकाशलिंग चिदम्बरम में है और लिंग नटराज है।

लेकिन मुझे अन्य दो लिंगों के बारे में यकीन नहीं है जो आज्ञा चक्र को उत्तेजित कर सकते हैं, जो बदले में हमारी आत्मा को सक्रिय और ठीक कर सकता है, और सहस्र चक्र जो हमारी चेतना को सक्रिय और ठीक करता है।"

गुरुजी ने आगे समझाया, "वह लिंग जो हमारी चेतना को ऊर्जा प्रदान कर सकता है, हमारे पंचभूतों, आत्मा और चेतना को अन्य लोकों और अंतरिक्ष में अन्य ग्रहों और तारामंडलों तक यात्रा करने की अनुमति दे सकता है।"

विवांत ने कहा, "मैंने एक कहानी सुनी है जिसमें शिव ने अपना आत्मलिंग रावण को दे दिया था और उसे गणेश जी ने गोकर्ण में स्थापित किया था।"

“जी हां, शायद यही वह शिवलिंग है जो आज्ञा चक्र को सक्रिय कर सकता है। लेकिन आखिरी शिवलिंग कहां छिपा है, यह तो सिर्फ शिव ही जानते हैं। हजारों शिवलिंग हैं। हम उसे कहां ढूंढेंगे?”

गुरुजी ने बताया, "केवल वही महायोगी जो तपस्या या योग द्वारा सभी चक्रों को सक्रिय कर चुके हों, कैलाश पोर्टल को सक्रिय कर सकते हैं और तारक ऐसे ही एक व्यक्ति हैं।"

"तुम्हें यह कैसे पता चला?" विवांत ने आश्चर्य से पूछा।

“बीस साल पहले, हम सभी एक महायोगी के शिष्य थे, जहाँ हमने कैलाश पर्वत के पास सप्तऋषि गुफा में अपने चक्रों को सक्रिय किया था। उस समय हम तीन लोग थे - मैं, तारक और मेरे प्रिय मित्र, डॉ. विश्वनाथ,” गुरुजी ने कहा।

विवांत ने हैरानी से कहा, “पापा!!! आप मेरे पापा को जानते हैं?”

गुरुजी आश्चर्यचकित होकर बोले, "आप डॉ. विश्वनाथ को जानते हैं?"

“जी हां, ये मेरे पिता हैं। हम इनकी तलाश कर रहे थे और अब पता चला है कि तारक ने इन्हें बंदी बना रखा है। आपने कहा था कि आप सब एक-दूसरे को जानते हैं, लेकिन उसने इन्हें इस बक्से के लिए बंदी बनाया है,” विवांत गुरुजी से जवाब ढूंढ रहा था।

गुरुजी ने आह भरी! “तारक ऐसा व्यक्ति है जो अपनी इच्छा पूरी करने के लिए कुछ भी कर सकता है। अब मैं आपको बताता हूँ कि मुझे कैसे पता चला कि आप लोग बक्सा लेकर आएँगे। तारक आज सुबह यहाँ आया था और उसने कहा कि आप लोगों ने उससे बक्सा चुराया है और अगर आप उसे वापस नहीं करेंगे, तो वह इस आश्रम को नष्ट कर देगा और चीनी सरकार को बता देगा कि कान्हा अभी भी गुप्त रूप से काम कर रहा है। उसके पास सीसीटीवी फुटेज है जिसमें दिखाया गया है कि कान्हा कैसे उसकी इमारत में घुसा और यह गुप्त बक्सा ले गया। अगर वह इसे सार्वजनिक कर देता है, तो सीमा पर तनाव पैदा हो जाएगा।”

विवांत ने मुट्ठी पीटते हुए कहा, “हम यह जानकारी तारक को कैसे दे सकते हैं? अगर यह गलत हाथों में पड़ गई, तो पृथ्वी खतरे में पड़ सकती है। अगर किसी तरह तारक दूसरे ग्रहों और तारामंडलों के लिए पोर्टल खोल देता है, तो परग्रही आकर हम पर हमला कर सकते हैं। यह सुरक्षित नहीं है, लेकिन इससे तारक को क्या मिलेगा? उसका इरादा क्या है? वह क्या हासिल करना चाहता है?”

गुरुजी ने शांत भाव से कहा, “मुझे खेद है, मुझे भी इस बात की जानकारी नहीं है, मेरे बच्चे। मुझे पता है कि इस बक्से को पाने के लिए आप लोगों ने बहुत मेहनत की है और इसे किसी खतरनाक व्यक्ति के हाथ में नहीं देना चाहते, लेकिन भारत की राष्ट्रीय सुरक्षा के हित में हमें ऐसा करना होगा। हमें महान राजा महा बलि से सीख लेनी चाहिए, जिन्होंने संकट की घड़ी में अपनी सारी कमाई त्याग दी थी।”

“वह इस बक्से का बीस साल से इंतज़ार कर रहा है और इसे पाने के लिए कुछ भी करने को तैयार है। इसलिए, हम डॉ. विश्वनाथ की रिहाई के बदले यह बक्सा उन्हें सौंप सकते हैं।” कान्हा ने गुरुजी से पूछा कि अगर वे यह सौदा कर लें, तो बक्से का मामला बाद में देख लेंगे।

“अच्छा विचार है, मैं तारक से इस बारे में बात करने की कोशिश करूंगा और अपने

प्यारे पुराने दोस्त को वापस लाऊंगा।" गुरुजी ने कान्हा और विवांत को आश्वासन दिया।

"तब तक, मैं तारक को इसे सुरक्षित रूप से सौंपने की व्यवस्था करने की कोशिश करूंगा। गुरुजी, कृपया तब तक हमें स्थान बता दें," कान्हा ने कहा।

गुरुजी अपने कमरे में टेलीफोन पर बात करते हुए वापस आ गए।

"तारक हमारी मांगें मान गया है और उसने कहा है कि आप लोग उस जगह जाएं जहां उसका हेलीपैड है। वह डॉ. विश्वनाथ के साथ वहां आएगा। उसने मुझे यह बताने को कहा है कि आप लोगों को आधी रात को ठीक 12 बजे आना होगा," गुरुजी ने कान्हा को बताया।

"मेरी बच्ची, तुम यहीं रह सकती हो और अंतिम लिंग की खोज के लिए अपना शोध जारी रख सकती हो, अगर तुम्हें किसी भी मदद की जरूरत हो तो मैं तुम्हारे साथ रहूंगा," गुरुजी ने सुखेशनी को आश्वासन दिया।

कान्हा ने सुखेशनी को गुरुजी के साथ रहने के लिए कहा। कान्हा और विवंत बक्सा लेकर तारक द्वारा सुझाई गई मुलाकात के लिए निकल पड़े।

तारक का कार्यालय

"वे हेलीपैड के पास बक्सा लेकर आ रहे हैं, अपनी टीम को ले जाओ। वे बक्से के बदले डॉ. विश्वनाथ को ला रहे हैं। बक्सा ले आओ और अपने लड़कों को कहो कि उन सबको खत्म कर दें।" तारक ने फोन पर देवांत को निर्देश दिया।

"एक बार जब हमें वह बॉक्स मिल जाता है, तो उन्हें यूं ही मार डालने और इसके बारे में बड़ी खबर बनाने का कोई कारण नहीं है," देवांत ने कहा।

"क्या तुम्हें लगता है कि कान्हा इतना मूर्ख है कि वह तुम्हें आसानी से बक्सा अपने साथ ले जाने देगा?" तारक ने कहा।

देवंत ने बीच में टोकने की कोशिश की, "लेकिन पिताजी!" तारक ने उसे चुप करा

दिया और कड़े शब्दों में कहा, "बस जैसा मैं कहता हूँ वैसा करो।"

देवांत उस जगह गया जहाँ डॉ. विश्वनाथ को रखा गया था। वह उनसे मिलने कभी उस जगह नहीं गया था।

जब भी देवांत ने कैमरों से देखा, डॉ. विश्वनाथ ने अपना मुंह नहीं खोला और चाहे उन्हें कितना भी प्रताड़ित किया गया हो, उन्होंने कभी कोई भाव नहीं दिखाया। वे हमेशा शांत रहे।

देवांत कमरे के अंदर गया और पहरेदारों से उसे कुर्सी से खोलने के लिए कहा। देवांत डॉक्टर विश्वनाथ के पास गया। उसे उनके हाव-भाव समझ नहीं आए। डॉक्टर विश्वनाथ चिंतित नहीं लग रहे थे। वे कुछ कहना चाहते थे, लेकिन उनका मुंह प्लास्टर से बंद था और हाथ पीछे बंधे हुए थे।

जैसे ही वह पास आया, डॉ. विश्वनाथ की आँखों से आँसू बहने लगे। देवंत को इसकी परवाह नहीं थी। उसने कहा, "खुश रहो कि आज तुम यहाँ से मुक्त होने वाले हो।" देवंत को डॉ. विश्वनाथ के लिए दुख हुआ क्योंकि दो दशकों तक जेल में रहना आसान नहीं था।

देवांत ने उसे सुरक्षा गार्डों की ओर धकेला और उन्हें जीप में ले जाने का निर्देश दिया। डॉ. विश्वनाथ नम आँखों से पीछे मुड़े और देवांत की ओर देखा। गार्ड उन्हें जीप में ले गए, देवांत जीप में बैठ गया और हेलीपैड की ओर चल पड़ा।

हेलीपैड के पास

कान्हा और विवांत वहां तारक का इंतजार कर रहे थे। तभी देवांत डॉ. विश्वनाथ के साथ वहां आ गए।

कान्हा बक्सा लेकर आगे आया और देवांत से डॉ. विश्वनाथ को रिहा करने को कहा, जो अभी भी रो रहे थे लेकिन बक्सा एक आदमी के पास देखकर और उसे खुला देखकर सदमे में थे।

डॉक्टर विश्वनाथ चिंतित थे; वे तारक का इरादा जानते थे। विश्वनाथ कान्हा को इसे न सौंपने के लिए समझाने की कोशिश कर रहे थे। कान्हा उनकी चिंता समझ गया था लेकिन उसने उनकी बात अनसुनी कर दी।

देवांत ने गार्डों से डॉ. विश्वनाथ को छोड़ने का अनुरोध किया और बक्सा लेने के लिए कान्हा की ओर बढ़ा। डॉ. विश्वनाथ आगे बढ़े और देवांत अपने पिता की ओर आ गया।

जैसे ही देवांत ने बक्सा उठाया, उसने अपनी टीम को इशारा किया कि बक्से की जाँच पूरी होते ही फायरिंग शुरू कर दें। विवांत उत्साह से अपने पिता के पास गया और उन्हें गले लगा लिया और बोला, "पिताजी! मैं हूँ विवांत, आपका छोटा बेटा।" डॉ. विश्वनाथ यह देखकर खुश हुए कि कम से कम वे अपने एक बेटे की बाहों में तो हैं।

विवांत ने उसे खोलना शुरू किया और उसके मुंह से प्लास्टर हटा दिया। जब सब लोग व्यस्त थे, तब ल्हावांग और उसके साथी, जो आसपास मंडरा रहे थे, अपने छिपने के स्थानों से बाहर आने लगे।

डॉक्टर विश्वनाथ ने विवांत को बताया कि वह बक्सा बहुत महत्वपूर्ण है और उसे तारक के हाथों में नहीं पड़ने देना चाहिए, वरना वह धरती पर तबाही मचा देगा। विवांत को कुछ समझ नहीं आया। विश्वनाथ ने एक और बात कही जिससे विवांत हिल गया। "जाओ अपने भाई को रोको!" विवांत चिल्लाया। "भाई?" "जी हाँ, वह तुम्हारा बड़ा भाई है, वेदांत, उसे यह बात पता नहीं है," डॉक्टर विश्वनाथ ने कहा।

कान्हा वापस आया और उन्हें सुरक्षित स्थान पर ले जाने की कोशिश कर रहा था। देवांत जीप में बैठा था और उसने अपनी टीम को उन्हें खत्म करने का निर्देश दिया।

ल्हावांग और उसके साथियों ने देवांत की टीम पर गोलीबारी शुरू कर दी। ल्हावांग और उसके साथियों की अचानक हुई गोलीबारी से देवांत घबरा गया। देवांत ने तुरंत अपने ड्राइवर को जीप चलाने का आदेश दिया और अपने गार्डों की सुरक्षा में भाग निकला।

जब देवांत की टीम का एक गार्ड उन पर गोली चला रहा था, तभी विश्वनाथ ने देखा कि विवांत की तरफ से कोई विवांत पर गोली चला रहा है।

विश्वनाथ ने उसे किनारे कर दिया और विवांत के लिए आई गोलियां खुद पर ले लीं। ल्हावांग ने तुरंत उस व्यक्ति को गोली मार दी। विवांत की दुनिया एक पल के लिए थम गई। वह चिल्लाया, “पिताजी! पिताजी! आपने ऐसा क्यों किया?” वह रोने लगा।

डॉ. विश्वनाथ मुस्कुराए और बोले, "लगता है मैं पहले ही एक बेटे को खो चुका हूं, दूसरा खोना नहीं चाहता था।"

विवांत ने कहा, "आपको कुछ नहीं होगा, हम आपको अस्पताल ले जाएंगे।"

कान्हा, विवांत और ल्हावांग विश्वनाथ को जीप में बिठाकर चिकित्सा सहायता लेने के लिए तेजी से रवाना हो गए।

विवांत की आंखों से आंसू बहने लगे। अपने पिता का हाथ पकड़कर उसने विनती की, "कृपया मुझे फिर कभी छोड़कर मत जाना।"

“मेरे बच्चे, मेरा समय आ गया है, कृपया अपनी माँ का ख्याल रखना और मेरी ओर से उनसे माफी मांग लेना।” विश्वनाथ ने अपनी धुंधली आँखों से विवांत को देखने की बहुत कोशिश की।

पर्याप्त सुरक्षा व्यवस्था न करने पर ल्हावांग ने खुद को कोसते हुए कहा, "कान्हा, मुझे माफ़ करना, हवाई मार्ग से मदद लाना बहुत जोखिम भरा था। आपके द्वारा सूचना दिए जाने के बावजूद भी मैं बस इतना ही इंतज़ाम कर पाया।"

“अधिकारियों, खुद को दोष मत दीजिए, आप लोग नहीं जानते कि आप किसके खिलाफ खड़े हैं। तारक के लिए, उस रहस्य को हासिल करना ही उसका एकमात्र लक्ष्य रहा है। उसने मेरे ही बेटे को मेरे खिलाफ प्रशिक्षित किया है,” विश्वनाथ ने अपने गोली के घावों से बहते खून के बावजूद, असहनीय दर्द के बावजूद कहा।

कान्हा ने न चाहते हुए भी पूछा, “महोदय, मुझे यह प्रश्न अभी पूछने के लिए खेद है, लेकिन क्या आपने ताड़ के पत्तों पर खुदे हुए शिलालेखों को समझा? वह शिवलिंग कौन सा है और वह कहाँ स्थित है?”

विश्वनाथ ने कहा कि आखिरी बार इसके बारे में किसी को तब पता चला था जब श्री कृष्ण ने दानवों से पृथ्वी को बचाने के लिए इसे छिपाया था। विश्वनाथ ने विवांत की ओर मुड़कर कहा, "लगता है तुम लोगों ने इसका अधिकांश हिस्सा पहले ही समझ लिया है।"

विवंत ने कहा, "आपके दोस्त लेफ्टिनेंट पोनप्पा की बेटी सुखेशनी ने इसे डिकोड करने में हमारी मदद की।"

शरीर पर कपड़ा कसकर बांधने के बावजूद भी खून बहना रोकना मुश्किल था। विश्वनाथ योगी थे, इसलिए उन्होंने थोड़ी देर और कोशिश की।

“बेटा, लगता है मेरा समय आ गया है। ये सब बातें अपनी माँ को मत बताना। उन्हें फिर से अपने पति के बिछड़ने का दुख सताएगा। हमें उनके दबे हुए दर्द को कुरेदना नहीं चाहिए। तुम उनका अच्छे से ख्याल रखना। मुझसे वादा करो कि तुम अपने भाई को तारक के चंगुल से बचाओगे। अपनी माँ को उनका बड़ा बेटा लौटा दोगे जिसे मैंने उनसे छीन लिया था। मेरी आखिरी इच्छा पूरी करना,” डॉ. विश्वनाथ ने अपने बेटे से वादा लिया।

विवांत रोते हुए बोला, “नहीं पापा, आपको कुछ नहीं होगा। मैं आपको बचा लूंगा।”

विश्वनाथ ने कहा, “मुझे खेद है पुत्र; मैं तुम्हारे बचपन में तुम्हारे साथ नहीं रह सका, लेकिन सौभाग्य से मृत्यु के समय तुम मेरे साथ हो।” उन्होंने अपनी आँखें बंद कर लीं और उनकी आत्मा शांतिपूर्वक उच्चतर लोकों की ओर प्रस्थान कर गई।

विवांत का रोना थमने का नाम नहीं ले रहा था। उसे समझ नहीं आ रहा था कि उसे अपने ही भाई पर गुस्सा करना चाहिए जिसने उसके पिता की हत्या का आदेश दिया था या उस पर दया करनी चाहिए क्योंकि वह उसे जानता ही नहीं था।

कान्हा ने उसे सांत्वना देने की कोशिश की और कहा, "विवांत, खुद को संभालो। तुम्हारे पिता को उचित अंतिम संस्कार मिलना चाहिए, उन्होंने देश के लिए शहादत दी है।"

हम भारतीय सरकार के समक्ष यह मामला उठाएंगे कि यात्रा के दौरान आपका अपहरण कर लिया गया था और हमें डॉ. विश्वनाथ मृत मिले और हम यह अनुरोध करेंगे कि आप लोगों को भारत वापस भेज दिया जाए।

मुझे लगता है कि अधिकारी ल्हावांग तिब्बती सरकार से बात करने में हमारी मदद कर सकते हैं।"

कान्हा ने फोन करके गुरुजी को घटना की जानकारी दी और सुखेशनी को ल्हावांग के कार्यालय भेजने का अनुरोध किया।

“मेरे मित्र विश्वनाथ के साथ जो हुआ, उसे सुनकर बहुत दुख हुआ। लेकिन यही जीवन का नियम है। क्या विश्वनाथ को लिंग के बारे में पता था?” गुरुजी ने अपना शोक व्यक्त करने के बाद पूछा।

“बिल्कुल नहीं, लेकिन उन्होंने श्री कृष्ण की ओर इशारा किया कि उन्होंने पृथ्वी को दानवों से बचाने के लिए इसे कहीं छिपा दिया था।” गुरुजी के प्रश्न का उत्तर देते हुए कान्हा ने कॉल काट दिया।

ल्हावांग ने विवांत, सुखेशनी और डॉ. विश्वनाथ के शव को भेजने के लिए आवश्यक व्यवस्था की।

सिरखा

सीमा के दूसरी ओर कर्नल वीरप्रताप ने नम आँखों से उनका स्वागत किया और विवांत को गले लगाकर उन्हें सेना के बेस कैंप ले गए। कर्नल ने विवांत से पूछा, "क्या तुम अपने पिता के अंतिम संस्कार के लिए अपनी माँ को बुलाना चाहते हो?"

“नहीं, मेरे पिताजी की यही अंतिम इच्छा थी कि इस बारे में माँ को कुछ न बताया जाए। वे माँ के 20 साल पुराने दर्द को कुरेदना नहीं चाहते थे। चलिए आज पिताजी का अंतिम संस्कार करते हैं,” विवांत ने कहा।

“कान्हा जल्द ही यहाँ आ जाएगा। उसने मिशन रद्द कर दिया है और वापस लौट आया

है, जो उसे पहले ही कर देना चाहिए था, लेकिन तुम लोगों की वजह से वह रुका रहा," कर्नल ने विवांत से कहा।

कान्हा वापस आ गया और योजना के अनुसार सभी लोग गए और परिवार की रीति-रिवाजों के अनुसार डॉ. विश्वनाथ का अंतिम संस्कार किया। कान्हा जानता था कि विवांत बहुत दुखी है। इसलिए, वह उसे सेना शिविर के एक कमरे में ले गया।

विवांत फिर से रोने लगा, "सब कुछ खत्म हो गया, मेरे पिता ने मेरी बाहों में दम तोड़ दिया और मैं कुछ नहीं कर सका।"

कान्हा ने कहा, "मैं तुम्हें श्री रामचंद्र और हनुमान की कहानी सुनाता हूँ। हनुमान श्री राम के इतने रक्षक थे कि मृत्यु के देवता यम ने भी राम के पृथ्वी पर रहने का समय समाप्त होने पर उन्हें अपने साथ ले जाने का साहस नहीं किया।"

एक दिन राम की अंगूठी महल के अंदर एक गड्ढे में गिर गई। राम ने हनुमान से अंगूठी लाने को कहा। हनुमान अंगूठी की खोज में निकले और उन्हें एक गड्ढा दिखाई दिया।

वह मधुमक्खी के आकार का छोटा हो गया और उस छेद में प्रवेश कर गया और अंततः पाताल लोक में पहुँच गया, जो एक भूमिगत शहर था जिस पर अहिरावण का शासन था और जिसकी रक्षा मकरध्वज करता था।

जब हनुमान जी पाताल लोक की ओर जा रहे थे, तभी मकरध्वज नामक एक सरीसृप ने उन्हें रोक लिया। हनुमान जी ने पूछा, "तुम कौन हो?" सरीसृप जी ने कहा, "मैं हनुमान जी का पुत्र हूँ।" हनुमान जी ने उत्तर दिया, "मैं हनुमान जी हूँ, मैं ब्रह्मचारी हूँ, मेरी कोई पत्नी नहीं है और मेरे कोई संतान नहीं है।"

मकरध्वज ने कहा, "मैं मकर माता का पुत्र हूँ। जब आपने पूरी लंका को जलाया, तो आपकी ऊष्मा और ऊर्जा से आपके पसीने की बूँदें सागर में गिरीं। उसी से मेरी माता, मकर माता के गर्भ से एक अंडा निकला। इस प्रकार, मैं आपकी शक्ति से परिपूर्ण हूँ। मुझे क्षमा करें कि मैंने आपको रोका। क्या मैं पूछ सकता हूँ कि आप किसलिए आए हैं?"

हनुमान ने पूछा, "इस भूमिगत शहर का शासक कौन है और आप यहां कैसे आए?"

मकरध्वज ने कहा, “यहाँ महा रावण के भाई अहिरावण का शासन है, जिसे श्री राम ने लंका के तट पर लौटते समय पाया और वहीं उसने मुझे मार डाला। उसने मुझे प्रशिक्षित किया और मुझे इस स्थान का संरक्षक बनाया।”

हनुमान ने कहा, “ठीक है, मैं उनसे मिलने का इरादा रखता हूँ। प्रभु श्री राम की अंगूठी पाताल में गिर गई थी और मैं उसकी तलाश में आया हूँ।”

हनुमान ने अहिरावण से मुलाकात की और अपने आने का कारण बताया। अहिरावण मुस्कुराया और बोला, "तो, यह सच है?" हनुमान ने पूछा, "क्या सच है?"

अहिरावण ने पूछा, “ठीक है, अंगूठी दिखाने से पहले मैं श्री राम और उनकी महानता के बारे में जानना चाहता हूँ। उन्होंने ही मेरे भाई, महान रावण को हराया था।” हनुमान ने श्री राम की महानता के बारे में बताया।

अहिरावण ने हनुमान को वह कमरा दिखाया जहाँ अंगूठी गिरी थी। हनुमान ने अंगूठियों का एक विशाल ढेर देखा और पूछा, “ये सभी अंगूठियाँ एक जैसी हैं, इनमें से श्री राम की अंगूठी कौन सी है?”

अहिरावण ने कहा, “ये सभी श्री राम के हैं। इस स्थान के बारे में एक कहानी प्रचलित है और मुझे आज पता चला कि यह सच है।”

हनुमान ने पूछा, "कहानी क्या है?"

अहिरावण ने कहा, "प्रत्येक अवरोही त्रेतायुग के अंत में, एक वानर अंगूठी की खोज में आता है और उसका स्वामी भूलोक से प्रस्थान करता है।"

हनुमान स्तब्ध रह गए और श्री राम के महल की ओर चल पड़े। रास्ते में उन्हें यह अहसास हुआ कि जीवन का यह चक्र प्रत्येक महायुग में चलता रहता है और श्री राम फिर से आएंगे, और वे इसे होने से रोक नहीं सकते।

कान्हा ने विवांत से कहा, “हमारे भगवान हनुमान भी मृत्यु को नहीं रोक सके, तो हम

कौन होते हैं? जीवन का यह चक्र चलता रहना चाहिए और हमें आगे बढ़ना चाहिए, हम जीवन और मृत्यु को नियंत्रित नहीं कर सकते।"

विवांत आखिरकार चुप हो गया और बोला, "मैं समझता हूँ कान्हा, लेकिन मुझे इससे उबरने के लिए समय चाहिए।"

"मुझे पता है तुम्हारे लिए यह बहुत मुश्किल रहा है। अपनी माँ के पास घर जाओ और उनके साथ रहो। अब सब कुछ खत्म हो चुका है। हमें नहीं पता तारक की क्या योजना है; हम पता लगाने की कोशिश करेंगे और उसे रोकने की कोशिश करेंगे। मैं तुम्हारे भाई को बचाने की कोशिश करूंगा।" कान्हा ने विवांत को सलाह दी।

"यह मेरे पिता की अंतिम इच्छा है। मुझे इसे पूरा करना ही होगा ताकि मेरे पिता की आत्मा को शांति मिल सके। मुझे एक बेटे और एक भाई के रूप में अपने दायित्वों को निभाना है। मुझे अपने भाई को अपनी माँ के पास ले जाना है और उसे दिखाना है कि उसका भी एक परिवार है।" विवांत अपने फैसले पर अडिग रहा।

"मैं समझता हूँ विवांत, मैं तुम्हारे फैसलों का सम्मान करता हूँ, इस बारे में बाद में बात करेंगे, अब तुम आराम करो।" कान्हा ने दरवाजा बंद कर दिया।

अध्याय 9

DWAPARAYUGA

त्रेतायुग में, राम ने उन अधिकांश दानवों को दंडित किया जिन्होंने मानवों या ऋषि मुनियों को हानि पहुँचाने का प्रयास किया था। ये ऋषि मुनी हवन कर रहे थे जिससे देवताओं को शक्ति प्राप्त होती थी और बदले में पृथ्वी पर समृद्धि आती थी। राम के शासनकाल में, दानवों ने ऋषियों और मानवों को कोई हानि नहीं पहुँचाई।

जब राम पृथ्वी छोड़कर चले गए, तो दानवों के राजा बलि के पुत्र बाणासुर ने सोचा कि भूलोक पर विजय प्राप्त करने से पहले उसे भूलोक पर सहयोगी बनाने होंगे।

विश्वकर्मा द्वारा उपलब्ध कराए गए रसलिंग से बाणासुर भूलोक तक यात्रा करने में सक्षम था। यह रसलिंग ठोस पारे से बना था और मंगल ग्रह पर एक पिरामिड में स्थापित था। इससे एक सुरंग खुलती थी जो वर्महोल तक जाती थी, जिसका दूसरा सिरा कैलाश पर्वत पर खुलता था।

वृष्णि राज्य के राजा उग्रसेन और पद्मावती के एक पुत्र हुआ। लेकिन बाणासुर ने उस पुत्र को मार डाला और उसकी जगह दानव वंश के एक छोटे बच्चे को रख दिया - जो कालनेमी का पुत्र और हिरण्यक्ष का पोता था। उग्रसेन और पद्मावती ने उसका नाम कंस रखा और वह मथुरा का राजकुमार बन गया।

बाणासुर ने भूलोक में सहयोगी खोजने का प्रयास किया। वह जानता था कि उसका एक भरोसेमंद साथी है, क्योंकि उसका पुनर्जन्म दानव स्त्री जरा की शक्ति से हुआ था। बाणासुर जरासंध से मिला और उसे भूलोक पर शासन करने की अपनी योजना बताई।

जब कंस बूढ़ा हो गया, तो बाणासुर के निर्देश पर मगध के जरासंध ने उसकी बेटी का विवाह कर दिया।

कंस, जरासंध और बाणासुर ने गठबंधन कर लिया था और उन्होंने भारत के अधिकांश भाग पर विजय प्राप्त कर ली थी। बाणासुर धीरे-धीरे दानवों को भूलोक की ओर लाने लगा।

भूलोक पर दानवों द्वारा मचाई गई अराजकता को रोकने का समय आ गया था। उन्होंने वासुदेव और देवकी के पुत्र के रूप में जन्म लिया, देवकी कंस की बहन और उग्रसेन की पुत्री थीं।

कंस देवकी के सभी पुत्रों को मार रहा था। वह सिंहासन के लिए किसी भी दावेदार को नहीं चाहता था। वह जानता था कि उग्रसेन उसे पसंद नहीं करता और उसके पास अभी भी अपने वंश के किसी भी पुरुष को सिंहासन सौंपने का पूरा मौका था।

जब उनके आठवें बच्चे का जन्म हुआ, तो वासुदेव ने कंस की जानकारी के बिना उसे अपने मित्रों नंदा और यशोदा के पास छोड़ दिया।

जब आठवें पुत्र कृष्ण बड़े हुए, तब कंस, जरासंध और बाणासुर तीनों राज्य जीतने में व्यस्त थे। कंस को किसी तरह पता चला कि वासुदेव और देवकी का आठवां पुत्र अभी जीवित है और उसने बाणासुर से दानवों को कैलाश के रास्ते भूलोक लाने में मदद मांगी ताकि वे कृष्ण को मार सकें।

कंस ने शिशु कृष्ण को मारने के लिए पूतना को भेजा। पूतना ने एक सुंदर स्त्री का रूप धारण किया और विषयुक्त दूध पिलाकर कृष्ण को मारने का प्रयास किया। लेकिन कृष्ण ने पूतना का खून चूसकर उसकी जान ले ली।

When Krishna was one-year old, Trinavarta, a Danava tried to kill him by bringing a great cyclone on Vrindavan but Krishna killed him. During his childhood, Krishna killed many Danavas like Aghasura, Bakasura, Vritrasura, Aristasura, Keshi, Vyomasura and many more.

कंस कृष्ण से क्रोधित हो गया। उसे दंडित करने के लिए उसने वासुदेव और देवकी को यातनाएं दीं।

कृष्ण अपने भाई बलराम के साथ मथुरा आए थे, जहां कंस का राज्याभिषेक था। वे अक्रूर के निमंत्रण पर वहां आयोजित होने वाले एक यज्ञ में भाग लेने आए थे।

कंस ने अपने करीबी सहयोगी चानूरा को अक्रूर के घर पर उन्हें मारने के लिए भेजा। हालांकि, कृष्ण ने चानूरा को मार डाला और महल में जाकर कंस से आमने-सामने की लड़ाई लड़ी, जबकि बलराम ने कंस के भाई सुनामा से द्वंद्व युद्ध किया।

कंस और सुनामा दोनों द्वंद्वयुद्ध में मारे गए। इसके बाद, कृष्ण और बलराम ने वासुदेव, देवकी और उग्रसेन को मुक्त कराया, जिन्हें कंस ने बाणासुर की सहायता से पराजित करने के बाद कैद कर लिया था। उग्रसेन ने घोषणा की कि अब से राज्य कृष्ण का है। इस प्रकार कृष्ण मथुरा के शासक बने।

सेना शिविर

कान्हा ने कर्नल, विवांत और सुखेष्णी को बैठक बुलाई और विवांत और सुखेष्णी को सलाह दी, “अपनी माताओं से कह देना कि तुम कुछ दिनों में आओगे क्योंकि तुम अपनी यात्रा बढ़ा रहे हो। हमें पहले तारक को कैलाश पर्वत पर ताराद्वार को पुनः सक्रिय करने से रोकना होगा।”

विवांत ने कहा, "पिताजी ने कहा था कि तारक धरती पर 'नरक' लाएगा, इसका क्या मतलब है?"

कान्हा ने कहा, “मुझे नहीं पता इसका क्या मतलब है। इसका मतलब नरक का द्वार खोलना या पृथ्वी पर लोगों के लिए मृत्यु लाना हो सकता है। द्वार खोलकर वह पृथ्वी को कई खतरों के सामने ला सकता है।”

कर्नल ने कहा, “हमें नहीं पता कि बाहरी ग्रहों के प्राणियों से क्या उम्मीद करनी चाहिए, शायद हम उनका सामना न कर पाएं। लेकिन जैसा कि हथेली पर लिखा था, द्वार दोनों तरफ से खुला होना चाहिए। अगर तारक पृथ्वी से द्वार खोलता भी है, तो दूसरी तरफ से कौन खोलेगा? हो सकता है तारक किसी दूसरे ग्रह पर बाहरी ग्रहों के प्राणियों के संपर्क में हो।”

कान्हा ने पूछा, "लेकिन इसके लिए तारक को शिवलिंग की आवश्यकता है, जिसके बारे में किसी को नहीं पता कि वह कहाँ है या क्या वह पहले से ही जानता है?"

“लेकिन चाचाजी ने हमें बताया कि केवल कृष्ण ही जानते थे कि उन्होंने इसे कहाँ रखा था। इसका मतलब है कि कृष्ण ने इसे किसी कारण से बंद कर दिया था। हमें वह कारण पता लगाना होगा, हमें तारक के इरादे को समझना होगा,” सुखेष्णी ने कहा।

"इसके लिए हमें कुछ शोध करना होगा और कुछ प्राचीन ग्रंथों को खोजना होगा," कान्हा ने कहा।

कर्नल ने कहा, "जब डॉ. विश्वनाथ यहां थे, तो उनके पास कुछ किताबें थीं जिन्हें मैंने पैक करके उनके ट्रंक में रख दिया है, आप लोग उनमें खोज सकते हैं।"

“जी चाचा जी, इससे ज़रूर मदद मिलेगी। मैं इन्हें पढ़कर कुछ जवाब ढूंढने की कोशिश

करूंगी।” सुखेष्णी इन्हें पढ़ने और अधूरी जानकारियों को खोजने के लिए तैयार थी।

विवांत और सुखेशनी ने अपनी माताओं को फोन किया और बताया कि उनकी कैलाश यात्रा पूरी हो गई है और वे दिल्ली में एक दोस्त के घर पर ठहरे हुए हैं।

वे दर्शनीय स्थलों की सैर पूरी करके बैंगलोर लौट आएंगे और वे साथ थे, जिससे उनकी सुरक्षा को लेकर उन्हें आश्वस्त किया गया।

सुखेशनी के किताबें पढ़ना शुरू करने के बाद, विवांत शारीरिक प्रशिक्षण के लिए कान्हा के साथ जाने लगा। कान्हा ने उसे निशानेबाजी और अपने सभी उपकरणों का उपयोग करना सिखाया और उसे अपने आसपास होने वाली हर चीज के प्रति सतर्क रहने की चेतावनी दी।

"अपने लक्ष्य पर ध्यान केंद्रित करो और तुम उसे हासिल कर लोगे," कान्हा ने विवांत को निर्देश दिया।

विवांत ने अपना विचार स्पष्ट करते हुए कहा, “मेरा मुख्य उद्देश्य अपने भाई को अपनी माँ के पास वापस ले जाना है ताकि मेरे पिता की अंतिम इच्छा पूरी हो सके। मैं नहीं चाहता कि उनकी आत्मा में कोई अधूरी इच्छा रह जाए या उन्हें इस बात का दुख हो कि उन्होंने अपने बेटे को उसकी माँ से अलग किया। मेरी माँ इस बात के लिए उनसे हमेशा के लिए नफरत करती हैं।”

तारक का कार्यालय

तारक ने देवांत की सराहना की जिसने आखिरकार उसे वह चीज़ दिला दी जिसकी उसे ज़रूरत थी; उसे वह डिब्बा मिल गया था। देवांत भी खुश था।

तारक को ताड़ के पत्तों पर लिखे शास्त्र मिले। उसने देवांत से जाकर विश्राम करने को कहा।

देवांत ने कहा, “नहीं, मैं इस रहस्य को देखना और जानना चाहता हूँ। कैलाश पर्वत के बारे में इसमें छिपे रहस्य को जानने के लिए हमें बहुत मेहनत करनी पड़ी।”

तारक ने सख्ती से कहा, "यह तुम्हारा काम नहीं है, बस मैंने जो कहा है उसका पालन करो। अब मुझे अकेला छोड़ दो। मुझे अपने बॉस से अकेले में बात करनी है।"

देवंत भी क्रोधित हो गया और उसने पूछा, “मैंने इस बॉक्स को पाने के लिए इतना जोखिम उठाया है, आप मुझे अपने बॉस से क्यों नहीं मिलवाते? मैं आपका इकलौता बेटा हूं जो धीथी समूह की कंपनियों के इस पूरे साम्राज्य का प्रबंधन करता है।”

तारक ने शांत भाव से उत्तर दिया, “हर चीज का समय आता है, अभी समय नहीं है। कृपया अब चले जाइए।” देवांत निराश हुआ और अन्य कामों में लग गया।

तारक फिर से कार्यालय में अपने गुप्त कमरे में गया और अपने राजा, दानवों के राजा, सिंहनाद से मिलने का अनुरोध करते हुए फोन किया।

राजा सिंहनादा का 3डी होलोग्राम प्रकट हुआ और तारक ने खुशी से कहा, "महाराज, हमने आखिरकार बक्सा खोल दिया है और रहस्य उजागर हो गए हैं!"

लेकिन सिंहनादा खुश नहीं लग रहा था। तारक हैरान रह गया। उसने तारक से पूछा, "इस बक्से के बारे में कौन-कौन जानता है?"

हालांकि वह डरा हुआ था, तारक ने आत्मविश्वास से कहा, "कोई नहीं, महाराज।"

सिंहनादा गरजते हुए बोला, “मुझसे झूठ मत बोलो, तारकासुर। मुझे सूत्रों से पता चला है कि भारतीय सरकार के अधिकारियों और डॉ. विश्वनाथ के एक अन्य पुत्र ने इसे खोला था और वे भी इसके रहस्य जानते हैं।”

हमें द्वार खोल देना चाहिए इससे पहले कि उन्हें इसे बंद करना आ सके। लेकिन मुझे खुशी है कि कम से कम अब हमारे पास वह संदूक तो है। क्या आप द्वार खोल पाएंगे? मैं अपनी सेनाओं को तैयार कर लेता हूँ।

“चिंता न करें मेरे स्वामी, सब कुछ मेरी योजना के अनुसार ही होगा। बस एक आखिरी कड़ी बाकी है, मैंने यह कार्य सही व्यक्ति को सौंप दिया है और जल्द ही परिणाम मिल जाएंगे।” तारक ने उत्तर दिया।

सिम्हानादा ने कहा, "ऑल द बेस्ट, इसे जल्द से जल्द करो।" ये शब्द कहते ही सिम्हानादा का 3डी होलोग्राम गायब हो गया।

अध्याय 10

कैलाश की कुंजी

मथुरा

कृष्ण ने मथुरा पर शासन किया और कंस के अत्याचारों से वहां के सभी नागरिकों को मुक्ति दिलाई। दूसरी ओर, बाणासुर अपने सभी सहयोगियों को खो रहा था और उसके पास कृष्ण से नाराज होने का कारण था।

बाणासुर ने कृष्ण को मारने की योजना बनाई, क्योंकि वह उसके लिए एक बड़ी परेशानी बनता जा रहा था। उसने अपने करीबी सहयोगी दंतवक्र को भुवर्लोक से बुलाया।

दंतावक्र महर्षि का वेश धारण करके चेदि राज्य गए। चेदि राजा दमाघोष और वासुदेव की बहन श्रुतश्रवा निःसंतान थे। दंतावक्र ने उन्हें एक औषधि दी और कहा कि इसे पीने से उन्हें बलवान पुत्र की प्राप्ति होगी।

कुछ महीनों बाद जब रानी ने वह औषधि पी ली, तो एक पुत्र का जन्म हुआ जिसके हाथों और आँखों के पास एक अतिरिक्त उभार था। उसका नाम शिशुपाल रखा गया। श्रुतश्राव बहुत दुखी हुआ।

जब वासुदेव और कृष्ण श्रुतश्राव से मिलने आए, तो कृष्ण जानते थे कि वह एक दानव हैं, लेकिन अपनी चाची को दुखी देखकर उन्होंने शिशुपाल को सामान्य कर दिया और उसका इलाज किया।

शिशुपाल जब बड़ा हो रहा था, तो वह कृष्ण से ईर्ष्या करता था, क्योंकि हर कोई हमेशा उनकी प्रशंसा करता था। दंतवक्र उसके गुरु बने, जिन्होंने उसे प्रशिक्षित किया

और हमेशा उसे कृष्ण के समान बलवान बनने की शिक्षा दी ताकि वह एक दिन उसे परास्त कर सके। उसने बाणासुर और जरासंध से कहा कि वह कृष्ण की हत्या में उसकी सहायता करेगा।

कृष्ण को सब कुछ पता था। वे भूलोक में दानवों को रोकना चाहते थे, लेकिन उन्हें यह भी पता था कि पहले उन्हें कैलाश पर्वत से भूलोक में प्रवेश का रास्ता बंद करना होगा। लेकिन उससे पहले उन्हें बाणासुर, जरासंध, दंतवक्र और शिशुपाल को रोकना था। जरासंध को रोकना सबसे ज़रूरी था क्योंकि उसने सभी राजाओं को जीत लिया था और कृष्ण द्वारा कंस के वध के बाद मथुरा पर आक्रमण किया था।

कृष्ण और बलराम ने अपने राज्य को द्वारका में स्थानांतरित कर दिया क्योंकि वे अपनी प्रजा को किसी भी प्रकार का नुकसान नहीं पहुंचाना चाहते थे।

After Krishna helped the Pandavas to win the Kurukshetra battle, Yudhishthira started the Rajasuya yagna. Jarasandha didn't agree to Yudhishthira being king.

इसलिए भीम सेना लेकर मगध गए। उन्होंने जरासंध को द्वंद्वयुद्ध के लिए चुनौती दी। जरासंध ने कसम खाई कि वह बाद में भीम और कृष्ण को मार डालेगा।

जरासंध कुश्ती में पराजित होने के लिए बहुत बलवान था। कृष्ण जानते थे कि जरासंध का पुनर्जन्म जरा नामक एक दानव स्त्री से हुआ था, जो उसके शरीर के दो भागों को फाड़कर उससे जुड़ी थी।

अतः उसने भीम को जरासंध के टुकड़े करने का आदेश दिया। भीम ने ऐसा ही किया और जरासंध को मारकर उसके द्वारा बंदी बनाए गए पचानवे राजाओं को मुक्त कराया।

बाणासुर हताश हो गया। कृष्ण उसके सभी सहयोगियों को एक-एक करके मार रहे थे। युधिष्ठिर का यज्ञ समाप्त होने के बाद, सभी राजा उनके पास आए।

बाणासुर ने शिशुपाल को यह कहकर उकसाया कि कृष्ण ने भीम की सहायता से

उनके महान सहयोगी जरासंध को मार डाला था। अब पूरी दुनिया उसकी प्रशंसा कर रही थी।

शिशुपाल यज्ञ में आया और कृष्ण का अपमान करते हुए कहने लगा कि उन्होंने भीम की मदद करके जरासंध को धोखा दिया है और यह द्वंद्वयुद्ध निष्पक्ष नहीं था। शिशुपाल ने कृष्ण को द्वंद्वयुद्ध के लिए चुनौती दी। उसने बाणासुर से बहुत सारे शस्त्र प्राप्त किए थे। भयंकर युद्ध हुआ जिसमें शिशुपाल ने दानवों द्वारा प्रयुक्त शस्त्रों का प्रयोग किया, जिससे कई राजा स्तब्ध रह गए। कृष्ण ने अपना सुदर्शन चक्र निकालकर शिशुपाल का वध कर दिया।

दंतवक्र ने शिशुपाल को अपने पुत्र के समान पाला था। इसलिए, द्वारका लौटते समय उसने कृष्ण पर हमला कर दिया। कृष्ण ने अपने सुदर्शन चक्र से उसे मार डाला।

इससे जया विजया को विष्णु के शत्रुओं के रूप में तीन जन्मों के श्राप से मुक्ति मिल गई, जिन्हें ब्रह्मा के चार कुमारों, यानी मानसपुत्रों द्वारा यह श्राप दिया गया था कि वे या तो विष्णु के शत्रुओं के रूप में तीन जन्म लें या सामान्य प्राणियों के रूप में उनके भक्तों के रूप में सौ जन्म लें।

जय विजया ने विष्णु से शीघ्र मिलने के लिए तीन पुनर्जन्मों का चुनाव किया था। पहला जन्म हिरण्याक्ष और हिरण्यकशिपु के रूप में, दूसरा रावण और कुंभकर्ण के रूप में, और तीसरा और अंतिम शिशुपाल और दंतवक्र के रूप में था।

भूलोक पर बाणासुर अकेला था। उसने निश्चय कर लिया कि वह कृष्ण से पूरी शक्ति से युद्ध करेगा। बाणासुर एक कुशल और महान योद्धा होने के साथ-साथ महायोगी भी था।

वह कैलाश पर्वत पर गया और ताराद्वार को सक्रिय किया तथा अपने सबसे महान दानव योद्धा राजा और अपने सबसे करीबी सहयोगी शाल्व को भुलोक पर आक्रमण करने और उसे जीतने के लिए आमंत्रित किया।

दानवों के पास सौभा नामक एक विशेष युद्ध विमान था, जिसका निर्माण मायाओं द्वारा किया गया था।

शाल्व भुवर्लोक से संपूर्ण दानव सेना और सभी हथियारों से लैस अंतरिक्ष यानों को लेकर आए। बाणासुर और शाल्व ने द्वारका पर आक्रमण किया। वृष्णि और द्वारका के योद्धाओं के बीच भयंकर युद्ध हुआ।

नोट: श्रीमद् भागवतम् में शाल्व द्वारा प्रयुक्त विमान का उल्लेख है।

मैं दुनिया से प्यार करता हूँ।

tamo-dhama durasadam

yayas dvaravatim salvo

vairam vrsni-krtam smaran

– Srimad Bhagavatam 10.76.8

अनुवाद: यह अजेय वाहन अंधकार से भरा हुआ था और कहीं भी जा सकता था। इसे प्राप्त करने पर, शाल्व ने वृष्णि वंश की शत्रुता को याद करते हुए द्वारका नगर की ओर प्रस्थान किया।

शाल्व ने सौभा विमान से द्वारका पर वज्रपात किया, जिससे शहर और उसके बगीचों के चारों ओर बनी सभी इमारतें, महल और दीवारें नष्ट हो गईं। कृष्ण इसे रोक नहीं सके, क्योंकि अंतरिक्ष यान इतनी तेज़ी से गतिमान था कि वह बार-बार प्रकट और लुप्त हो रहा था।

नोट: श्रीमद् भागवतम् में इस बात का उल्लेख है कि सौभ ने पृथ्वी को किस प्रकार प्रताड़ित किया था।

यह एक खूबसूरत जगह है।

krsnasya nagari bhrsam

nabhyapadyata sam rajams

tri-purena yatha mahi

– Srimad Bhagavatam 10.76.12

अनुवाद: सौभा द्वारा बुरी तरह प्रताड़ित कृष्ण नगर, त्रिपुरा से पीड़ित पृथ्वी की तरह, शांति नहीं पा सका।

सौभा पर्वत से शाल्व ने कृष्ण के रथ की ओर कई मिसाइलें दागीं। कृष्ण ने सभी मिसाइलों से खुद को बचा लिया। तभी शाल्व ने उल्कापिंड के आकार की मिसाइल दागी, जिसके जवाब में कृष्ण ने अपना परमाणु हथियार दागा। अंतरिक्ष में हथियारों के टकराने से पूरा आकाश जगमगा उठा, और उसकी गड़गड़ाहट सभी के कानों में गूंज उठी। कुछ मिनटों के लिए सभी की आंखें चौंधिया गईं।

कृष्ण और रुक्मिणी के पुत्र प्रद्युम्न अपने भाइयों के साथ कवच धारण करके रथों पर सवार होकर शाल्व की सेना से युद्ध करने गए।

प्रद्युम्न ने शाल्व की सेना के सेनापति द्युमन से आमने-सामने की लड़ाई लड़ी। प्रद्युम्न एक कुशल धनुर्धर थे और उन्होंने द्युमन के रथ के घूर्णनशील पंखों पर निशाना साधकर उन्हें चकनाचूर कर दिया। द्युमन नीचे उतरे और रथ पर सवार होकर प्रद्युम्न पर आक्रमण किया। प्रद्युम्न के बाणों ने द्युमन के रथ के पहियों को नष्ट कर दिया। मंत्रों से युक्त प्रद्युम्न के बाणों ने द्युमन द्वारा दागे गए हथियारों को भी नष्ट कर दिया।

प्रद्युम्न के बाण ने द्युमन का मुकुट भेदकर उसके पैरों में गिरा दिया। प्रद्युम्न ने उसे आत्मसमर्पण करने को कहा। द्युमन अपने टूटे हुए रथ से कूदकर प्रद्युम्न की ओर गदा से आक्रमण करने के लिए दौड़ा। प्रद्युम्न ने बाण उसकी छाती में मारा, जिससे द्युमन कुछ गज पीछे जा गिरा और उसकी मृत्यु हो गई।

सौभा द्वारा उत्पन्न मायाजाल के कारण कृष्ण के लिए उस पर प्रहार करना अत्यंत कठिन हो गया था। सौभा इतनी तीव्र गति से गतिमान था कि उसने एक ऐसा भ्रम उत्पन्न कर दिया कि सौभा आकाश में सैकड़ों स्थानों पर प्रकट हुआ।

कृष्ण ने अपना धनुष उठाया, मंत्र का जाप किया और धनुष पर बाण लगाकर सौभा

पर चला दिया। बाण अनेक बाणों में विभाजित हो गया और सौभा द्वारा निर्मित प्रत्येक माया को भेदते हुए उसे नष्ट कर दिया। एक बाण सौभा के घूर्णनशील विमान यंत्र पर लगा और जैसे ही वह नीचे आया, कृष्ण ने अपने गदा से सौभा को चकनाचूर कर दिया।

नोट: श्रीमद् भागवतम् में शाल्व और कृष्ण के बीच युद्ध का उल्लेख है।

तम शास्त्र-पुगैः प्रहरन्तं ओजसा

सलवं सरायः सौरिर अमोघ-विक्रमः

विद्धवच्चिनाद् वर्मा धनुः सिरो-मणिम्

saubham ca satror gadaya ruroja ha

– Srimad Bhagavatam 10.77.33

अनुवाद: जब शाल्व ने उन पर अत्यंत बलपूर्वक हथियारों की बौछार जारी रखी, तब भगवान कृष्ण, जिनकी पराक्रम कभी विफल नहीं होती, ने शाल्व पर अपने बाण चलाकर उन्हें घायल कर दिया और उनके कवच, धनुष और मुकुट को चकनाचूर कर दिया। फिर भगवान ने अपने गदा से अपने शत्रु के सौभ नौका को चकनाचूर कर दिया।

tat krsna-hasteritaya vicurnitam

papata toye gadaya sahasradha

दुनिया चमत्कारों से भरी हुई है।

उद्यम्य साल्वो च्युतम अभ्यगद् द्रुतम्

– Srimad Bhagavatam 10.77.34

अनुवाद: भगवान कृष्ण के गदा से हजारों टुकड़ों में चकनाचूर होकर सौभा विमान जल

में जा गिरा। शाल्व ने उसे वहीं छोड़ दिया, जमीन पर बैठ गया, अपना गदा उठाया और भगवान अच्युत की ओर दौड़ पड़ा।

सौभा के वध के बाद जब वह समुद्र में गिरा, तो शाल्वा पैराशूट से नीचे आया। उसके कई योद्धा भी नीचे आ गए। ज़मीन पर युद्ध छिड़ गया। शाल्वा और उसके साथियों ने नीचे आकर कई वृष्णि वंशजों को मार डाला।

कृष्ण आए और उन्होंने शाल्व पर अपनी गदा से प्रहार किया। शाल्व ने भी पूरी ताकत से पलटवार किया, कृष्ण ने उन्हें पकड़ लिया। कृष्ण ने नीचे से अपनी गदा से शाल्व की ठोड़ी पर वार किया। शाल्व पीछे की ओर समुद्र तट पर पत्थरों पर गिर पड़े और उनका सिर फूट गया।

जब तक कृष्ण बाणासुर पर हमला कर पाते, तब तक वह अपनी शेष सेना और अंतरिक्ष यान के साथ भुवर्लोक भाग गया; द्वार अभी भी खुला था।

कृष्ण उनके पीछे कैलाश गए, लेकिन तब तक बाणासुर और उसकी सेना भाग चुकी थी। जब बाणासुर द्वार बंद कर रहा था, कृष्ण ने द्वार से ब्रह्मास्त्र भेजा, जिससे मंगल ग्रह (भूवर्लोक) का वातावरण नष्ट हो गया। इस प्रकार, दानव भुवर्लोक के भूमिगत शहरों में रहने लगे।

कृष्ण इसे हमेशा के लिए रोकना चाहते थे। वे पिरामिड के शिखर तक पहुँचे और शिवलिंग ले आए, जिससे द्वारका का द्वार खुल गया।

नोट: मंगल ग्रह पर परमाणु विस्फोटों के प्रमाण मिले हैं। मंगल की सतह पर प्रचुर मात्रा में पाए जाने वाले ज़ेनॉन आइसोटोप इस बात का प्रमाण हैं कि अतीत में मंगल ग्रह पर परमाणु विस्फोट हुए थे।

सेना शिविर

सुखेशनी ने अपना शोध किया और सफलता हासिल की। उसने विवंत, कान्हा और कर्नल वीरप्रताप को बुलाया।

वे सभी कर्नल के कार्यालय में एकत्रित हुए, जहां किसी और को जाने की अनुमति नहीं थी।

सुखेष्णी ने बात शुरू करते हुए कहा, “मैंने शोध किया है और गुरुजी से फोन पर इस बारे में चर्चा की है, और गुरुजी ने मेरे सिद्धांत की पुष्टि की है। हम जानते हैं कि कृष्ण ने लिंग लिया और उसे कहीं छिपा दिया। मैंने एक कहानी पढ़ी है जो शायद मददगार हो। श्रीमद् भागवतम् में, शाल्व और कृष्ण ने दानवों की सहायता से द्वारका में घातक हथियारों और अंतरिक्ष यानों से युद्ध किया था।”

Shalva destroyed half of Dwarka and Krishna routed them back after killing Shalva from Kailash Parvat with the Brahmastra. He destroyed the Danava Loka and returned to Dwarka.

इसका अर्थ है कि जब दानवों को खदेड़ दिया गया, तो कृष्ण ने कैलाश पर्वत का द्वार बंद कर दिया। संभवत: कृष्ण लिंग को द्वारका वापस ले गए होंगे।

कर्नल ने कहा, “द्वारका में एक लिंग है, अर्थात् गुजरात के द्वारका में नागेश्वर ज्योतिर्लिंग। हमें शायद इसे सुरक्षित करना होगा।”

“नहीं चाचा जी, एक दशक पहले पुरातत्वविदों ने खंभात की खाड़ी में समुद्र में डूबा हुआ एक प्राचीन शहर खोजा था, जिसे मूल द्वारका कहा जाता है और जो 5000 वर्ष से भी अधिक पुराना है। यह शहर 3102 ईसा पूर्व में कृष्ण के पृथ्वी छोड़ने के समय डूब गया था,” सुखेष्णी ने उन्हें बीच में ही रोकते हुए कहा।

विवांत ने कहा, “अगर पूरा शहर डूब गया तो शिवलिंग भी डूबकर सुरक्षित रह सकता है। मैंने ऐसी कथाएँ सुनी हैं जिनमें कृष्ण ने द्वारका को समुद्र में डुबोने का आदेश दिया था। उन्होंने शायद पृथ्वी को इन खतरों से बचाने और शहर के साथ-साथ रहस्यों को भी डुबोने के लिए ऐसा किया होगा।”

“विवांत, तुम शायद सही हो, लेकिन मुझे एक महत्वपूर्ण कहानी पता चली है कि कृष्ण और बलराम ने इस ग्रह को कैसे छोड़ा।” कृष्ण के द्वारका लौटने के बाद सभी वृष्णि मर चुके थे। गांधारी का श्राप सच हो गया था; कृष्ण का वंश कौरव वंश की तरह ही समाप्त हो गया था।

"द्वापरयुग के अंत में, जरा नामक एक शिकारी द्वारा चलाए गए बाण ने कृष्ण के पैर के अंगूठे को आ गिराया," सुखेशनी ने आगे बताया।

विवांत ने पूछा, "इसका क्या अर्थ है?"

सुखेशनी ने कहा, “यह इस बारे में नहीं है कि उनकी मृत्यु कैसे हुई, बल्कि इस बारे में है कि उनकी मृत्यु कहाँ हुई। यह सोमनाथ मंदिर के पास हुआ था। उनकी मृत्यु के बाद, सोमनाथ मंदिर तक की भूमि जलमग्न हो गई है, लेकिन सोमनाथ मंदिर नहीं।”

बलराम ने अपना शरीर त्यागकर आदिशेष रूप धारण किया और संभवतः लिंगम की रक्षा के लिए सोमनाथ मंदिर के पास एक गुफा में चले गए। यह भी कहा जाता है कि कृष्ण ने इस मंदिर का निर्माण लकड़ी से किया था।

बाद में, चालुक्य राजा मूलराज ने 997 ईस्वी से पहले इसका जीर्णोद्धार कराया। ग़ज़नी ने मंदिर पर कई बार आक्रमण कर लूटपाट की और जैसा कि हम जानते हैं, उसने शिवलिंग को नष्ट कर दिया। लेकिन इन फाइलों में ग़ज़नी के बारे में एक अलग कहानी भी है, जिसे हम सभी को ध्यानपूर्वक पढ़ना चाहिए।

जब उसने शिवलिंग पर हमला करने की कोशिश की और गर्भगृह में प्रवेश किया तो उनके सभी हथियारबंद और कवचधारी सैनिक हवा में तैरने लगे और गजनी इसे देखकर स्तब्ध रह गया।

उनके एक करीबी सहयोगी ने कहा कि ऊपरी गोपुरम में और फर्श के नीचे चुंबक की तरह काम करने वाले चुंबक-शिला पत्थर हो सकते हैं, जिसके कारण शिवलिंग और लोहे की मूर्ति हवा में तैरने लगते हैं।

गजनी ने पहले गोपुरम को ध्वस्त करने का आदेश दिया और फिर लिंग जमीन पर गिर गया, जिसके बाद एक सैनिक ने लिंग को नष्ट करने की कोशिश की लेकिन वह ऐसा नहीं कर सका, क्योंकि वह इतने मजबूत चुंबकीय क्षेत्र में था कि वह चुंबक की तरह व्यवहार करने लगा था।

लोहे के बने सभी हथियार बेकार थे। इसलिए ग़ज़नी ने उन्हें इसे वहीं दफनाने को कहा और बाद में प्रसिद्धि पाने के लिए, उसने एक और लिंग तोड़कर मक्का और मदीना भेज दिया, जहाँ उसने इसकी महिमा का बखान किया।

जब सरदार वल्लभभाई पटेल ने खुदाई का आदेश दिया, तो उन्हें मंदिर के गर्भगृह के नीचे दबा हुआ मूल शिवलिंग मिला। उन्होंने आदेश दिया कि इसे किसी को भी न बताया जाए और उन्होंने मूल शिवलिंग को पुनः स्थापित किया।

सुखेशनी ने फाइलों से पढ़कर कहा, "यह उन गुप्त फाइलों में लिखा है जो डॉ. विश्वनाथ के पास थीं।"

सुखेष्णी ने कहा, "मेरी अंतरात्मा कहती है कि इस शिवलिंग पर फिर से हमला हो सकता है और हमें इतिहास को दोहराने नहीं देना चाहिए।"

विवांत ने कहा, “यदि कृष्ण ने दानवों की सेना का मार्ग बदल दिया और उनके लिए द्वार बंद कर दिया, तो तारक शायद दानवों के लिए द्वार खोलने में मदद कर रहा हो। वे बदला लेने की प्रतीक्षा कर रहे होंगे, लेकिन तारक उनकी मदद क्यों कर रहा है?”

कान्हा ने कहा, “शायद वह उनमें से एक है। सब चुप हो गए और सोचने लगे। मैंने

तारक के बारे में बहुत खोजबीन की थी। उसका कहीं कोई रिकॉर्ड नहीं है; वह 20 साल पहले क्या कर रहा था, इसका कोई पता नहीं। न जन्म रिकॉर्ड, न शिक्षा रिकॉर्ड। स्थानीय लोगों ने बताया कि उन्होंने 20 साल पहले यूएफओ देखे थे। शायद वह दानव है।"

सुखेशनी ने पूछा, "अगर उनके पास यूएफओ हैं, तो उन्हें गेटवे की क्या जरूरत है जब वे अंतरिक्ष में यात्रा कर सकते हैं?"

कान्हा ने कहा, "शायद पूरी सेना को लाना संभव हो। अंतरिक्ष यानों से यह संभव नहीं है। अंतरिक्ष यानों से भी यह सबसे कम दूरी है। वे कम समय में हजारों दानवों को ला सकते हैं।"

तारक का कार्यालय

तारक ने देवांत को बुलाया और उससे कहा कि उन्हें द्वारका से एक शिवलिंग चुराना होगा। देवांत ने हैरानी से कहा, "द्वारका! क्या तुम पागल हो गए हो? पूरा शिवलिंग कैसे चुरा सकते हो, और वो भी द्वारका से? क्या तुम पागल हो गए हो? मुझे किस मंदिर से चुराना है?"

तारक ने उत्तर देते हुए कहा, "मैंने कुछ शोध किया है। यह उस मंदिर से है जिसे कृष्ण ने बनवाया था, इसे सोमनाथ मंदिर कहते हैं।"

"लेकिन क्यों?" देवांत ने पूछा। "क्या इसका संबंध कैलाश पर्वत से है? अब मुझे यह जानना होगा कि हमें यह क्यों करना है?"

तारक ने कहा, "मुझसे सवाल मत करो, बस जैसा मैं कहूँ वैसा करो। कोई गड़बड़ मत करना। एक टीम बनाओ और शिवलिंग की जगह पत्थर की प्रतिकृति स्थापित करो और उस शिवलिंग को मेरे पास ले आओ।"

"लेकिन यह एक बड़ा मंदिर है और यहाँ काफी सुरक्षा व्यवस्था होगी। अगर हम किसी भी तरह की गड़बड़ी करते हैं, तो पुलिस वहाँ आ सकती है," देवांत ने कहा।

तारक ने पलटवार करते हुए कहा, "बहाने मत बनाओ। अगर तुम यह नहीं कर सकते, तो मैं किसी और को भेज दूंगा।"

देवांत ने जवाब देते हुए कहा, "नहीं, कोई बात नहीं, मैं कर दूंगा, लेकिन मुझसे वादा करो कि तुम मुझे सारे राज बताओगे और मुझे बॉस से मिलवाओगे।"

“जी हां, मैं इस बारे में सोचूंगा और व्यवस्था करूंगा, लेकिन पहले यह काम पूरा करो।” देवंत अपनी पेशेवर टीम को लेकर लखनऊ के लिए रवाना हो गए।

ल्हावांग ने कान्हा को फोन किया और बताया कि वह देवांत और तारक पर नज़र रख रहा है। देवांत और उसके कुछ साथी भारत आ रहे हैं और दोपहर तक लखनऊ पहुँच जाएँगे। “मुझे उसके इरादे नहीं पता, लेकिन सावधान रहना। मैं उस पर नज़र रख रहा हूँ और कोई जानकारी मिलते ही तुम्हें बता दूँगा।”

कान्हा ने कर्नल और टीम को सूचित किया, “देवांत और उसकी टीम लखनऊ पहुँच चुकी है। अगर उन्हें सोमनाथ मंदिर के बारे में पता है, तो हमें तुरंत कार्रवाई करके उन्हें रोकना होगा। सब लोग तैयार हो जाओ, हमें जल्द से जल्द सोमनाथ के लिए निकलना होगा। हमें पहले लखनऊ जाना होगा और वहाँ से अहमदाबाद के लिए फ्लाइट लेनी होगी।”

कर्नल ने कहा, “हम पता लगा सकते हैं कि देवांत और उनकी टीम ने गुजरात के लिए कोई फ्लाइट बुक कराई है या नहीं। आप लोग तब तक तैयार हो जाइए। मैं जाकर पता लगाता हूँ।”

कान्हा, विवंत और सुखेशनी ने अहमदाबाद की यात्रा के लिए अपने बैग पैक किए।

कर्नल चिंतित होकर वापस आया, “हमारा अनुमान सही निकला; देवांत और उसकी टीम ने कल सुबह की फ्लाइट बुक करा ली है। वे आप लोगों के लखनऊ पहुँचने से पहले ही अहमदाबाद पहुँच जाएँगे।”

कान्हा ने कहा, “लेकिन सोमनाथ मंदिर का मुआयना करने और योजना बनाने से पहले वे कोई मूर्खतापूर्ण हरकत नहीं करेंगे। इसमें उन्हें कम से कम एक दिन लगेगा।

तब तक हम वहाँ पहुँच जाएँगे। हम स्थानीय पुलिस को सोमनाथ मंदिर पर अतिरिक्त सतर्कता बरतने के लिए कह सकते हैं। कर्नल खुफिया ब्यूरो को सूचित कर सकते हैं। तब तक हम वहाँ पहुँचकर उन पर नज़र रखेंगे।"

खुफिया ब्यूरो ने स्थानीय पुलिस को चेतावनी भेजी है कि सोमनाथ मंदिर में कुछ लूटपाट हो सकती है और उन्हें तैयार रहने को कहा है।

सोमनाथ मंदिर की सुरक्षा में तैनात गुजरात पुलिस पूजा के बाद अतिरिक्त सतर्क हो गई और मंदिर के सभी आभूषणों को लॉकरों में सुरक्षित रख दिया। उन्होंने सोमनाथ की सुरक्षा बढ़ा दी।

देवांत सुबह 6.30 बजे अहमदाबाद पहुंचे। कान्हा और उनकी टीम ने सिरखा सेना शिविर से लखनऊ पहुंचने के लिए रात भर यात्रा की।

देवांत ने कुछ हथियार डीलरों से मिलकर कुछ बंदूकें और अन्य हथियार खरीदे। उसने सोमनाथ शिवलिंग की प्रतिकृति बनवाई थी, क्योंकि देवांत ने पूरा दिन अहमदाबाद में बिताया और हमले की योजना बनाई।

कान्हा, विवांत और सुखेशनी शाम तक अहमदाबाद पहुँच गए और एक होटल में ठहरे। कान्हा ने ल्हावांग को फोन करके नवीनतम जानकारी ली।

ल्हावांग ने कहा कि उनके आदमी देवांत और उनकी टीम पर नजर रखने की कोशिश कर रहे थे और वे अभी भी अहमदाबाद में ही थे।

कान्हा ने मन ही मन सोचा, "अगर देवांत अभी भी अहमदाबाद में होता, तो उसने आज रात हमले की योजना नहीं बनाई होती और उनके पास योजना बनाने के लिए एक और दिन होता," यह सोचकर उसे राहत मिली।

कान्हा ने आकर विवांत और सुखेष्णी को बताया कि देवांत अभी तक सोमनाथ नहीं पहुँचे हैं। उनके पास एक दिन का समय था, लेकिन विवांत उदास दिख रहे थे।

कान्हा ने विवांत से पूछा कि उसे किस बात की चिंता है।

विवांत ने कान्हा से पूछा, “मैं क्यों लड़ूँ और किसके लिए लड़ रहा हूँ? इस युद्ध में मैंने अपने पिता को खो दिया है; हो सकता है मैं अपने भाई को भी खो दूँ। मुझे कुछ नहीं चाहिए।”

जिस भाई के साथ मुझे खेलना चाहिए था, उसी से मैं लड़ रही हूँ! जिस भाई के लिए मेरी माँ हर दिन भगवान से प्रार्थना करती है कि एक दिन उससे मेरी मुलाकात हो, उसी के खिलाफ मैं बंदूक ताने खड़ी हूँ। मैं बहुत बड़ी दुविधा में हूँ।

कान्हा मुस्कुराया और बोला, "तुम बिलकुल अर्जुन की तरह लग रहे हो, जैसे वह युद्ध के मैदान में कृष्ण के सामने भगवद्गीता का पाठ कर रहा था।"

विवांत, मैं कुछ ऐसी बातें कहना चाहता हूँ जिनसे तुम सहमत होगे। तुम न केवल अपनी माँ के पुत्र हो, बल्कि भारत माता के भी पुत्र हो। तुम्हें राष्ट्रपुत्र होने के नाते अपना कर्तव्य निभाना चाहिए।

कर्म का अर्थ है अपना कार्य करना और आपके कार्य के पीछे की मंशा ही मायने रखती है।

केवल स्वार्थी और अज्ञानी लोग ही अपने लाभ के लिए काम करते हैं। बुद्धिमान लोग स्वयं की चिंता किए बिना संसार के कल्याण के लिए कार्य करते हैं।

याद रखो, तुम अपने भाई को वापस पाने के लिए लड़ रहे हो। अगर तुम अपनी मनचाही चीज पाने के लिए लड़ नहीं सकते, तो तुम्हें अपने खोए हुए पर रोने का भी कोई हक नहीं है।

विवांत, हम तो बस ईश्वर के साधन मात्र हैं। हिम्मत रखो, अपने पिता को देखो जिन्होंने लगभग बीस वर्षों तक तारक का विरोध किया। राष्ट्र प्रेम और परिवार प्रेम ने ही उन्हें शक्ति दी। तुम्हें अपने भाई के प्रेम के लिए यह लड़ाई लड़नी होगी।

सत्य के इस मार्ग पर कोई भी प्रयास व्यर्थ नहीं जाता, यह आपको आपके सभी भयों से बचाएगा।

विवांत, अतीत या भविष्य के बारे में मत सोचो, बस वर्तमान में जियो। सत्य की ओर अपना कर्म करो।

सत्य की खोज में लगे रहने के दौरान आप इन भावनाओं से खुद को अलग कर लेते हैं।

विवांत ने पूछा, “जब मेरे जीवन में इतनी सारी बातें चल रही हों और इतने सारे मोह-माया हों, तो मैं अपनी भावनाओं से कैसे अलग हो सकता हूँ? मुझे गीता का यह भाग कभी समझ नहीं आया। हम मनुष्य अपना अधिकांश जीवन अपनी इंद्रियों को संतुष्ट करने में व्यतीत करते हैं। हमारे जीवन को अर्थ तभी मिलता है जब हम अपनी इंद्रियों के अनुसार कार्य करते हैं। हम अपनी इंद्रियों से कैसे अलग हो सकते हैं?”

कान्हा ने कृष्ण के शब्दों को उद्धृत करते हुए कहा, "वैराग्य का अर्थ यह नहीं है कि आपके पास कुछ भी नहीं है, बल्कि वैराग्य का अर्थ यह है कि कोई भी चीज आपकी स्वामी नहीं है।"

भौतिक संसार से खुद को अलग करो और अपने मन को वश में करो। तभी तुम मुक्त हो पाओगे। समय निकालो और इन पहलुओं पर विचार करो, तब तुम्हारा मन शांत हो जाएगा।

विवांत अपनी दुविधा से मुक्त हो गया और अब उसका ध्यान केंद्रित था। अब उसे एक स्पष्ट रास्ता मिल गया था।

कान्हा ने बाहर जाकर गिर सोमनाथ जिले की गुजरात पुलिस से संपर्क किया और सोमनाथ मंदिर की सुरक्षा के बारे में जानकारी ली। पुलिस ने उन्हें आश्वासन दिया कि सब कुछ नियंत्रण में है।

सुबह चार बजे कान्हा, विवांत और सुखेशनी गिर के लिए रवाना हुए। राजकोट के बाद भारुडी टोल प्लाजा के पास राजमार्ग पर एक ढाबे पर वे नाश्ते के लिए रुके।

संयोगवश, देवांत की कार भी उसी राजमार्ग पर आ रही थी। टोल से सौ मीटर पहले जब देवांत की कार टोल लाइन में धीमी हुई, तो उसने देखा कि विवांत और सुखेशनी

कार से उतरकर ढाबे की ओर जा रहे हैं। देवांत ने तुरंत अपने ड्राइवर से कहा कि कार को ढाबे के पास ले जाए।

देवांत ने अपने लड़कों को विवांत की कार में टाइम बम लगाने का आदेश दिया। ड्राइवर ने अपनी कार विवांत की कार के बगल में खड़ी कर दी। एक लड़के ने चुपके से कार की डिक्की से टाइम बम निकाला, जब कोई देख नहीं रहा था, और उसे दूसरे व्यक्ति को दे दिया, जिसने झटपट उसे कार के नीचे लगा दिया।

कान्हा, विवांत और सुखेशनी ने नाश्ता खत्म किया और वापस आ गए, उसी समय उनका कैब ड्राइवर भी लौट आया और उन्होंने अपनी कार स्टार्ट की और सोमनाथ की ओर चल पड़े।

कोई उनकी कार का पीछा करने की कोशिश कर रहा था और कुछ चिल्ला रहा था। ड्राइवर ने यह सब देखा लेकिन उसे कोई फर्क नहीं पड़ा।

कान्हा ने भी इस पर ध्यान दिया और पाया कि ल्हावांग के पांच मिस्ड कॉल आए हुए थे।

उसने उसे वापस फोन किया तो उसे एक ऐसी खबर सुनने को मिली जिससे वह थोड़ा डर गया, जिसमें बताया गया था कि देवांत और उसकी टीम ने एक चांदी की कार में टाइम बम लगा दिया है।

कान्हा ने ड्राइवर को गाड़ी रोकने के लिए कहा और सबको बाहर निकलने के लिए चिल्लाया। जैसे ही सब लोग सड़क पर गाड़ी से कूदे, बम फट गया और कुछ ही सेकंड में गाड़ी आग की लपटों में घिर गई।

विवांत सुखेष्णी की ओर दौड़ा। वह सुरक्षित थी। उन सभी को कुछ न कुछ चोटें आई थीं। कान्हा उनकी ओर बढ़ा और सबको जीवित देखकर राहत की सांस ली।

उन्होंने कहा, “ऐसा लगता है कि देवांत और उनकी टीम यहाँ से गुज़र रहे थे और उन्होंने हमें देख लिया। जब हम नाश्ता कर रहे थे, तभी उन्होंने बम लगा दिया।”

राजकोट में प्राथमिक उपचार कराने के बाद वे शाम तक सोमनाथ पहुँच गए। उन्होंने साफ-सफाई की, नए कपड़े पहने और मंदिर की ओर चल दिए।

कान्हा ने सुरक्षा व्यवस्था को त्रुटिरहित सुनिश्चित किया। उन्होंने सोमनाथ के दर्शन किए और सोमनाथ शिवलिंग की रक्षा करने की अनुमति मांगने के लिए वापस लौटे।

देवांत को खबर मिली कि कान्हा और उनकी टीम पहुँच चुकी है और वे शिवलिंग पर विशेष ध्यान दे रहे हैं। उन्होंने उस दिन की अपनी योजना को स्थगित कर दिया और अगले दिन के लिए एक बेहतर रणनीति बनाने का निर्णय लिया।

अगली सुबह, कान्हा और उनकी टीम कुछ समय बिताने के लिए पंच पांडव गुफा गए। उन्हें पता था कि भारी भीड़ के कारण सुबह कोई हमला नहीं होगा।

कान्हा, विवांत और सुखेष्णी गुफाओं का बारीकी से निरीक्षण कर रहे थे। वहां बलराम को आदिशेष का रूप धारण करके गुफा में प्रवेश करते हुए दर्शाने वाले कुछ चित्र थे और उनके नीचे कुछ लिखावट भी थी। विवांत ने एक गाइड से उस लिखावट के बारे में पूछा।

गाइड ने दीवार पर बने चित्रों और लेखों को दिखाते हुए समझाया, "बलराम इस गुफा में आदिशेष के रूप में सोमनाथ की रक्षा कर रहे हैं, यदि कोई दानव सोमनाथ शिवलिंग को छूने का प्रयास करता है, तो आदिशेष उन पर अपना प्रकोप बरसाएंगे।"

कान्हा हंसते हुए बोले, "तारक तो बहुत बुद्धिमान है, इसीलिए उसने देवांत को शिवलिंग लाने भेजा है।"

कुछ मिनटों बाद सुखेष्णी की सांसें तेज चलने लगीं और उसने कहा, “मुझे घुटन हो रही है। मैं पानी के फव्वारे के पास बाहर इंतजार करूंगी, जब तक आप लोग ये सारी गुफाएं नहीं देख लेते।”

विवांत और कान्हा सहमत हो गए और भीतरी दीवारों पर बने और भी चित्र देखने चले गए जिनमें पांडवों के यहाँ रहने और महाभारत की कुछ कहानियों को दर्शाया गया था। जब वे जलप्रपात के पास बाहर आए, तो उन्हें सुखेशनी कहीं नहीं मिली।

उन्होंने आस-पास के सभी स्थानों पर तलाशी ली। वह कहीं नहीं मिली। दोनों चिंतित हो गए।

कान्हा ने स्थानीय पुलिस को फोन करके तलाशी लेने का अनुरोध किया। फिर उसने ल्हावांग को फोन करके पूछा कि क्या उसे कुछ पता है, देवांत और उसके साथी कहाँ ठहरे हुए हैं और क्या उन्होंने उसका अपहरण किया है।

ल्हावांग ने कहा कि वह उनका पता लगाने की कोशिश कर रहा था, लेकिन वे उम्मीद से कहीं ज्यादा तेजी से अपनी जगह बदल रहे थे।

कान्हा ने कहा, “यह देवांत की योजना होगी ताकि वह हमें भटकाकर आज रात हमला कर सके। हमें पुलिस को सूचित करना चाहिए ताकि वे सतर्क रहें।” विवांत भी सुखेष्णी को लेकर उतना ही चिंतित था और उसने कहा, “हमें पहले उसे ढूंढना होगा और उसे बचाना होगा।”

कान्हा ने इंस्पेक्टर पार्थ को फोन करके सोमनाथ मंदिर में सुरक्षा बढ़ाने के लिए कहा क्योंकि हमला संभवतः रात में होने वाला था और सुखेशनी को ढूंढने में मदद मांगी।

कान्हा को उन सभी संभावित स्थानों की जानकारी मिल गई जहाँ देवांत की टीम सुखेष्णी को ल्हावांग से ले गई होगी और उन्होंने उसकी तलाश शुरू कर दी। उनकी खोज मुश्किल भरी रही। उन्होंने सुखेष्णी के मोबाइल फोन को ट्रैक करने की कोशिश की, लेकिन राजकोट जाते समय वह बंद हो गया था।

पहले तो कान्हा को लगा कि यह सोमनाथ से उनका ध्यान भटकाने और उन्हें राजकोट ले जाने की कोई योजना हो सकती है। लेकिन उन्हें सोमनाथ में सुखेशनी नहीं मिली।

शाम काफी ढल चुकी थी। अगर वे राजकोट जाते, तो भी वे देवांत को नहीं रोक पाते।

कान्हा ने कहा, “विवांत, तुम यहीं रुको और इंस्पेक्टर पार्थ के साथ शिवलिंग की रक्षा करो। मैं जाकर सुखेष्णी को ढूंढकर लाता हूँ। मैं पुलिस की एक टीम लेकर राजकोट के लिए रवाना होता हूँ। पुलिस को अपहरण के बारे में कुछ जानकारी है और उन्हें पता है कि अपहरणकर्ता उसे कहाँ ले गए होंगे।”

विवांत ने कहा, “नहीं, मंदिर में सुरक्षा है। मैं आपके साथ आ सकता हूँ।”

कान्हा ने बीच में दखल देते हुए कहा, “नहीं, सिर्फ तुम ही अपने भाई को रोक सकते हो, इसलिए तुम्हें यहीं रहना चाहिए। अगर कोई सुरक्षा संबंधी चेतावनी आती है, तो इंस्पेक्टर पार्थ तुम्हारे साथ होंगे और तुम्हें वहां ले जाएंगे।” विवांत मान गया और कान्हा अपनी टीम के साथ राजकोट की ओर रवाना हो गया।

देवांत खुश था कि उसकी योजना सफल हो गई थी। कान्हा शहर छोड़कर जा चुका था और अब कोई भी उसे शिवलिंग प्राप्त करने से नहीं रोक सकता था।

उन्होंने अपनी टीम को तैयार रहने को कहा। उन्होंने कृत्रिम शिवलिंग को जीप में लादा और सोमनाथ के लिए रवाना हो गए।

पूर्णिमा की रात में, सोमनाथ मंदिर मानो सोने की तरह चमक रहा था। देवंत ने अपने आने वाले कार्य के लिए ईश्वर से क्षमा मांगी। उनकी टीम सावधानीपूर्वक सोमनाथ की ओर बढ़ी। सभी ने मुखौटे और काले वस्त्र पहन रखे थे।

जब वे मंदिर के पास पहुंचे, तो उन्होंने पतंग के आकार के ड्रोन का इस्तेमाल किया जो मंदिर के ऊपर मंडराते रहे और उन्हें सोमनाथ की सुरक्षा में तैनात सभी पुलिसकर्मियों के स्थान के बारे में 360 डिग्री का स्पष्ट दृश्य प्रदान किया।

उन्होंने सभी पुलिसकर्मियों का पता लगा लिया और अपनी योजना को अंजाम दिया। उन्होंने ड्रोनों का अगला जत्था भेजा। सभी गार्ड यह देखकर हैरान थे कि इतने सारे पतंग मंदिर के पास कैसे आ गए। उसी समय ड्रोनों ने गैसें छोड़ीं जिससे सभी पुलिसकर्मी बेहोश हो गए।

अचानक सोमनाथ मंदिर की सुरक्षा में तैनात पुलिसकर्मियों की ओर से पुलिस स्टेशन को कोई सूचना नहीं मिली।

सीसीटीवी कक्ष से एक गार्ड ने फोन किया और कहा कि सभी लोग बेहोश हैं और किसी चीज की तेज गंध आ रही है और उसे भी चक्कर आ रहे हैं और उसने फोन काट दिया।

पार्थ को कुछ गड़बड़ महसूस हुई। वह गया और कुछ मुखौटे लेकर विवांत को सोमनाथ के पास ले गया।

विवांत का दिल पहले से कहीं ज़्यादा तेज़ी से धड़कने लगा, उसके मन में कई सवाल उठ रहे थे—वह वेदांत को कैसे मनाएगा? क्या वह उसे आत्मसमर्पण करने के लिए मना पाएगा? अगर वेदांत यहीं मर गया तो क्या होगा? क्या वह अपने पिता की आखिरी इच्छा पूरी कर पाएगा? क्या वह अपनी माँ के सपनों को साकार कर पाएगा?

जैसे ही वे करीब पहुंचे, उन्होंने बाहर दो लोगों को पहरा देते देखा। उन्होंने काले रंग की पोशाक पहनी हुई थी और मास्क लगाए हुए थे।

पुलिस ने सावधानीपूर्वक इलाके को घेर लिया। विवांत और पार्थ पीछे से अंदर गए और पुलिस ने आगे खड़े दोनों पर गोली चलाई।

जैसे ही वे मंदिर में दाखिल हुए, उन्होंने देखा कि दो लोग गर्भगृह की रखवाली कर रहे थे, जबकि देवंत अंदर एक विशाल चुंबकीय क्षेत्र जनरेटर की मदद से शिवलिंग को हटाने की कोशिश कर रहा था और एक अन्य हट्टा-कट्टा आदमी उसकी मदद कर रहा था।

विवांत और पार्थ ने गर्भगृह की रखवाली कर रहे दोनों व्यक्तियों पर गोली चलाकर उन्हें मार गिराने में सफलता प्राप्त की।

देवांत और वह हट्टा-कट्टा आदमी दरवाज़े के पीछे छिप गए, जबकि पार्थ धीरे-धीरे अंदर जाने की कोशिश कर रहा था। उस हट्टे-कट्टे आदमी ने पार्थ का हाथ पकड़ लिया और उसे पीटने लगा तथा उसकी बांह तोड़ने की कोशिश की।

विवांत ने उसके सिर में गोली मार दी। देवांत ने झट से अपनी बंदूक उठाई और विवांत पर निशाना साधा, लेकिन पार्थ ने उसकी हथेली में गोली मार दी।

पार्थ जब देवांत पर गोली चला रहा था, तब विवांत चिल्लाया, “नहीं, वह मेरा भाई है, उसे गोली मत मारो।” पार्थ विवांत को देख ही रहा था कि देवांत ने अपने पैर से पार्थ के हाथ पर वार किया और बंदूक उससे दूर जा गिरी। विवांत चिल्लाया, “वेदांत, नहीं,

रुक जाओ!”

देवंत ने उसकी ओर मुड़कर पूछा, "वेदांत कौन है?"

विवांत ने कहा, “तुम हो! तुम डॉ. विश्वनाथ के सबसे बड़े बेटे और मेरे भाई हो। ये सब बकवास बंद करो और घर आ जाओ, एक माँ बीस साल से तुम्हारा इंतज़ार कर रही है।”

“यह बकवास बंद करो, मेरी जानकारी के लिए बता दूं कि मेरे पिता का नाम तारक है और मेरा नाम देवांत है,” देवांत ने पलटवार किया।

विवांत मुस्कुराया और बोला, "अच्छा, तो फिर बताओ तुम्हारी मां कौन है?"

देवांत ने कहा, "मुझे पता है कि मुझे चार साल की उम्र में गोद लिया गया था और इससे मैं डॉ. विश्वनाथ का बेटा नहीं बन जाता।"

विवांत ने कहा, “अरे! क्या संयोग है कि तुम्हें गोद लिया गया और डॉ. विश्वनाथ को तारक ने एक ही समय पर अगवा कर लिया। मेरे भाई, तुम्हें भी अगवा किया गया है, गोद नहीं लिया गया। क्या तुम्हें पता भी है कि तुम यहाँ क्यों हो? तारक इस शिवलिंग का क्या करेगा? वह खुद यहाँ क्यों नहीं आया?”

“उन्हें आने की जरूरत नहीं है; उन्हें मुझ पर पूरा भरोसा है।” देवांत ने जवाब दिया।

“अरे मूर्ख, वह इस शिवलिंग को छूकर हिला नहीं सकता क्योंकि वह दानव है, वरना आदिशेष उठ खड़ा होगा और उसका नाश कर देगा,” विवांत ने उसे समझाने की कोशिश की।

“तुम ये क्या बकवास कर रहे हो?” देवांत हँस पड़ा।

“क्या तुम्हें कैलाश पर्वत का रहस्य पता भी है? तुमने ही तो उस बक्से को सुरक्षित किया था, तुम्हें तो पता होना चाहिए,” विवांत ने कहा।

देवंत चुप हो गया

विवांत ने कहा, "ऐसा लगता है कि वह अपने बेटे को यह भी नहीं बताना चाहता कि वह कौन है और उसका लक्ष्य क्या है।"

“यह शिवलिंग दानवलोक का द्वार खोलेगा और दानवों को पृथ्वी पर ले आएगा, जहाँ नरसंहार होगा। वह पृथ्वी पर विजय प्राप्त करना चाहता है और लाखों लोगों को मारना चाहता है, और इसके लिए तुम जिम्मेदार होगे।” विवांत ने उसे सच बताने की कोशिश की।

यह सुनकर देवांत एक पल के लिए स्थिर खड़ा रहा और विवांत की ओर देखने लगा।

“तुम तो बड़े अच्छे कहानीकार हो, क्या तुम्हें भ्रम हो रहा है?” विवांत पर हंसते हुए देवांत ने कहा।

“पागल की तरह मत हंसो; अगर तुम्हें मेरी बात पर यकीन नहीं है, तो मेरे पास खुले हुए बक्से और उसके अंदर छिपे रहस्यों की तस्वीरें हैं। उसमें संस्कृत में ताड़ के पत्तों पर लिखे कई ग्रंथ थे। अगर तुम उन्हें देखना चाहो, तो इसे ले लो।” विवांत ने अपना फोन देवांत को दे दिया।

देवांत ने ताड़ के पत्तों पर लिखे उन ग्रंथों और उस संदूक को पहचान लिया। उसने उन्हें देखा तो था, लेकिन उन्हें ध्यान से देखने का मौका नहीं मिला था। अब उसने शिलालेखों के चित्र पढ़े और स्तब्ध रह गया। उसके हाथ कांप रहे थे और मानो उसकी दुनिया ही बिखर गई हो; उसे पता चल गया था कि यह सब झूठ पर आधारित था।

उनकी यादों में एक दिल दहला देने वाली घटना कौंध जाती है— “क्या वह उस गोलीबारी के लिए ज़िम्मेदार था जिसमें उनके अपने पिता की हत्या हुई थी?” इसीलिए डॉ. विश्वनाथ की आँखों में आँसू थे और वे उससे बात करना चाहते थे, और उन्होंने उसे सुरक्षा गार्डों की ओर धकेल दिया था। अब उन्हें वह भयानक क्षण याद आ गया था।

देवांत जमीन पर गिर पड़ा और रोने लगा। “मैं ऐसा कैसे कर सकता हूँ? मैंने अपने पिता को मार डाला। मुझे इस धरती पर जीने का कोई अधिकार नहीं है। मैं मर जाऊँगा,” और उसने बंदूक छीनकर खुद को गोली मारने की कोशिश की।

विवांत ने उसे रोका और शांत होने को कहा, “तुमने जानबूझकर ऐसा नहीं किया। यह सब तारक की करतूत है। मरने के बारे में मत सोचो, एक माँ बीस साल से अपने बेटे को देखने का इंतजार कर रही है।”

पार्थ खड़ा हुआ और बोला, "अपनी माँ से मिलने के लिए तुम्हें स्वयं को समर्पित करना होगा।"

वेदांत ने कहा, “मुझे ले जाओ, मैंने जो किया है उसके लिए कोई भी सजा काफी नहीं है। मुझे अधिकतम संभव सजा दो।”

विवांत ने पार्थ की ओर देखा। पार्थ ने कहा, “मैं सोमनाथ मंदिर में चोरी करने की कोशिश के आरोप में तुम्हारा केस दर्ज कराऊंगा। तुम्हें जल्दी निकल जाना चाहिए।”

जब वे बाहर आए और कान्हा को पुकारा तो उन्हें पता चला कि वह सुखेशनी को अपहरणकर्ताओं के चंगुल से बचाने में सफल रहा है और उसे वापस ला रहा है।

वे पुलिस स्टेशन गए और कान्हा भी उनके साथ शामिल हो गया।

सुखेशनी ने जाकर विवांत को गले लगाया और रोने लगी। सुखेशनी ने कहा, “मैं पहली बार ज़िंदगी में इतनी डरी थी, और वो भी इसलिए क्योंकि तुम मेरे साथ नहीं थे। मुझसे वादा करो, तुम मुझे कभी छोड़कर नहीं जाओगे।”

विवांत मुस्कुराया और बोला, "हाँ, मैं तुम्हारे साथ हूँ, मैं हमेशा तुम्हारे साथ रहूँगा।" अनजाने में ही वह उसका एक अभिन्न अंग बन चुका था।

आखिरकार वे होटल में आराम करने गए और अगले दिन उन्होंने सोमनाथ मंदिर में अमिताभ बच्चन की आवाज में दर्शन किए और लाइट शो का आनंद लिया।

शो का आनंद लेते हुए, विवांत के मन में एक ही सवाल रह गया था - वह कब और कैसे अपनी मां को वेदांत से मिलवा सकता है और कब वह अपने पिता की अंतिम इच्छा के अनुसार अपने परिवार को पूरा कर सकता है।

कान्हा ने भारतीय सरकार से तिब्बती पुलिस पर तारक को पकड़ने के लिए दबाव

डालने का अनुरोध किया था। लेकिन उस दिन के बाद से वह लापता हो गया, भूमिगत हो गया और उसकी कंपनियां बंद हो गईं।

उपसंहार

छह महीने बाद

विवांत सुखेशनी को सुबह-सुबह नंदी हिल्स की सैर पर ले गया। ठंड और कोहरा छाया हुआ था। पहाड़ियों की चोटी तक जाते हुए सुखेशनी मनमोहक दृश्य का आनंद ले रही थी।

वे मंदिर के पास ऊपर बने दर्शनीय स्थल पर खड़े होकर खूबसूरत सूर्योदय का आनंद ले रहे थे। विवांत ने पीछे से जाकर उसकी आंखें ढक लीं।

उनके सभी दोस्त चुपचाप उसके चारों ओर जमा हो गए। सुखेष्णी ने पूछा, "क्या बात है विवांत?"

जैसे ही उसने अपनी आँखें खोलीं, सब लोग चिल्ला उठे - "सरप्राइज!" वे उसके लिए केक लाए थे, और सब लोग उसके लिए जन्मदिन का गीत गाने लगे।

वह बेहद खुश थी। उसने विवांत को गले लगाया और इस व्यवस्था के लिए धन्यवाद देते हुए कहा कि यह उसका अब तक का सबसे खूबसूरत जन्मदिन था।

विवांत को कान्हा का फोन आया, जिसने पूछा, “विवांत तुम कहाँ हो? सुखेशनी कैसी है?”

“मैं ठीक हूँ कान्हा, आज सुखेशनी का जन्मदिन है और हम नंदी हिल्स में मना रहे हैं। उसे शुभकामनाएँ दे दो, मैं फोन उसे दे देता हूँ।” उसने फोन सुखेशनी को दे दिया और कान्हा ने उसे जन्मदिन की शुभकामनाएँ दीं और फोन विवांत को देने को कहा।

“विवांत, आशा है तुम आनंद ले रहे हो; तुम्हें परेशान करने के लिए क्षमा चाहता हूँ, लेकिन मुझे तुम्हें दो महत्वपूर्ण संदेश देने थे। एक अच्छा है और एक बुरा। तुम पहले

कौन सा सुनना चाहोगे?” कान्हा ने पूछा।

“बहुत बढ़िया!” विवांत ने कहा।

“तुम्हारे भाई को जमानत मिल गई है और वह बाहर है,” कान्हा ने कहा।

“ओह! ये तो बहुत अच्छी खबर है। मैं उनसे मिलने और अपनी माँ से उनका परिचय कराने का बेसब्री से इंतजार कर रहा हूँ। मैं उनके चेहरे पर वो मुस्कान देखना चाहता हूँ। बुरी बात क्या है?” विवांत ने पूछा।

“सोमनाथ मंदिर में चोरी हो गई है। आपका भाई लापता है, उसे आखिरी बार गुरुजी के साथ तारक की कार में देखा गया था। हम उनकी तलाश कर रहे हैं।” कान्हा से यह खबर सुनकर विवांत को गहरा सदमा लगा।

“मुझे शक था, इसलिए मैंने गुरुजी की तस्वीर का तारक की तस्वीर से मिलान किया और दोनों तस्वीरें मेल खा गईं। उनके लंबे बाल और लंबी दाढ़ी ने हमें धोखा दिया। ठीक है, मैं इस बारे में बाद में बात करूंगा, अभी मैं व्यस्त हूं और आपको बाद में कॉल करूंगा,” कान्हा ने फोन काट दिया।

करने के लिए जारी...

प्रतिक्रिया दें संदर्भ

इस पुस्तक को लिखने के लिए मैंने व्यापक शोध किया है, जिसके आधार पर मैंने अपने सिद्धांतों को कुछ लेखों, ब्लॉगों और यूट्यूब वीडियो पर आधारित किया है। पुस्तक लिखते समय मैंने निम्नलिखित लिंक का संदर्भ लिया है।

1. डी. एम. राउप और जे. सेपकोस्की द्वारा 1984 में लिखित "सामूहिक विलुप्तिकरण और आवधिकता"। https://www.frozenevolution.com/mass-extinctions-periodicity

2. महान चक्र या ‘युग’ - ईशा फाउंडेशन, सद्गुरु द्वारा https://

www.youtube.com/watch?v=eaHVNQwO68E&t=1s

3. हिस्ट्री चैनल पर एंशिएंट एलियंस के वीडियो: https://www.youtube.com/user/historychannel

4. कैलाश पर्वत के चार मुख जो विभिन्न तत्वों से बने हैं, उनका उल्लेख विकिपीडिया में मिलता है (संदर्भ: चार्ल्स एलन, 1999, द सर्च फॉर शांग्री-ला: ए जर्नी इनटू तिब्बती हिस्ट्री, लिटिल, ब्राउन एंड कंपनी, पुनर्मुद्रण: एबेकस, लंदन, 2000, ISBN 0-349-11142-1)

5. पुराणों और अथर्ववेद में 14 लोकों या संसारों का उल्लेख है - सात ऊपरी और सात निचले।

6. सात चक्रों, क्रिस्टलों और उनके लाभों के बारे में नीचे दिए गए लिंक में विस्तार से बताया गया है। https://meanings.crystalsandjewelry.com/chakras/

7. भागवत पुराण में वर्णित शल्व और कृष्ण के बीच युद्ध की व्याख्या निम्नलिखित लिंक पर उपलब्ध है: https://www.booksfact.com/technology/ancient-technology/ancient-aircraft-vimana-parachute-king-salwa-bhagavata-purana.html

8. अतीत में मंगल ग्रह पर हुए बड़े असामान्य परमाणु विस्फोटों के प्रमाण। https://www.hou.usra.edu/meetings/lpsc2015/pdf/2660.pdf

9. सुमेरियन ग्रंथ में वर्णित ओएनेस और सात ऋषियों के बारे में इस लिंक पर विस्तार से बताया गया है: https://therealsamizdat.com/tag/seven-sages-of-sumeria/

10. भारतीय वैदिक अनुसंधान संस्थान ने रामायण और महाभारत की कालानुक्रमिक रूपरेखा तैयार करने में अभूतपूर्व कार्य किया है। http://www.riseforindia.com/i-serve-research-on-indian-history-and-

vedas/

11. द्वारका का डूबा हुआ शहर https://www.youtube.com/watch?v=nQZFS9Hij0M https://www.gounesco.com/where-mythology-meets-reality-sunken-city-of-dwarka/

12. प्रस्तावना में दिए गए श्लोक का श्लोक और अनुवाद भगवद्गीता से लिया गया है, जिसका संदर्भ इस लिंक से लिया गया है: https://www.holy-bhagavad-gita.org/

13. श्रीमद्-भागवतम् से श्लोक और अनुवाद, श्रीमद्-भागवतम् से उद्धृत, परम पूज्य ए.सी. भक्तिवेदांत स्वामी प्रभुपाद द्वारा।

लेखक के बारे में

विशेष, एमआईटी मणिपाल के तीस वर्षीय पूर्व छात्र हैं और वर्तमान में बेंगलुरु में सॉफ्टवेयर इंजीनियर के रूप में कार्यरत हैं। अपने पहले ही प्रयास में उन्होंने पौराणिक शैली का एक रोमांचक उपन्यास लिखा है। वे अपना अधिकांश खाली समय पौराणिक रहस्यों पर शोध करने में व्यतीत करते हैं। वे स्वस्थ रहने के लिए योग का अभ्यास

करते हैं और किताबें पढ़ना तथा नेटफ्लिक्स और अमेज़न प्राइम देखना उनका पसंदीदा शौक है।